





दैनिक जागरण

शायद ही ऐसी कोई समस्या हो, जिसका समाधान न हो

आतंकियों की सूची

केंद्र सरकार ने गैर-कानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम यानी यूएपीए के तहत पाकिस्तान और उसके कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर में रह रहे 23 आतंकियों को सूचीबद्ध करके न केवल इन आतंकियों, बल्कि उनके आकाओं अर्थात् पाकिस्तानी सेना एवं उसकी खुफिया एजेंसी आइएसआइ को यही संदेश दिया कि भारत आतंकवाद को लेकर सख्त है और उसकी उन पर निगाह भी है। जो आतंकी सूचीबद्ध किए गए हैं, उन पर भारत में आतंकी हमले करने, घुसपैठ करने, हथियार भेजने आदि के आरोप हैं। इनमें से कई भारत में हुए आतंकी हमलों या उनकी साजिश रचने में शामिल रहे हैं। वे सभी जैश, लश्कर, द रेंजिस्टर्स फ्रंट और जमात-उद-दावा आदि आतंकी संगठनों से जुड़े हुए हैं। इनमें से कुछ जम्मू-कश्मीर के भी हैं। इसी के साथ यूएपीए के तहत प्रतिबंधित आतंकियों की संख्या 80 पहुंच गई है। चूंकि भारत सरकार ने इन आतंकियों के ठिकानों को भी रेखांकित किया है, इसलिए पाकिस्तान पर इसका कुछ न कुछ असर अवश्य पड़ेगा। हालांकि वह बेशर्मा दिखाएगा और इन आतंकियों की अपनी धरती पर उपस्थिति से इन्कार करेगा, लेकिन इससे उसका काम बनने वाला नहीं है, क्योंकि गुलाम जम्मू-कश्मीर के लोग ही यह कह रहे हैं कि पाकिस्तान ने कश्मीरियों के हाथों में बंदूकें थमाईं। एक तरह से उसकी पोल उसके ही कब्जे वाले लोग खोल रहे हैं।

23 आतंकियों को प्रतिबंधित करने का भारत सरकार का फैसला एक ऐसे समय आया है, जब पाकिस्तान मानवता और अंतरराष्ट्रीय समझौतों को दुहाई देकर सिंधु जल संधि के स्थान के खिलाफ शोर मचाने में लगा हुआ है। भारत का फैसला उसे यह आभास कराने वाला है कि वह आतंकवाद को खाद-पानी देकर भारत से नरमी की उम्मीद न करे। यदि पाकिस्तान यह चाहता है कि उसे सिंधु जल समझौते के तहत पानी मिले तो उसे भारत के लिए खतरा बने आतंकियों को पालने-पोसने से बाज आना होगा। उसे यह समझना ही होगा कि खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते। जैश, लश्कर आदि के आतंकियों को प्रतिबंधित करने का निर्णय उन पाकिस्तानियों के साथ भारतीयों को भी संदेश देने वाला है, जिन्होंने पिछले दिनों भारतीय और पाकिस्तानी प्रधानमंत्री से यह आग्रह किया था कि दोनों नेता संबंधों को बहाल करने की दिशा में आगे बढ़ें। यह आग्रह कितना मूर्खतापूर्ण था, इसे इससे समझा जा सकता है कि किसी ने और यहां तक कि कथित शांति प्रेमी भारतीयों ने भी यह नहीं कहा कि संबंधों को सामान्य करने के लिए यह आवश्यक है कि पाकिस्तान उस आतंकी ढांचे को खत्म करे, जो भारत के लिए खतरा बना हुआ है। चूंकि पाकिस्तान यह काम आसानी से करने वाला नहीं है, इसलिए भारत को उस पर अंतरराष्ट्रीय दबाव बनाने के लिए भी सक्रिय होना होगा। यह सक्रियता लगातार बढ़नी चाहिए।

पथिकों की राह

फुटपाथ पर अतिक्रमण हर शहर की बड़ी समस्या है। सुप्रोम कोर्ट कह चुका है कि फुटपाथ पर सुरक्षित रूप से चलना नागरिकों का मौलिक अधिकार है। पैदल चलने वालों का सुरक्षित और निबांध रूप से फुटपाथ का उपयोग करना संविधान के अनुच्छेद-21 (जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार) का हिस्सा है। कुछ दिन पूर्व ही सुप्रोम कोर्ट ने सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को पैदल यात्रियों के लिए सुव्यवस्थित फुटपाथ सुनिश्चित करने के लिए कहा था। अतिक्रमण के कारण अधिकतर लोग सड़कों पर चलने को बाध्य होते हैं, इससे हमेशा दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। इन सबके बीच उत्तर प्रदेश में आजमगढ़ में यातायात पुलिस 'लक्ष्मण रेखा अभियान' शुरू करने जा रही है। इसके तहत फुटपाथ और सड़क किनारे लाल रंग से सीमा रेखा खींचकर दुकानदारों के लिए दायरा निर्धारित किया जाएगा। पहले उन्हें फुटपाथ को अतिक्रमण मुक्त करने के लिए समझाया जाएगा, नहीं मानने पर सख्ती की जाएगी। ऐसी स्थानिक पहल अन्य शहरों में भी होनी चाहिए। पहल स्वागतयोग्य है, पर आवश्यक है कि इस रेखा की सतत निगरानी हो। केवल पुलिस की सख्ती से ही बात नहीं बनेगी। नगर निकाय, प्रशासन और व्यापारी संघ के साथ ही आमजन को भी इस पहल का साझेदार बनना होगा। व्यापारियों को भी समझना होगा कि ग्राहक अतिक्रमण मुक्त बाजार जाने में सहज महसूस करते हैं।

अतिक्रमण मुक्त फुटपाथ के लिए आजमगढ़ जैसी स्थानिक पहल अन्य शहरों में भी होनी चाहिए



संजय गुप्त  
दान राशि के इस्तेमाल में सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए, लेकिन यह भी सुनिश्चित होना चाहिए कि हिंदू धर्म के प्रचार में उसका समुचित उपयोग कैसे हो

अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावा चोरी की घटना हिंदू समाज को आहत और साथ ही इस मंदिर के ट्रस्ट के प्रति लोगों के भरोसे को चोट पहुंचाने वाली है। फिलहाल यह कहना कठिन है कि कितनी राशि की चोरी की गई और वह कब से जारी थी, लेकिन यह शर्मनाक है कि दान राशि उन्हीं लोगों ने हड़थी, जिन पर उसकी देख-रेख की जिम्मेदारी थी। अभी तक इस मामले में आठ लोगों को गिरफ्तार कर विशेष जांच दल यानी एसआइटी की ओर से पूछताछ जारी है। मामले की गंभीरता और व्यापकता को देखते हुए एसआइटी की समय सीमा बढ़ा दी गई है। देखना है कि वह तय समय में अपनी जांच पूरी कर पाती है या नहीं? चूंकि राम मंदिर सदियों की प्रतीक्षा और संघर्ष के बाद बना, इसलिए उसके उदघाटन के बाद से ही देश-विदेश के लोग अयोध्या आ रहे थे और हर महीने करोड़ों की दान राशि आ रही थी। इस दान राशि के उपयोग का अधिकार ट्रस्ट के पास है। दान राशि के उपयोग में सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं और वह होना भी नहीं चाहिए, लेकिन यह तो सुनिश्चित होना ही चाहिए कि ट्रस्ट उसका उपयोग सही तरह से करे। जैसे राम मंदिर के लिए एक ट्रस्ट बना है, वैसे ही अन्य प्रमुख मंदिरों के लिए भी

है। कुछ मंदिरों में भक्त करोड़ों का दान देते हैं। जहां कुछ मंदिरों के ट्रस्ट में सरकारी अधिकारी भी शामिल होते हैं, वहीं कुछ पुरी तीर पर सरकार की ओर से संचालित होते हैं। ऐसे मंदिरों को मिलने वाले चढ़ावे की राशि का उपयोग सरकारें अपने हिसाब से करती हैं। इसे लेकर कई बार सवाल उठ चुके हैं कि क्या मंदिरों का चढ़ावा हिंदू धर्म के प्रचार-प्रसार और हिंदू समाज के कल्याण के लिए ही होता है? ऐसे सवाल इसलिए उठते रहे हैं, क्योंकि कई मंदिरों की दान राशि का इस्तेमाल हिंदू धर्म के कल्याण से इतर कार्यों में भी किए जाने की खबरें आती रही हैं। आम तौर पर जो छोटे मंदिर हैं, उनके चढ़ावे की राशि तो पुजारियों, सेवादरों के गुजारे के साथ मंदिर के रखरखाव, भंडारे आदि के आयोजन में ही खर्च हो जाती है। क्या इस सबसे हिंदू धर्म के प्रचार के उद्देश्य की पूर्ति हो जाती है? कुछ बड़े मंदिरों के ट्रस्ट शिक्षा संस्थान, अस्पताल, धर्मशालाएं आदि चलाते हैं, लेकिन इसका सटीक आंकड़ा शायद ही किसी के पास हो कि देश के प्रमुख मंदिरों को प्रति वर्ष कितना चढ़ावा मिलता है और उसका उपयोग किन-किन कार्यों में किया जाता है? इसका कारण यह है कि इसकी कोई सुनिश्चित व्यवस्था नहीं कि चढ़ावे की राशि किन

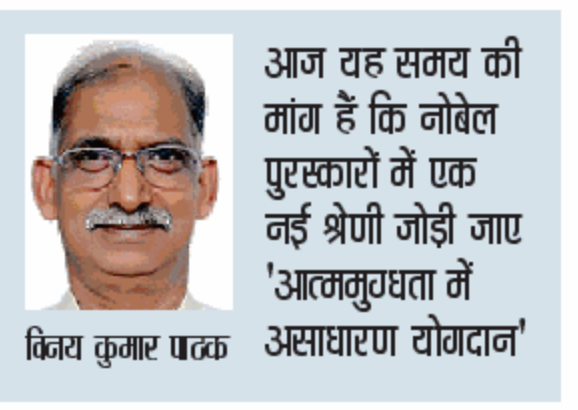


कार्यों में खर्च की जाएगी और किनमें नहीं? निःसंदेह मंदिरों को मिलने वाली चढ़ावे की राशि हिंदू धर्म के प्रचार-प्रसार और कल्याण में ही खर्च होनी चाहिए, पर यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि आखिर हिंदू धर्म के प्रचार-प्रसार का काम प्रभावी तरीके से किस प्रकार किया जाए? क्या संस्कृत विद्यालयों या गुरुकुलों का संचालन करने से हिंदू धर्म के प्रचार-प्रसार का उद्देश्य पूरा हो जाता है? क्या हिंदू धर्म के वैभव प्रदर्शन से धर्म प्रचार का उद्देश्य पूरा हो जाता है? प्रश्न यह भी है क्या हिंदू धर्म का प्रचार सिर्फ हिंदुओं के बीच होना चाहिए? विदंबना यह है कि इसे लेकर हिंदू धर्माचार्यों एवं मंदिर ट्रस्ट का संचालन करने वालों में कोई सहमति नहीं है। हिंदू धर्म की विशेषता यह है कि यह किसी एक ग्रंथ या देव के दर्शन पर आधारित नहीं है। हिंदुओं को इसकी स्वतंत्रता है कि वे अपनी इच्छानुसार किसी इष्ट की पूजा-अर्चना करें। हिंदू धर्म के अनुयायियों के रीति-रिवाज भी अलग-अलग हैं और वे सब अपने

हस्तक्षेप रहता है, वहीं अन्य पंथों के अनुयायी अपने धार्मिक स्थलों का संचालन अपने हिसाब से करते हैं और उसमें सरकार का कोई दखल नहीं रहता। यह एक विवेकपूर्ण है। हिंदू संगठन लगातार यह मांग करते चले आ रहे हैं कि मंदिरों का संचालन हिंदू समाज को सौंपा जाए, लेकिन इस मांग पर बल देने के साथ ही यह भी आवश्यक है कि मंदिरों के संचालन की कोई ठोस संविधा बने। यह भी तय हो कि मंदिरों को मिलने वाली चढ़ावे की राशि का उपयोग किस तरह होगा? इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि देश में कई ऐसे मंदिर हैं, जिनमें अच्छा-खासा चढ़ावा आता है, लेकिन यह पता नहीं चलता कि उनका खर्च किन कार्यों में किया जाता है? ट्रस्ट संचालित मंदिर भी चढ़ावे की राशि का उपयोग अपने हिसाब से करते हैं। जब भी कोई भक्त मंदिर जाता है तो चढ़ावा देते समय उसके दिमाग में यह नहीं रहता कि उसका क्या उपयोग होगा? समय आ गया है कि इसकी कोई ठोस रूपरेखा बने कि मंदिरों के उपयोग या ट्रस्टी चढ़ावे की राशि का प्रयोग हिंदू धर्म का समुचित ढंग से प्रचार करने और हिंदू समाज के कल्याण में ही खर्च करें। जब तक ऐसा नहीं होगा, चढ़ावे के उपयोग को लेकर सवाल उठते रहेंगे। जितना आवश्यक यह है कि राम मंदिर में चढ़ावा चोरी की घटना की सही तरह जांच हो, उतना ही यह भी आवश्यक है कि ऐसी व्यवस्था बने, जिससे मंदिरों के दान की राशि में किसी तरह की हेराफेरी न हो सके। इस व्यवस्था के निर्माण के लिए धर्माचार्यों और बिब्व हिंदू परिषद जैसे संगठनों को आगे आना होगा।

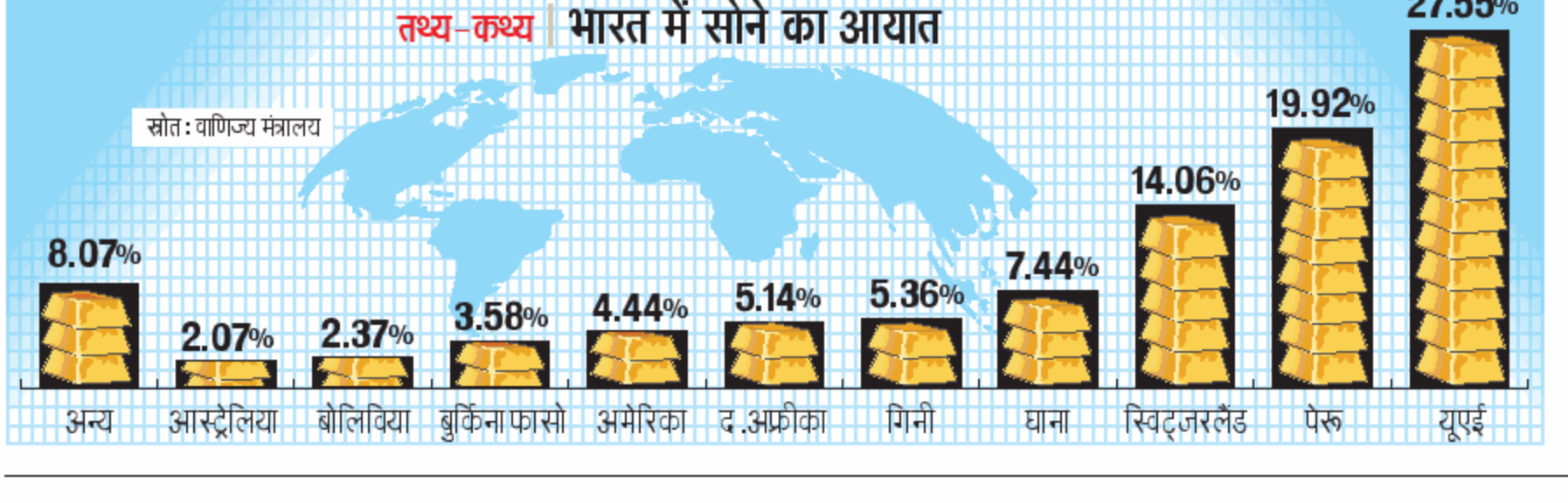
शांति स्थापित करने की तड़प

हास्य-व्यंग्य  
दुनिया में कुछ लोग शांति स्थापित करने के लिए जाने जाते हैं और कुछ लोग शांति स्थापित करने का श्रेय लेने के लिए। अक्सर दूसरे वर्ग के लोग पहले वर्ग से कहीं अधिक सक्रिय पाए जाते हैं। यदि कहीं दो पड़ोसी आपस में नमस्ते भी कर लें तो ऐसे लोग तुरंत ही घोषणा कर देते हैं कि यह सब तो उनके प्रभाव का परिणाम है। अभी वैभव सूर्यवंशी के ग्यारह बाल पर अर्धशतक को भी ऐसे लोग यह कहकर अपनी उपलब्धि बता रहे हैं कि श्रीलंका के खिलाड़ियों की स्लेजिंग के जवाब में उन्होंने ही उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया था। आजकल एक विश्व प्रसिद्ध महापुरुष बड़े दुखों नजर आ रहे हैं। इसका कारण यह बात है कि दुनिया में युद्ध बढ़ रहे हैं। उनको दुख इस बात का है कि अभी तक उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार नहीं मिला है। उनका मानना है कि विश्वशांति के लिए जितना उन्होंने किया, उतना तो स्वयं शांति ने भी अपने लिए नहीं किया होगा। उनके आलोचक कहते हैं कि उन्होंने दुनिया को हथियार भी खूब बेचे हैं, लेकिन समर्थकों का तर्क बड़ा सरल है-हथियार होंगे तभी तो युद्ध होगा और युद्ध होगा तभी तो शांति वार्ता होगी। इसलिए विश्व में हथियार बेचना भी अंततः शांति स्थापना का ही प्रथम चरण है। उनकी एक और विशेषता है। उनसे कोई भी



आज यह समय की मांग है कि नोबेल पुरस्कारों में एक नई श्रेणी जोड़ी जाए 'आत्ममुद्रता में असाधारण योगदान'

नहीं पड़ता। आत्मविश्वास और तथ्य का रिश्ता वैसे भी राजनीति में बहुत पुराना नहीं है। उनका विश्वास है कि भारत और पाकिस्तान के बीच यदि युद्ध रुका तो उनको वजह से, पश्चिम एशिया में यदि तनाव कम हुआ तो उनको वजह से और यदि कल सूरज समय पर निकल आया तो उसमें भी उनका नैतिक योगदान अवश्य होगा। यदि कभी चंद्र ग्रहण लग जाए तो संभव है उसका दोष भी वह किसी विरोधी सरकार पर डाल दें। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे स्वयं अपने सबसे बड़े प्रशंसक हैं। दुनिया उनकी प्रशंसा करे या न करे, वे यह जिम्मेदारी किसी और पर छोड़ते ही नहीं। ऐसे में समय की मांग है कि नोबेल पुरस्कारों में एक नई श्रेणी जोड़ी जाए 'आत्ममुद्रता में असाधारण योगदान' अर्थात् रास्त्र का पुरस्कार तो बाद में जुड़ ही गया था, इसलिए यह भी जुड़ सकता है। इस पुरस्कार के लिए दुनिया भर से नामांकन आएं। कई राष्ट्राध्यक्ष, अनेक पूर्व राष्ट्राध्यक्ष और कुछ भावी राष्ट्राध्यक्ष भी दावा ठोकेंगे, लेकिन पहला पुरस्कार किसे मिलेगा, इसमें शायद ही किसी को संदेह हो। संभव है कि पुरस्कार ग्रहण करते समय वह यह भी घोषित कर दें कि नोबेल समिति ने यह पुरस्कार उन्हें नहीं दिया, बल्कि उनके अनुग्रह पर स्वयं सम्मानित होने का अवसर प्राप्त किया है।



'सूक्ष्म लिवर' करेंगे रुग्ण अंग के काम

मुफ्त यात्रा  
लिवर हमारे शरीर में सबसे ज्यादा काम करने वाले अंगों में से एक है। जब यह अंग काम करना बंद कर देता है, तो अक्सर इसका एकमात्र पक्का इलाज प्रत्यारोपण ही होता है, लेकिन डोनर अंगों की लगातार कमी के कारण यह समाधान सीमित है। विज्ञानी ऐसे तरीके विकसित कर रहे हैं, जो नए लिवर के प्रत्यारोपण की आवश्यकता को खत्म कर सकते हैं। अमेरिका के मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) के विज्ञानियों ने अब 'इंजेक्शन से दिए जा सकने वाले 'सूक्ष्म लिवर' विकसित किए हैं। ये लिवर चूहों में कम से कम दो महीने तक जीवित रहे और स्वस्थ लिवर के कई काम करते रहे। इस अध्ययन से जुड़ी एमआईटी की प्रोफेसर संगीता भाटिया का कहना है कि हम सूक्ष्म लिवर को एक सहायक लिवर के तौर पर देखते हैं। यदि हम रुग्ण लिवर को हटाए बगैर लिवर कोशिकाओं को शरीर में पहुंचा सकें तो लिवर के मुख्य कार्य सुचारु रूप से जारी रह सकते हैं। लिवर लगभग 500 जरूरी काम करता है

विज्ञानियों ने इंजेक्शन से दिए जा सकने वाले 'सूक्ष्म लिवर' बनाए हैं, जो लिवर के प्रत्यारोपण की जरूरत को खत्म कर सकते हैं  
जिनमें विषाक्त पदार्थों को फिल्टर करना, खून से बैक्टीरिया को साफ करना, दवाओं को प्रोसेस करना और खून का थक्का जमने के लिए जरूरी प्रोटीन बनाना शामिल है। इनमें से कई काम हेपेटोसाइट्स पर निर्भर करते हैं, जो लिवर की काम करने वाली मुख्य कोशिकाएं होती हैं। लिवर प्रत्यारोपण की जरूरत के बिना हेपेटोसाइट की गतिविधि को फिर से शुरू करने का एक तरीका हेपेटोसाइट को हाइड्रोजेल जैसी जैव सामग्री के अंदर रखना है, लेकिन इस तरीके में भी जेल को इम्लेंट करने के लिए सर्जरी की आवश्यकता होती है। हेपेटोसाइट कोशिकाओं को सीधे शरीर में इंजेक्ट करने से सर्जरी से बचा जा सकता है। इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने कोशिकाओं को हाइड्रोजेल माइक्रोस्फीयर (पानी सोखने वाले सूक्ष्म गोले) के साथ इंजेक्ट किया। ये छोटे-छोटे गोले कोशिकाओं को एक साथ रखने और आसपास की रक्त वाहिकाओं से जुड़ने में मदद करते हैं। जब इन्हें एक साथ पैक किया जाता है तो ये तरल द्रव्य की तरह व्यवहार कर सकते हैं, जिससे ये सिरिज से गुजर सकते हैं। शरीर के अंदर पहुंचते ही वे वापस ठोस संरचना में बदल जाते हैं। हाल के वर्षों में घाब भरने के लिए हाइड्रोजेल माइक्रोस्फीयर पर अध्ययन के नतीजों से पता चलता है कि कोशिकाओं को गोलों के बीच की जगह में जाने और नया ऊतक बनाने की सुविधा देता है। एमआईटी शोधकर्ताओं ने इसी बेसिक आइडिया का इस्तेमाल करके हेपेटोसाइट कोशिकाओं को इंजेक्शन के बाद एक स्थिर ग्राफ्ट बनाने में मदद की। नए अध्ययन के नतीजों से पता चलता है कि यह विधि भविष्य में लिवर की बीमारी के लिए लंबे समय तक चलने वाला उपचार बन सकती है। यह प्रत्यारोपण के लिए डोनर के अंग की प्रतीक्षा कर रहे मरीजों की भी मदद कर सकती है। (लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

बिना सेनापति के जंग

पटना के बांकीपुर विधानसभा उपचुनाव की घोषणा ने बिहार की राजनीति का तापमान बढ़ा दिया है। नितिन नारायण के राजसभा सदस्य बनने के बाद खाली हुई इस सीट पर भाजपा अपनी प्रतिष्ठा बचाने में जुटी है, जबकि विपक्ष इसे सत्ता पक्ष को घेरने के बड़े अवसर के रूप में देख रहा है। जन सुपुंज के प्रशंति किरोर भी मैदान में उतरने के संकेत दे चुके हैं। भाजपा को कड़ी टक्कर देने के लिए विपक्षी दल साझा रणनीति पर भी विचार कर रहे हैं, लेकिन राजनीति में समय सबसे बड़ा संदेश देता है। ऐसे समय में बिहार में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव विदेश यात्रा पर निकल गए। इसे संयोग कहे जा सकते हैं, लेकिन इसको लेकर राजनीतिक गलियारों में जबरदस्त चर्चा है। सवाल विपक्षी एकता पर भी उठ रहे हैं और नेता प्रतिपक्ष पर भी कि जब विपक्ष को अपने सबसे बड़े चेहरे की सबसे अधिक जरूरत थी, तब तेजस्वी यादव अनुपस्थित हैं।

राजरां

नेताओं और कार्यकर्ताओं की हमेशा भीड़ लगी रहती थी, लेकिन अब वहां न तो कोई महासचिव दिखाई देता है और न ही उनसे मिलने वाले लोगों की भीड़। मौजूद महासचिवों में से अधिकांश को नितिन नारायण की नई टीम में जगह नहीं मिलने की आशंका जताई जा रही है। नई टीम में एक या अधिकतम दो महासचिवों के ही बने रहने की संभावना है। स्थिति केवल महासचिवों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि मोर्चा के प्रमुखों की भी कमीशेरा यही हालत है। वर्तमान पदाधिकारी पार्टी मुख्यालय में तभी दिखाई देते हैं, जब उन्हें किसी बैठक के परित्याग को आवश्यकता जाता है। नई टीम की घोषणा कभी भी होने की संभावना है। ऐसे में कार्यकर्ता भी 'डेंजर जॉन' में खड़े पदाधिकारियों पर टॉव लगाने से बच रहे हैं। ऐसा लगता है कि नई टीम के गठन के बाद ही पार्टी मुख्यालय में पसरा यह सन्नाटा टूटेगा।

सियासी एहसान

राजनीति में कृतज्ञता अब दुर्लभ होती जा रही है। सत्ता और समीकरण बदलते ही लोग अपने राजनीतिक अतीत को भी पीछे छोड़ देते हैं। ऐसे दौर में राष्ट्रीय लोक दल के बरिष्ठ नेता केशी त्यागी एक अलग मिसाल पेश कर रहे हैं। रलोद अध्यक्ष जयंत चौधरी ने उन्हें संसदीय बोर्ड का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाकर संगठन में नंबर दो की जिम्मेदारी सौंपी है। मगर इन दिनों त्यागी की चर्चा किसी नए राजनीतिक

पैतरे के कारण नहीं, बल्कि पुराने रिश्तों को सहेजने की वजह से हो रही है। इन दिनों वे अपने राजनीतिक जीवन के अहम पड़ावों और उनसे जुड़े नेताओं पर एक पुस्तक लिखने में जुटे हैं। इसमें चौधरी चरण सिंह, कर्पूरी ठाकुर, शरद यादव और नीतीश कुमार से जुड़े संस्मरण शामिल होंगे। इन्होंने नेताओं के साथ उन्होंने राजनीति सीखी, संघर्ष किया और अपनी पहचान बनाई। जट्टयू से दूरी बनने के बाद वे अपनी पुरानी राजनीतिक जमीन, रलोद, में लौट आए। रास्ते बदले, दल भी बदले, लेकिन अपने पूर्व नेताओं के प्रति उनका सम्मान नहीं बदला।

वैसी शाही रोक नही

नाथ ब्लाक में काम करने वाले बाबुओं से लेकर सामान्य कर्मचारियों तक में इस बात को लेकर मायूसी है कि कर्तव्य भवन में उन्हें नाथ ब्लाक जैसी शाही रौक का अहसास नहीं होता। उन कर्मचारियों को नाथ ब्लाक से कर्तव्य भवन में स्थानांतरित होना अधिक रूढ़ि रखा है, जो पिछले 25-30 वर्षों से भी कार्यरत थे। अंग्रेजों के समय में बने नाथ ब्लाक के लंबे गलियारे, एक-एक कक्ष, सभा कक्ष, भव्य सीढ़ियां और इसकी विशाल अग्र आकृति वहां कार्य करने वाले कर्मचारियों को एक विशिष्टता का अहसास कराती थीं। कर्तव्य भवन में स्थानांतरित हुए कर्मचारी उदास मन से बताते हैं कि नाथ ब्लाक से बाहर निकलते समय सामने दिखाई देने वाला सडक ब्लाक तथा रायसीन रोड से इंडिया गेट तक का अद्भुत दृश्य उन्हें एक अलग ही अनुभूति देता था। अब बाहर निकलने पर केवल सड़क पर रंगते और दौड़ते बाहनों का दृश्य दिखाई देता है।





एक नजर में

एचडीएफसी बैंक के जमा में 14.7 प्रतिशत की वृद्धि

नई दिल्ली: अप्रैल-जून 2026 तिमाही के दौरान एचडीएफसी बैंक के जमा में 14.7 अंक की वृद्धि हुई है। बैंक ने एक्सचेंज फाइलिंग में बताया कि जून के अंत में उसकी कुल जमा 31,70 लाख करोड़ रुपये हो गई है। बीती तिमाही के दौरान बैंक के कुल कर्ज वितरण में 15.4 प्रतिशत की वृद्धि रही है और जून के अंत में कुल बकाया कर्ज 30.61 लाख करोड़ रुपये रहा है। (आइएनएस)

वी-मार्ट का डेनिस फार एवरी यू कैपेन लांच

नई दिल्ली: रिटेल स्टोर संचालक वी-मार्ट अपने नए कैपेन 'डेनिस फार एवरी यू' के साथ डेनिस का जबरदस्त अंदाज लेकर आया है। इस नए कलेक्शन में 12 से ज्यादा फिट और 10 हजार से ज्यादा स्टाइल के साथ हर पसंद के लिए एक डेनिस मौजूद है। इस कलेक्शन में डेनिस की शुरुआती कीमत सिर्फ 399 रुपये है। (वि.)

## विदेश में संपत्ति की आयकर रिटर्न में जरूर दें जानकारी

आकलन वर्ष 2026-27 के लिए आयकर रिटर्न (आइटीआर) दाखिल करने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। सभी प्रकार के करदाता अपनी पिछले वित्त वर्ष की आय के लिए आइटीआर दाखिल कर सकते हैं। आयकर विभाग लगातार कहता रहता है कि करदाता आइटीआर में अपनी सभी प्रकार की आय की जानकारी अवश्य दें। ऐसा न करने पर करदाताओं पर जुर्माना लगाया जा सकता है। **मनोज कुमार** बता रहे हैं कि विदेश में संपत्ति को लेकर क्या कहते हैं आयकर कानून और इनकी जानकारी न देने पर क्या है जुर्माना का प्रविधान...



### विदेशी संपत्ति को लेकर क्या कहता है कानून

आयकर नियमों के अनुसार, भारत में रहने वाले लोगों को अपने आइटीआर में विदेशी आय और विदेशी संपत्ति की पूरी जानकारी देना अनिवार्य है। इसमें विदेशी बैंक खाते, शेयर, विदेशी सेवानिवृत्ति खाता, एंजलाई स्टॉक ऑनरशिप प्लान (ईएएसओपी) शामिल हैं। यदि करदाता ऐसी संपत्ति की जानकारी देते हैं तो कोई चूक करत है, भले ही उस पर कोई टैक्स नहीं बनता, तब भी 10 लाख रुपये तक का जुर्माना लग सकता है। भारत में आइटीआर में दी जाने वाली जानकारी आमतौर पर अप्रैल से मार्च अर्धवर्ष के दौरान आय से जुड़ी होती है। लेकिन विदेशी संपत्ति की जानकारी कैलेंडर वर्ष के हिसाब से देनी होती है। इसका कारण यह है कि ज्यादातर दूसरे देश कैलेंडर वर्ष का पालन करते हैं। आकलन वर्ष 2026-27 के आइटीआर में जनवरी 2025 से दिसंबर 2025 तक की आय या संपत्ति जानकारी देनी होगी।

### विदेशी संपत्ति को लेकर क्या कहता है कानून

आयकर नियमों के अनुसार, भारत में रहने वाले लोगों को अपने आइटीआर में विदेशी आय और विदेशी संपत्ति की पूरी जानकारी देना अनिवार्य है। इसमें विदेशी बैंक खाते, शेयर, विदेशी सेवानिवृत्ति खाता, एंजलाई स्टॉक ऑनरशिप प्लान (ईएएसओपी) शामिल हैं। यदि करदाता ऐसी संपत्ति की जानकारी देते हैं तो कोई चूक करत है, भले ही उस पर कोई टैक्स नहीं बनता, तब भी 10 लाख रुपये तक का जुर्माना लग सकता है। भारत में आइटीआर में दी जाने वाली जानकारी आमतौर पर अप्रैल से मार्च अर्धवर्ष के दौरान आय से जुड़ी होती है। लेकिन विदेशी संपत्ति की जानकारी कैलेंडर वर्ष के हिसाब से देनी होती है। इसका कारण यह है कि ज्यादातर दूसरे देश कैलेंडर वर्ष का पालन करते हैं। आकलन वर्ष 2026-27 के आइटीआर में जनवरी 2025 से दिसंबर 2025 तक की आय या संपत्ति जानकारी देनी होगी।

### आइटीआर के लिए कौन सा फार्म भरना होगा

विदेश में आय अर्जित करने वाले या संपत्ति रखने वाले रजिस्टर्ड या आइटीआर रजिस्टर्ड (आरओआर) को रिटर्न दाखिल करने के लिए आइटीआर-2 फार्म का इस्तेमाल करना होगा। हालांकि, उनके पास कारोबार या पेशे से कोई आय नहीं होनी चाहिए। ऐसे करदाताओं को 'शेड्यूल एफए' के जरिये विदेशी संपत्ति की जानकारी रखनी होगी। जिन लोगों के पास विदेश में संपत्ति है और उन्हें बिजनेस या पेशे से भी आय होती है, उन्हें आइटीआर-3 के जरिये रिटर्न दाखिल करना चाहिए।

### जरूरी है विदेशी संपत्ति की जानकारी देना

कालेज (अर्धवर्षिक विदेशी आय और संपत्ति) और टैक्स लगाने से जुड़े कानून (बीएफए) जैसे टैक्स चोरी रोकने वाले कड़े कानूनों की वजह से विदेशी संपत्ति की जानकारी देना जरूरी है। करदाताओं को रिटर्न जमा करने से पहले अपने वित्तीय रिकार्ड का मिलान करना चाहिए। सावधानी से जानकारी देने से नोटिस, जुर्माना और लंबी जांच-पड़ताल से बचा जा सकता है।

### देहरे कर से बचने के लिए करें एफटीसी दावा

विदेश में संपत्ति रखने वाले करदाताओं को देहरे कर से बचने के लिए फारेन टैक्स क्रेडिट (एफटीसी) दावा करना चाहिए। हालांकि, ऐसे मामलों में राहत और उसकी मात्रा भारत की ओर से किए गए देहरे कर बचाव समझौते (डीटीए) के नियमों या जहां डीटीए नहीं है, वहां एकतरफा राहत से जुड़े नियमों पर निर्भर करती है। विदेशी आय को आइटीआर-2 की संबंधित अनुसूचियों में बताना चाहिए और योग्य विदेशी टैक्स क्रेडिट का दावा करने के लिए चुकाए गए विदेशी टैक्स की जानकारी अनुसूची (टैक्स रिलीफ) में देनी चाहिए।

## भारत-इजरायल द्विपक्षीय निवेश समझौता लागू

वित्त मंत्रालय ने दी जानकारी, दोनों देशों ने समझौते पर पिछले वर्ष अक्टूबर को किए थे हस्ताक्षर

नई दिल्ली, प्रे: भारत और इजरायल के बीच द्विपक्षीय निवेश समझौता (बीआइए) शनिवार से लागू हो गया। वित्त मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि यह समझौता दोनों देशों के बीच सुरक्षित और भरोसेमंद निवेश वातावरण सुनिश्चित करेगा। साथ ही सीमाना निवेश गतिविधियों में वृद्धि होगी। दोनों देशों ने इस समझौते पर पिछले वर्ष अक्टूबर में हस्ताक्षर किए थे।

- ताजा समझौते में इजरायल को भारत में पोर्टफोलियो निवेश की मिली मंजूरी
- इससे पारंपरिक एफडीआइ से अलग वित्तीय निवेश मिलने की उम्मीद



सामान्य तौर पर भारत के लिए यह अवधि पांच वर्ष होती है। भारत-इजरायल बीआइए में पोर्टफोलियो निवेश भी शामिल है, जो पिछले ऐसे समझौतों से बिलकुल अलग है। इजरायल पहला आर्थिक सहयोग

एफटीए पर वार्ता कर रहे दोनों देश इस समझौते का लक्ष्य होने इस लिए भी महत्वपूर्ण है कि दोनों देश एक मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर भी बातचीत कर रहे हैं। हालांकि, पश्चिम एशिया संकट के कारण एफटीए वार्ता की गति धीमी है। भारत अन्य देशों के साथ भी द्विपक्षीय निवेश समझौतों पर बातचीत कर रहा है, जिनमें सऊदी अरब, कतर, ओमान, स्विट्जरलैंड, रूस, आस्ट्रेलिया और यूरोपीय संघ शामिल हैं। ये समझौते एक-दूसरे के देशों में निवेशों की सुरक्षा और प्रोत्साहन में मदद करते हैं।

भारत-पेरू एफटीए जल्द होने की उम्मीद नहीं नई दिल्ली, प्रे: वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शनिवार को कहा कि प्रस्तावित भारत-पेरू मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर बातचीत के जल्द पूरी होने की संभावना नहीं है। इसका कारण यह है कि बाजार तक पहुंच को लेकर वार्ता है। 17वीं टाय विज इंटरनेशनल बी2बी प्रदर्शनी के दौरान बातचीत में गोयल ने कहा कि कई ऐसे उदाहरण हैं जिनके लिए हम उन्हें बाजार तक पहुंच नहीं दे सकते। प्रस्तावित भारत-पेरू एफटीए के लिए वार्ता 2017 में शुरू हुई थी। जिन वर्ष 2025-26 में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार 10 अरब डॉलर था, जो 2024-25 के 5.98 अरब डॉलर से 67.5 प्रतिशत ज्यादा है। पिछले वित्त वर्ष में भारत का पेरू के साथ व्यापार घाटा 7.47 अरब डॉलर था।

छह महीने के निचले स्तर पर टीएमटी सरिया की कीमत नई दिल्ली, प्रे: कंस्ट्रक्शन की प्रमुख सामग्री में शामिल टीएमटी सरिया की कीमत छह महीने के निचले स्तर 50 हजार रुपये प्रति टन पर पहुंच गई है। कर्मोडिटी के मूल्य की जानकारी देने वाले प्लेटफार्म बिगमिंट की एक रिपोर्ट के अनुसार, मांग में कमी और बाजार में स्टाक ज्यादा होने के कारण कीमतों में यह गिरावट आई है।

रिपोर्ट के अनुसार, जून महीने के दौरान टीएमटी सरिया की कीमतों 10 प्रतिशत की गिरावट आई, जो मई के अंत में 56 हजार रुपये प्रति टन थी। अप्रैल के 60 हजार रुपये प्रति टन के मुकाबले जून के अंत तक टीएमटी सरिया की कीमत में 16 प्रतिशत की गिरावट आई है। इससे पहले दिसंबर 2025 में टीएमटी सरिया का मूल्य 49,000 रुपये प्रति टन तक पहुंच गया था। रिपोर्ट में कहा गया है कि मानसून के बाद कीमतें बढ़ सकती हैं।

## विदेशी कंपनियां एआइ से भारत में 1,000 करोड़ रुपये की कर रहीं कमाई

राजीव कुमार • जागरण

नई दिल्ली: आफिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) के बढ़ते इस्तेमाल के साथ इसका आयात बिल भी तेजी से बढ़ता जा रहा है। इसका सीधा लाभ विदेशी कंपनियों को हो रहा है। चैटजीपीटी से जुड़ी कंपनी ओपन एआइ और क्लाउड विकसित करने वाली कंपनी एंथ्रोपिक्स भारतीय यूएस से सालाना कम से कम 1,000 करोड़ रुपये की कमाई कर रही हैं। ओपन एआइ के मुताबिक 10 करोड़ भारतीय एआइ का इस्तेमाल कर रहे हैं और इनमें से एक प्रतिशत भारतीय एआइ इस्तेमाल के बदले भुगतान कर रहे हैं। ये एक प्रतिशत भारतीय एआइ इस्तेमाल के बदले विदेशी कंपनियों को 400 रुपये से लेकर 19,000 रुपये प्रतिमाह का भुगतान कर रहे हैं। मतलब 10 लाख यूएस डॉलर का भुगतान कर रहे हैं और इस हिसाब से यह रकम सालाना 960 करोड़ होती है। सर्च इंजन गूगल भी भारत से सिर्फ बिज्ञापन के नाम पर सालाना 5,000 करोड़ की कमाई कर रहा है।

10 करोड़ भारतीय वर्तमान में एआइ का कर रहे हैं इस्तेमाल एक प्रतिशत यूएस कंपनी को करते हैं भुगतान

3.48 घंटे में होने वाले काम को सिर्फ 14.48 मिनट में कर लेते हैं यूएस एआइ की मदद से

65 प्रतिशत से अधिक एआइ यूएस 18-35 वर्ष के हैं भारत में



वैश्विक स्तर पर एआइ एप डाउनलोडिंग में 20 प्रतिशत हिस्सेदारी भारतीयों की है। इसे मद्देनजर एंथ्रोपिक्स व ओपन एआइ जैसे कंपनियों अब भारतीय यूएस से पैसे वसूलने के लिए दो डालर से लेकर पांच डालर का पैकेज लेकर आ रही हैं। एआइ माडल परलेलैब्स ने तो भारतीय यूएस के लिए 2.5 डालर का पैकेज निकाल दिया है। ये कंपनियां भारत में बाकायदा अपनी मार्केटिंग टीम भी बना रही हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि अभी चैटजीपीटी जैसे माडल मुफ्त में इस्तेमाल की छूट देकर अपनी आदत डलवा रहे हैं। फिर उनसे एक डालर या दो डालर वसूलना शुरू करेंगे। वर्तमान में विदेशी एआइ माडल इस्तेमाल करने वाले यूएस ने बताया कि उनके खाते में पैसे कम होते ही एआइ की गति धीमी हो जाती है ताकि आप तुरंत फिर से पूरा पैसा डाल दें।

### भारतीय एआइ माडल विदेशी माडल का नहीं कर पाते मुकाबला

जीएस्टी के एआइ सोल्यूशन से जुड़े टैक्स बोट जीपीटी के संस्थापक हिमाशु कुमार ने बताया कि वे एआइ इस्तेमाल के लिए प्रतिमाह विदेशी कंपनियों को 400 डॉलर (38,000 रुपये) का भुगतान करते हैं। एंथ्रोपिक्स व ओपन एआइ के माडल जैसा लार्ज लैंग्वेज माडल (एलएलएम) घरेलू स्तर पर विकसित नहीं हुआ है। विदेशी कंपनियों को पैसा देना उनकी मजबूरी है। सर्वम, भारत जेन, भारत जीपीटी जैसे घरेलू माडल विदेशी माडल का मुकाबला नहीं कर पा रहे हैं। मुकुंश अंबानी की रिलायंस इंडस्ट्रीज ने जीपीटी की तरह हनुमान एआइ माडल लाने की घोषणा की थी। एंथ्रोपिक्स की रिपोर्ट के मुताबिक प्रोफेशनल्स के बीच एआइ का इस्तेमाल इसलिए भी तेजी से बढ़ता जा रहा है।

## प्याज खरीद कीमत अब 2,125 रुपये प्रति क्विंटल

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

प्याज की बढ़ती कीमतों के बीच सरकार ने बाजार पर नियामकी कड़ी कर दी है। सरकार ने बफर स्टाक के लिए प्याज खरीद की कीमत 13 प्रतिशत बढ़ाकर 2,125 रुपये प्रति क्विंटल कर दी है। इसका उद्देश्य खरीद को बढ़ाना और किसानों को लाभ देना है। इससे पहले बफर स्टाक के लिए प्याज की कीमत 1,875 रुपये प्रति क्विंटल थी। नई दरें चार जुलाई से प्रभावी हो गई हैं। बफर स्टाक को इसलिए भी समृद्ध किया जा रहा है, ताकि जरूरत पड़ने पर बाजार में पर्याप्त प्याज उपलब्ध कराया जा सके। उपभोक्ता मामलों की सचिव निधि खरे का कहना है कि उत्पादन, खरीद और बाजार की स्थिति पर सरकार किसानों को उचित दाम मिले। इसके साथ ही उपभोक्ताओं को भी प्याज की बढ़ती कीमतों से राहत मिल सके। खरीद मूल्य में बढ़ोतरी से किसानों को बेहतर दाम मिलेगा। साथ ही बफर स्टाक भी

### किसानों को बेहतर दाम दिलाने के लिए खरीद मूल्य में 13 प्रतिशत की वृद्धि



मजबूत होगा। बफर स्टाक की खरीद इस सीजन में खरीद मूल्य तीन बार बढ़ाया है। अब आगे बढ़ोतरी की जरूरत नहीं है, क्योंकि इससे कुछ व्यापारी कृत्रिम रूप से कीमतें बढ़ाने की कोशिश कर सकते हैं। इस वर्ष दो लाख टन प्याज खरीदने का लक्ष्य रखा है, लेकिन अब तक केवल पांच हजार टन ही खरीदा जा सका है। कृषि मंत्रालय के दूसरे अग्रिम

### अनुमान के अनुसार, 2025-26 में देश में प्याज का उत्पादन 307.37 लाख टन रहने का अनुमान है। यह पिछले वर्ष के उत्पादन के लगभग बराबर है। इसलिए कुल उपलब्धता को लेकर चिंता नहीं है। फिर भी प्याज की कीमतों में मौसम के कारण सामान्य बढ़ोतरी की संभावना बनी हुई है। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और गुजरात में इस समय प्याज का पर्याप्त भंडार है। देशभर की मंडियों में प्रतिदिन 50 हजार टन से अधिक प्याज की आकत देश हो रही है। अकेले महाराष्ट्र में रोज करीब 30 हजार टन प्याज बाजार पहुंच रहा है। बर्ह औसत थोक कीमत लगभग 18 रुपये प्रति किलोग्राम है, जबकि देश में प्याज का औसत खुदरा मूल्य करीब 31 रुपये प्रति किलोग्राम चल रहा है। अच्छी गुणवत्ता वाला काफी प्याज अभी भी गोदावरी में सुरक्षित रखा गया है, जिसे बाद में बाजार में उतारा जा सकता है। मानसून की देरी और कम बारिश के कारण कुछ व्यापारियों ने कीमतें बढ़ाने की उम्मीद में अतिरिक्त खरीद की है।

## अमेरिकी न्याय विभाग ने कहा, अदाणी केस दर्ज ही नहीं होना चाहिए था

न्यूयार्क, प्रे: अमेरिकी न्याय विभाग (डीओजे) ने भारतीय अरबपति गौतम अदाणी और अन्य सात लोगों के खिलाफ चल रहे आपराधिक मामले को वापस लेने के फैसले का किया बयान

10 पेजों के दस्तावेज में कहा- यह कानूनी रूप से दोषपूर्ण व कूटनीतिक रूप से नुकसानदेह था

विभाग ने एक फेडरल जज की अदालत में दाखिल 10 पेजों के दस्तावेज में कहा कि अभियोजन कानूनी रूप से दोषपूर्ण, कूटनीतिक रूप से नुकसानदेह और ट्रंप प्रशासन की इन्फोर्मेट प्रार्थमिकताओं के अनुरूप नहीं था। इसे एक साल पहले ही बंद कर दिया जाना चाहिए था या फिर इसे शुरू ही नहीं किया जाना चाहिए था। डीओजे का यह जवाब तब आया जब अमेरिकी जिला जज निकोलस गरीफिस ने विभाग से जानना चाहिए था कि वह चार्जशीट को हमेशा के लिए क्यों खत्म करना चाहता है। डीओजे की पहले की याचिका में केस को खत्म करने की वजह स्पष्ट तौर पर नहीं बताई गई थी। इसलिए उन्होंने

अदालत में अदाणी व अन्य के खिलाफ चल रहे आपराधिक मामले को वापस लेने के फैसले का किया बयान

विभाग से अपने फैसले के पीछे की वजहों की पूरी जानकारी मांगी थी। असल में 2024 में अमेरिका की पिछली बाइडेन सरकार के दौरान डीओजे ने अदाणी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अदाणी और अन्य के खिलाफ आरोप लगाया था कि वे भारतीय सरकारी अधिकारियों को 25 करोड़ अमेरिकी डॉलर की रिश्वत देने और अन्य संस्थाओं से अरबों डॉलर के निवेश प्राप्त करने के लिए निवेशकों से झूठ बोलने की साजिश में शामिल थे। इस दौरान अदाणी ग्रुप एनर्जी लिमिटेड ने अमेरिकी निवेशकों से कम से कम 17.5 करोड़ अमेरिकी डॉलर जुटाए थे।

राशिफल	विवरण
मेष (चू, चे, वो, ला, ली, तु, ले, लो, आ)	कार्य में सफलता, अर्थसाधन में प्रयास करें, दिग्दर्शक व्यस्तमत्, आत्मविश्वास बनाये, विदेश से सम्बन्ध, चिन्ता का समाधान, साधनों की पूर्ति, सन्तान के लिये योजना, शिक्षा में रुचि, क्रोध, ईर्ष्या से बचे, दाम्पत्य में सुख, अधिकारी से सहयोग, व्यय अधिक, शुभ अंक 4
वृष (इ, ऊ, ए, ओ, पा, वी, वू, व्, वो)	अर्थ साधन में सफलता, व्यापारिक सम्पर्क, क्षेत्र वृद्धि, पारिजननों का सहयोग, भावुकता से बचे, सफलता में कमी रहेगी, शिक्षा में अवरोध, चयन में सफलता, शत्रुपक्ष परास्त, प्रणय में सुख, जीवनसाथी का मिलन, यात्रा में सावधानी, स्थान पद परिवर्तन, आय में सुधार, शुभ अंक 5
मिथुन (का, की, कू, व, ड, छ, के, को, हा)	धनगम में देरी, कार्य में सहयोग से सफलता, साझेदारी में सावधानी, पूंजी निवेश में सावधानी, निजी संबंधों में सुधार, सन्तन से सहयोग, लेखन कार्य में प्रगति, मित्रों से सहयोग, वाद विवाद से बचे, धर्म में रुचि, राज्यपक्ष से सावधानी, स्थान पद परिवर्तन प्रभावी, व्यय अधिक, शुभ अंक 6
कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)	कार्य में धम से सफलता, अर्थसाधन में प्रयास, प्रतिस्पर्धा से चिन्ता, निर्णय सलाह से करें, परिजनों का सहयोग, भूमि, भवन कार्य में सफलता, अध्ययन में एकग्रता, मित्रों से सावधानी, खानपान का ध्यान रखें, अनुभव की प्राप्ति, राजनीतिक अपयश, व्यय अधिक, शुभ अंक 7
सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टै)	साझेदारी में सावधानी, कार्य में प्रगति, अर्थसाधन में सुधार, विदेशी कार्य में प्रयास सार्थक, निजी संबंधों में सुधार, वाहन, आभूषण योग प्रभावी, धर्म, रवत विकार प्रभावी, दाम्पत्य में सुख, राज्यपक्ष से सावधान, क्रोध, ईर्ष्या से बचे, व्यय अधिक, शुभ अंक 8
कन्या (टो, पा, पी, पू, प, पा, उ, पे, पो)	प्रतिस्पर्धा से चिन्ता, अर्थसाधन में सफलता, व्यापारिक क्षेत्र में वृद्धि, युक्ति और अनुभव से कार्य करें, महिला से सहयोग, संबंधों में सुधार, पारिवारिक चिन्ता, शिक्षा में अवरोध, शत्रुपक्ष प्रभावी, दाम्पत्य में सुख, आशातीत सफलता, आय में सुधार, शुभ अंक 9
तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, तै)	सामाजिक कार्य में यश, धनगम में प्रयास सार्थक, कार्य व्यापार के प्रति सचेत रहें, अतिकल्पना, अतिविश्वास से बचे, निजी संबंधों में सुधार, भूमि, निर्माण कार्य में देरी, सामाजिक कार्य में यश, सन्तान से सहयोग, शिक्षा में एकग्रता, मित्रों से सहयोग, प्रणय में सुख, शुभ अंक 1
वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)	लक्ष्य के प्रति सजगता, व्यापारिक कार्य में वृद्धि, धनगम में प्रयास, रुके कार्य में सफलता, निजी संबंधों में अनशन, सन्तान से सहयोग, शिक्षा में सफलता, वाद विवाद से बचे, जीवनसाथी का मिलन, क्रोध, ईर्ष्या से बचे, राज्यपक्ष से सावधान, व्यय अधिक, शुभ अंक 2
धनु (यो, यी, भा, भी, भू, घा, फा, दा, धे)	पारिवारिक कार्य में संतुलन बनाए, अर्थ साधन में तत्परता, सकारात्मक विचार शैली रखें, विदेशी कार्य में प्रयास, चिन्ता का समाधान, वाहन, आभूषण योग, शिक्षा में एकग्रता, चयन में सफलता, समय का सदुपयोग करें, मनोरंजन योग, क्रोध, ईर्ष्या से बचे, व्यय अधिक, शुभ अंक 2
मकर (भो, जा, ज, खी, खु, खे, खो, गा, गी)	धनगम में सफलता, साझेदारी में सावधानी, जीवन में नकारात्मक विचारों से बचे, साधनों की पूर्ति, माता-पिता का ध्यान रखें, संबंधों में सुधार, सन्तन से अनशन, मित्रों से सहयोग, अनुभव की प्राप्ति, दाम्पत्य में सुख, अधिकारी से सहयोग, व्यय अधिक, शुभ अंक 4
कुम्भ (गु, गे, गो, रा, री, रू, से, सा, दा)	पू्जी निवेश में सावधानी, अर्थसाधन में प्रयास, नकारात्मक कार्य करने वालों से सावधान, अतिविश्वास से बचे, सामाजिक कार्य में यश, वाहन, आभूषण योग, शिक्षा में रुचि, वायु विकार, रवत विकार योग, प्रणय में सुख, शान्ति का अधिकता, तत्वा, रवत विकार योग, प्रणय में सुख, व्यय अधिक, शुभ अंक 5
मीन (दी, दू, थ, ड, डे, दो, वा, वी)	प्रतिस्पर्धा से चिन्ता, अर्थसाधन में प्रयास, सकारात्मक सोच से लाभ, सामाजिक यश, लक्ष्य के प्रति सजगता, वाहन साजसज्जा का योग, महिला से सहयोग, सन्तन से सहयोग, विचारों की अधिकता, तत्वा, रवत विकार योग, प्रणय में सुख, व्यय अधिक, शुभ अंक 6





जगण्याच्या प्रत्येक पैलूचा सखोल परामर्श



# तेव्हा आयुष्य खऱ्या अर्थानं सार्थकी लागल्यासारखं वाटलं

'बाई गेल्या...' असा विजय केंकरेचा फोन आला आणि छातीत धस झालं... त्यांची तब्येत वयोमानाप्रमाणे बरी नव्हती हे कळलं होतं... पण भेटायला जायची हिंमत होत नव्हती...

सुकन्या कुलकर्णी

ज्येष्ठ अभिनेत्री

वातमी आली... 'लाइफलाइन', 'नागमंडल'चे सगळे दिवस डोळ्यांसमोरून गेले आणि बाईचा आवाज कानात घुमयला लागला. ते त्याचं डोळे मिचकावून हसणं, गोड स्वरात अगदी एखाद्या लहानपत्या बाळाला समजावतं असे बोलणं... सगळं-सगळं आठवायला लागलं... 'नागमंडल'च्या वेळी माझे केलेले लाड...

'लाइफलाइन'मध्ये खरेतर एकाच भागात माझे काम होते, परंतु माझे काम आणि माझी त्याला योग्य असलेली प्रकृती बघून माझी भूमिका शेवटपर्यंत त्यांनी ठेवली. नुसती ठेवली नाही तर प्रेक्षकांच्या लक्षात राहिल अशी भूमिका मला दिली. माझं महाविद्यालयाचं शेवटचं वर्ष होतं म्हणून मला आणि रेणुकाला (ती एमए करत होती) नानावटी हॉस्पिटलमध्ये जिथे आमचे शूटिंग चालू होते तिथे अभ्यासकारिता एक वेगळी खोली दिली होती.

'नागमंडल'च्या वेळी माझे दुसरे नाटक चालू होते, पण त्या भूमिकेसाठी त्यांना मीच

हवे होते आणि अगदी १५/२० दिवस अगोदर मी त्यात सहभागी झाले. तालीम एनसीपीमध्ये चालायची. त्यामुळे जिथे माझा प्रयोग असेल, तिथे त्या मला त्यांची गाडी जायला-यायला घायच्या. मी खूप चहा प्यायचे तेव्हा म्हणून माझ्यासाठी भरपूर चहा पिंपात ठेवलेला असायचा.

बाईच्या कामाची पद्धत फार वेगळी होती. त्यामुळे ती प्रकिया तुम्हाला खूप अभ्यास करायला लावायची आणि समृद्ध करायची. एखादा सीन घायच्या आणि आम्हालाच 'इमोवाइझ' करायला सांगायच्या आणि मग लेखकाने लिहिलेले संवाद आम्हाला सांगायच्या. त्यामुळे संवाद आपोआप लक्षात राहायचे. माझ्या नृत्याचा, माझ्या केंसांचा मला पुरेपूर उपयोग करता आला. बाई अशा काही आपल्याला उदाहरण घायच्या की, आपोआप आपली एक्सप्रेशन तशी घायची. 'लाइफलाइन'मध्ये माझी भूमिका अत्याचार झालेल्या मुलीची होती. तोसुद्धा एका नेत्याच्या मुलाकडून. तेव्हा मला बाईंनी एका एवढंच सांगितलं की, बकरीला बळी घायला नेतात तेव्हा तिला होणाऱ्या वेदना आठव... तुमच्याही डोळ्यांसमोर लगेच ते

हावभाव आले असतील ना?... इतकं सोपं करून सांगायच्या. 'नागमंडल'च्यावेळी लाईव्ह म्युझिक होतं. भास्कर चंदावरकर यांचं. तेव्हा त्यांनी किती-किती प्रयोग केले. रसिका, उदय, नागेश या सगळ्यांच्या आवाजाचा वेगळाच वापर केला होता. वेशभूषा, त्या नाटकाची भाषा सगळंच प्रयोगशील...

त्यांनी त्यांच्या नकळत दिलेली ही शिकवण आयुष्यभर माझ्याबरोबर असेल आणि बाई माझ्याबरोबर कायम असतील. त्यांच्याबद्दल बोलावं तितकं कमी आहे. माझ्या इतर कामांमुळे मला त्यांचा सहवास फारच कमी मिळाला. परंतु जे काही मिळालं त्याचं मोल करणं खूप कठीण आहे. त्यांच्या शिबिरांमध्ये त्या माझी 'नागमंडल'मधील विलप दाखवून त्याबद्दल मुलांना अभ्यास करायला सांगतात. हे जेव्हा मला कळलं, तेव्हा आयुष्य सार्थकी लागल्यासारखं वाटलं. अजून काय हवंय? एवढ्या महान दिग्दर्शका जेव्हा आपली दखल घेतात, तेव्हा ते एखाद्या पुरस्कारापेक्षा कमी नसतं. खूप खूप ठेवा दिले आहे. मलाच नाही तर माझ्यासारख्या आणि माझ्यापेक्षा अनेक श्रेष्ठ आणि ज्येष्ठ कलावंतांना बाईंनी घडवलं आहे.

# 'नाटक' हे सुचवायचं आणि 'चित्रपट' हे दाखवायचं माध्यम आहे

विजय केंकरे

ज्येष्ठ अभिनेते, दिग्दर्शक

अनेकांसाठी 'नाट्यशास्त्राचे विद्यापीठ' असलेल्या विजयाबाई मेहता या केवळ भारतीयच नव्हे, तर आंतरराष्ट्रीय पातळीवरील रंगभूमीवरील नावाजलेले व्यक्तिमत्त्व होतं. एका बाजूला थिअरी आणि दुसऱ्या बाजूला प्रॅक्टिकल करणाऱ्या फार कमी लोकांपैकी बाई एक होत्या. विजयाबाई या आधुनिक मराठी नाटकाचे जनक असलेल्यांपैकी एक होत्या. 'रंगयान'पासून त्यांनी नाटकाचा संपूर्ण चेहरामोहराच बदलून टाकला. यात दिग्दर्शनासोबतच त्यांच्या अभिनयाचाही मोलाचा वाटा होता.

विजयाबाईची नाटके वेगळ्या प्रवाहाने जाणारी होती. विजय तेंडुलकर, महेश आंकुंचवार आदी दिग्गजांसोबत त्या घडत गेल्या. त्यानंतर त्यांनी खूप अभिनेते घडवले आणि स्वतः नाट्यशास्त्रातील विद्यापीठाच्या रूपात जगसमोर आल्या. जयवंत दळवींसोबत

बाईंनी एकत्र केलेली नाटके त्यांच्या कारकिर्दीतील महत्त्वाचा टप्पा ठरली. 'पुरुष' तसेच 'महासागर' यासारखी रंगभूमी गाजवणारी नाटके त्यांनी दळवींसोबत दिली. 'अजब न्याय वर्तुळाचा' हे नाटक मुंबई मराठी साहित्य संघासाठी केल्यानंतर थेट जर्मनीला गेल्या होत्या. बाईंनी जर्मनीमध्ये जाऊन 'शाकुंतलम' केले. त्यांनी दिग्दर्शित केलेल्या 'लाईफलाइन' या मालिकेत मी त्यांचा मुख्य साहाय्यक होतो. त्यामुळे बाईंचे काम मी खूप जवळून पाहिले.

झोकून देऊन काम करणे, हे बाईंचे मुख्य स्वभाववैशिष्ट्य होते. कामापुढे त्यांना दुसरे काहीच दिसत नसायचं. त्या कधीही रागावल्या नाहीत. त्यांनी आपल्या पद्धतीने माणसं घडवत, त्यांच्याशी संपर्क ठेवला. अशी माणसं असणं अवघड असतं. त्यांनी आपली एक वेगळी शैली निर्माण केली. मराठी रंगभूमीवरील महत्त्वाच्या नाटकांनी बाईंची कारकीर्द सजलेली आहे.

बाईंसोबतची एक ठराविक आठवण सांगता येणार नाही. त्यांचा असिस्टंट म्हणून काम पूर्ण

केल्यानंतर त्यांनी मला अत्यंत प्रेमाने सल्ला दिला होता की, तू नोकरी कर, हे काही तुझं काम नाही, असं त्या म्हणाल्या होत्या. पण, त्याचा पुढे मला नाट्यसृष्टीतच पाय रोवायला उपयोग झाला. त्या अतिशय स्पष्ट बोलायच्या. त्यांचे एक वाक्य मी कधीच विसरणार नाही. त्या म्हणायच्या, 'नाटक हे सुचवायचं आणि चित्रपट हे दाखवायचं माध्यम आहे.'

त्या काळात स्त्री दिग्दर्शकांना वाव नसल्याने बाईंना पुरुषांसारखेच काम करावे लागले. त्या विद्वान होत्या. त्यांच्या विद्वतेने त्यांना सर्वोच्च स्थानी विराजमान केले. बाई काहीच दिवस नसायचं. त्या कधीही शिकल्या त्यांनी त्यांना आत्मविश्वास दिला. सुदैवाने त्यांच्या आसपास जी मंडळी होती, त्यांनी बाईंना स्त्री असल्यासारखे कधीच वागवले नाही. बाईंना घरी एका बाईंचाच मोलाचा पाठिंबा लाभला. त्या होत्या दुर्गाबाई खोटे. बालपणापासूनच बाईंच्या सान्निध्यात आल्याने त्यांच्या जाण्याने माझे वैयक्तिकही खूप मोठे नुकसान झाले आहे.

## उमाकांत देशपांडे

वरिष्ठ सहाय्यक संपादक

सोशल मीडिया हे कोट्यवधी लोकांसाठी अभिव्यक्तीचे व्यासपीठ झाले आहे. तेथे व्यक्त होत असताना अनेक जण राज्यघटनेने दिलेल्या अभिव्यक्तिस्वातंत्र्याच्या अधिकाराचा स्वैर वापर करीत असतात. बेछूट लिखाण, पुरावे न देता आरोप करून एखाद्या व्यक्ती किंवा संस्थेची बदनामी करणे, यासाठीही या व्यासपीठाचा गैरवापर होत असल्याचे अनेकदा दिसून येते. कर्नाटकमधील एका प्रकरणातून आणि मुंबईसह अन्य ठिकाणी झालेल्या काही प्रकरणांमधून हे ठळकपणे दिसून येत आहे.

बंगळूरुतील त्वचरोगतज्ज्ञ डॉ. शरण्या पद्मा यांनी एक रील समाजमाध्यमांवर शेअर केली. कर्नाटक मिल्क फेडरेशनच्या सुप्रसिद्ध 'नंदिनी' ब्रँडच्या सुगंधी दूध व अन्य काही उत्पादनांमुळे आरोग्यावर गंभीर परिणाम होतो, असे त्या रीलमधून दाखविण्यात आले होते. त्यामुळे त्यांच्याविरुद्ध बंगळूरु पोलिसांनी गुन्हा दाखल केला. आपल्याविरुद्धची फौजदारी कारवाई रद्द करण्यासाठी डॉ. पद्मा यांनी कर्नाटक उच्च न्यायालयाचे दरवाजे ठोठावले होते. मात्र, न्यायमूर्ती एम. नागप्रसन्ना यांनी डॉ. पद्मा यांना कोणताही दिलासा देण्यास नकार देत फौजदारी कारवाईला सामोरे जाण्यास सांगितले आहे. जर एखाद्या दुधामुळे आरोग्यावर परिणाम होतो, तर तुम्ही सरकारकडे तक्रार केली आहे का, त्या दुधाची प्रयोगशाळेत तपासणी केली आहे का, अशी विचारणा न्यायालयाने डॉ. पद्मा यांना केली. कोणतेही पुरावे, शास्त्रीय आधार नसताना सोशल मीडियावर रील टाकून जनमानसांत भीती पसरविणे योग्य नसल्याचे न्यायालयाने सुनावले आहे. त्यामुळे बेछूट लिखाण करणाऱ्या डॉक्टरांना आता फौजदारी कारवाईला तोंड द्यावे लागणार आहे.

# बेछूट 'सोशल' वावर येणार अंगलट

सोशल मीडियावर कोणत्याही बाबीवर आणि व्यक्ती, संस्थेवर आपल्याला काहीही लिहिण्याची मुभा मिळाली आहे, त्या लिखाणाबद्दल आपल्याला कोणीही जाब विचारणार नाही, असा अनेकांचा समज आहे. त्यामुळे शिवीगाळ, अश्लाघ्य भाषेतही अनेकदा लिहिले जाते, काहींना मोठ्या प्रमाणावर ट्रोल केले जाते. विरोधी राजकीय विचारांच्या व्यक्तींवर जोरदार टीका केली जाते. मात्र, बेलगाम किंवा खिनबुडाची चवत्तये करणे, लोकांमध्ये गैरसमज निर्माण करून घडवत पसरविणे, हे आता अंगलट येऊ शकते.



## सलमानविरोधातील मजकूर हटविण्याचे आदेश

सुपरस्टार सलमान खानच्या पनवेल येथील फार्माहऊसचे बांधकाम बंदकायदा असल्याचा दावा करीत त्याचे व्हिडीओ सलमानचा शेजारी केतन कवकर याने सोशल मीडियावर शेअर केले होते. त्याविरोधात सलमानने मुंबई उच्च न्यायालयात याचिका सादर केल्यावर न्यायालयाने हे व्हिडीओ आणि बदनामीकारक मजकूर हटविण्याचे आदेश महिनाभरपूर्वी दिले.

कोणत्याही बाबीसंदर्भात सरकारी किंवा संबंधित यंत्रणेकडे तक्रार न करता सोशल मीडियावर बिनबुद्दाले आरोप केले जातात, याविषयी न्यायालयाने नाराजी व्यक्त केली होती. सोशल मीडिया हे बदनामी करण्याचे आणि पुरावे नसताना बेछूट आरोप करण्याचे व्यासपीठ नाही, असे न्यायालयाने काही प्रकरणांमध्ये निर्णय देताना स्पष्ट केले.

पुण्यातील प्रसिद्ध व्यावसायिक केतन अग्रवाल यांच्या हत्येनंतर डॉ. मुस्कान सोनी या दंतवेद्याने सोशल मीडियावर आक्षेपाई वक्तव्य केल्याने संतापाची लाट उसळली आणि ऑल इंडिया डॉटल स्टुडंट्स अँड सर्जन्स असोसिएशनने त्यांचे पाच वर्षांसाठी नुकतेच निलंबित केले.

सरकारी यंत्रणांनी आपल्या तक्रारीची दखल न घेतल्यास सभ्य भाषेत शासकीय उच्चपदस्थ, मंत्री किंवा इतरांनी दखल घ्यावी, यासाठी सोशल मीडिया हे प्रभावी साधन आहे. मात्र, कोणाबद्दलही वाटेल ते लिहिण्याची मुभा असलेले व्यासपीठ आहे, असा समज करून घेणाऱ्यांनी या उदाहरणांवरून धडा घेण्याची गरज आहे. पुरावे नसताना कोणावरही बेछूट आरोप करणाऱ्यांना मात्र आता कारवाईला तोंड द्यावे लागेल.

## आपले आरोग्य आपल्या घरात

# तुम्हाला माहीत आहेत लोणच्याचे हे चमत्कार?

डॉ. रोहिणी कुळकर्णी-पांडरे  
सदस्या, मायक्रोबायोलॉजिस्ट सोसायटी, इंडिया

मानवाच्या मूलभूत गरजांमध्ये सर्वोच्च स्थान हे अन्नाला आहे. महाराष्ट्रीय परंपरेनुसार जेवणाचे ताट वाढताना डाव्या आणि उजव्या बाजूचे नियम अतिशय आरोग्यपूरक आणि शास्त्रशुद्ध आहेत. डाव्या हाताला तोंडी लावणे व चटपटीत पदार्थाचा समावेश असतो ज्यात प्रामुख्याने लिंबू, चटणी, लोणचे, कोशिंबीर इत्यादी पदार्थ असतात. हे पाचक रस सवण्यास कारणीभूत ठरतात. पारंपरिक लोणचे बनविताना त्यामधील जीवाणूमुळे किण्वन प्रकिया होते आणि लोणच्याद्वारे हे सूक्ष्मजीव आतड्यांमध्ये वास्तव्य करून सहजीवी (सिम्बायोटिक) संबंध प्रस्थापित करतात ज्यामुळे मुख्यत्वे अन्नाचे पचन होण्यास आणि शरीर निरोगी राहण्यास मदत होते. म्हणूनच आरोग्याच्या दृष्टीने अतिशय महत्त्वपूर्ण असा प्रोबायोटिक (प्रोबायोटिक) सूक्ष्मजीवांचा स्रोत ठरतात.



## लोणच्यातील कोणत्या घटकांमुळे काय होतो आपल्यावर परिणाम?

अन्नपदार्थ टिकविण्यासाठी वेगवेगळ्या भाज्यांपासून पारंपरिक पद्धतीने 'किण्वन' प्रक्रियेद्वारे लोणचे बनविले जाते.

लोणच्यात वापरले जाणारे घटक पदार्थ आणि मसाल्यांमध्ये भरपूर अँटिऑक्सिडंट असतात, जे शरीर पेशींचे नुकसान टाळतात.

लोणच्यातील लोह आणि खनिजे रक्ताची कमतरता (अॅनिमिया) टाळण्यास मदत करतात.

किण्वन प्रक्रियेसाठी कारणीभूत सूक्ष्मजीव अन्नाचे विघटन करतात ज्यामुळे त्याला विशिष्ट चव, गंध, रंग आणि पौष्टिक (टेक्सचर) प्राप्त होते आणि या प्रक्रियेत तयार झालेल्या आन्नामुळे ते दीर्घकाळ टिकते.

या प्रक्रियेसाठी मुख्यतः लॅक्टिक अॅसिड बॅक्टेरिया, बॅसिलस, मायक्रोकोकस व यीस्ट कारणीभूत असतात.

संशोधनाद्वारे असे लक्षात आले आहे की, बॅसिलस हे ६ टक्के मीठ व आतड्यांमधील असलेले पित्तक्षारताही (बाइल सॉल्ट) जिवंत राहू शकतात आणि म्हणूनच ते आतड्यांमध्ये सहजीवी जीवाणू म्हणून आतड्याचे आरोग्य राखण्यात महत्त्वाची भूमिका निभावतात.

हे जीवाणू आतड्यांमध्ये प्रतिजैविके तयार करतात ज्यामुळे रोगास कारणीभूत जंतू जर आपल्या आतड्यात आले तर येथील आन्लयुक्त स्थिती आणि प्रतिजैविके यांच्यासमोर त्यांच्या टिकाव लागत नाही आणि त्यांचा नाश होतो. अशा रीतीने आपण निरोगी राहण्यास या सहजीवी जीवाणूंची आपल्याला मदत होते.

लोणचे हे फक्त तोंडी लावण्यापुरते कमी प्रमाणातच खावे, हे अत्यंत महत्त्वाचे. आपली खाद्य संस्कृती, परंपरा, अन्नाचा मान राखा आणि निरोगी राहा.

# दीर्घकालीन तंदुरुस्तीसाठी योग अत्यावश्यक

## संजय भाटिया

माजी उपलोकायुक्त, महाराष्ट्र राज्य

मी दहा दिवसांच्या विपश्यना प्रशिक्षणाला अत्यंत गंभीराने सुरुवात केली. प्रशिक्षण पूर्ण करून परत आल्यानंतर मी दररोज सकाळी एक तास आणि संध्याकाळी एक तास नियमितपणे विपश्यना ध्यान करू लागलो. त्याच काळात माझी दिल्लीहून मुंबईला महाराष्ट्र राज्य वीज मंडळात सचिव म्हणून बदली झाली. त्या वेळी महाराष्ट्र राज्य वीज मंडळात एक लाखांहून अधिक कर्मचारी कार्यरत होते. इतक्या मोठ्या मनुष्यबळाचे व्यवस्थापन आणि अभियंत्यांच्या भरतीचे काम यामुळे मी अत्यंत व्यस्त होतो. मी सांताक्रुझ येथील गेस्ट हाऊसमध्ये राहत होतो आणि कार्यालय जवळच असल्याने प्रवासात वेळ वाया जात नव्हता.

मी असा विचार केला की, वीज मंडळातील अधिकारी-कर्मचाऱ्यांनाही दहा दिवसांच्या विपश्यनेचा लाभ मिळाल्या हवा. त्यामुळे महाराष्ट्र शासनाने ज्याप्रकारे कर्मचाऱ्यांना दहा दिवसांची विशेश रजा मंजूर केली होती, त्याच धर्तीवर आम्हीही ध्यानासाठी जाणाऱ्या कर्मचाऱ्यांना ती सुविधा उपलब्ध करून दिली. सांताक्रुझमधील रिकाम्या फ्लॅटपैकी एक फ्लॅट विपश्यना साधनेसाठी वापरण्याचा निर्णय घेतला. अशा प्रकारे आम्ही तेथे

विपश्यना साधनेचा एक गट सुरू केला. अशा प्रकारे दोन वर्षे माझा आध्यात्मिक प्रवास पुढे सुरू राहिला. या काळात विपश्यना ध्यानमुळे मला अनेक प्रकारचे लाभ झाले. तरीसुद्धा 'मृत्यूनंतर काय होते?' आणि 'मानवी जीवनाचा खरा उद्देश काय आहे?' या मूलभूत प्रश्नांची समाधानकारक उत्तरे मला मिळाली नव्हती. माझी एकाग्रता इतर मार्गांनी वाढवण्याचा निर्णय मी घेतला, जेणेकरून या ध्यानपद्धतीचा संपूर्ण लाभ मला घेता येईल.

त्याच सुमारास बाबा रामदेव हे भारतातील योगाचे प्रमुख प्रतीक म्हणून उदयास येत होते आणि योगाचा प्रसार मोठ्या प्रमाणावर सुरू झाला होता. त्यामुळे मी गंभीरपणे योगाभ्यास सुरू करण्याचा निर्णय घेतला. माझी पत्नी अनुराधाही या प्रवासात माझ्यासोबत सहभागी झाली. आम्ही एका योगगुरूची नियुक्ती केली. ते प्रत्येक दुसऱ्या दिवशी सकाळी आमच्या घरी येऊन आम्हाला योग शिकवत असत. काही काळातच योगाभ्यासाचे उत्कृष्ट परिणाम दिसू लागले. आमची शारीरिक तंदुरुस्ती, शरीराची लवचिकता आणि एकूण आरोग्य लक्षणीयरीत्या सुधारले. योगामुळे मला शारीरिक आणि मानसिकदृष्ट्या मोठा फायदा झाला. मात्र, माझ्या आध्यात्मिक शोधातील मूलभूत प्रश्नांची उत्तरे अजूनही मला मिळालेली नव्हती.

माझ्या दृष्टीने विपश्यना ही अत्यंत तर्कसंगत आणि प्रभावी ध्यानपद्धती होती. त्यामुळे मला असे वाटले की, दोष या पद्धतीत नसून माझ्यातच आहे. कदाचित विपश्यनेतील अधिक सखोल अनुभवासाठी आवश्यक असलेली एकाग्रतेची पातळी मी गाठू शकलो नव्हतो.



## 'आळशी' अधिकारी आजही तंदुरुस्त आणि ऊर्जावान...

या संदर्भात मला माझ्या आयएएस प्रशिक्षणातील एक अनुभव सांगायला वाटतो. सन १९८५ मध्ये मसुरी येथे आयएएस प्रशिक्षणादरम्यान आम्हाला सकाळच्या शारीरिक प्रशिक्षणासाठी क्रॉस-कंट्री धावणे किंवा योग यापैकी एक पर्याय निवडण्याची संधी देण्यात आली होती.

आम्ही सर्वजण तरुण आणि उत्साही असल्यामुळे बहुसंख्य प्रशिक्षणार्थींनी पीटीची निवड केली.

केवळ सुमारे दहा आयएएस अधिकारींनी योगाची निवड केली होती. त्या वेळी आम्ही योग निवडणाऱ्या त्या अधिकाऱ्यांना 'आळशी' समजत असू, कारण ते आमच्यासारखे जोमदार व्यायाम करत नव्हते.

परंतु आता, जवळपास चाळीस वर्षांनंतर, माझ्या अनुभवानुसार मी ठामपणे सांगू शकतो की, त्या दहा अधिकाऱ्यांनी नियमित योगाभ्यास सुरू ठेवला आणि आजही ते अत्यंत तंदुरुस्त व ऊर्जावान आहेत.

उलट, त्या काळात केवळ पीटी आणि धावण्यावर भर देणाऱ्या अनेक जणांना आता गुडघेदुखी, पाठदुखी तसेच शरीरातील कडकपणा यांसारख्या समस्या जाणवत आहेत. म्हणून माझा निष्कर्ष असा आहे की, दीर्घकालीन शारीरिक तंदुरुस्ती आणि आरोग्यासाठी योग अत्यावश्यक आहे.

इन्फोस्टोरी

## मृत्यू म्हणजे शेवट की नवे जीवन..?

जंगलातील सुकलेली पाने, कोसळलेले वृक्ष किंवा समुद्रातील मृत प्रवाळ पाहिल्यास विनाशाचे चित्र डोळ्यांसमोर येते. मात्र निसर्गात मृत्यू हा शेवट नसून नव्या जीवनाची सुरुवात असू शकते, असे वैज्ञानिक अभ्यासातून समोर आले आहे. संशोधकांच्या मते, या प्रजाती मृत्यूनंतरही आपल्या अवशेषांमधून परिसंस्थेवर प्रभाव टाकतात. जंगलातील पाने, फांद्या कुजून जमिनीचे पोषण करतात, तर रिकामे शिंपले सागरी जीवांचे निवासस्थान बनतात. हेच अवशेष पुनर्निर्मिती प्रक्रियेत अडथळा आणत राहतात.

### निसर्गाची 'स्मरणशक्ती' म्हणजे काय?

वैज्ञानिक या संपूर्ण प्रक्रियेला 'पारिस्थितिक स्मृती' असे म्हणतात. सोप्या भाषेत सांगायचे तर, एखाद्या जंगलात किंवा समुद्रात पूर्वी काय घडले होते, त्याचे ठसे तिथे राहतात. हे ठसेच पुढे त्या परिसंस्थेचे भवितव्य ठरवतात. म्हणूनच एखादे झाड पडले किंवा प्रवाळ नष्ट झाले, तरी त्याची कहाणी तिथेच संपत नाही.

### संशोधनपर अभ्यासात काय आढळले?

संशोधकांनी झाडे, गवत, शिंपले आणि प्रवाळ यांसारख्या 'आधारभूत प्रजाती'चा अभ्यास केला. या प्रजाती परिसंस्थेची रचना आणि अस्तित्त्व टिकवून ठेवण्यात महत्त्वाची भूमिका बजावतात. संशोधनात अभ्यासलेल्या दहा परिसंस्थांपैकी नऊ ठिकाणी मृत अवशेषांचा प्रभाव स्पष्टपणे दिसून आला. काही परिसंस्थांत हेच अवशेष पुनर्निर्मितीच्या प्रक्रियेला अडथळाही ठरू शकतात.

### मृत्यूमधूनच जन्मतो नवे पोषक घटक, नवी हिरवादी

फ्लोरिडातील मॅन्ग्रोव्ह जंगलांमध्ये वादळानंतर पडलेली पाने आणि फांद्या झाडांच्या मुळाभोवती साचतात. त्यातून मिळणाऱ्या पोषक घटकांमुळे नवीन रोपे झपाट्याने वाढतात. न्यू झीलंडमधील जंगलांमध्ये उभे असलेले मृत वृक्ष जमिनीतील आर्द्रता टिकवून ठेवतात. त्यामुळे नव्या वनस्पतींसाठी योग्य वातावरण तयार होते.

### घनदाट जंगलात काही ठिकाणी ठरतो अडथळा

प्युएर्तो रिकोतील काही घनदाट व गर्द जंगलांमध्ये वादळानंतर इतकी पाने आणि फांद्या साचतात की जमिनीवरील लहान रोपांपर्यंत झुपांपर्यंत सूर्यप्रकाश पोहोचत नाही. त्यामुळे नवीन झाडांची वाढ घटते. समुद्रातही असेच घडते. उष्णतेच्या लाटांमुळे प्रवाळ मेल्यानंतर त्यांच्या अवशेषांवर शेवाळ वाढते. हे शेवाळ नव्या प्रवाळांच्या वाढीस अडथळा ठरू शकते. याने अन्य सामुद्री जीवांवर प्रभाव पडते.

### जागतिक हवामान बदलामुळे जीवसृष्टी धोक्यात

हवामान बदलामुळे जगभरात वादळे, जंगलातील आगी आणि उष्णतेच्या लाटा वाढत आहेत. त्यामुळे मोठ्या प्रमाणात जीवसृष्टी नष्ट होण्याच्या घटना वाढू शकतात. अशा वेळी मृत जैविक अवशेष नैसर्गिक परिसंस्थांवर कसा प्रभाव टाकतात, हे समजून घेणे अधिक महत्त्वाचे ठरणार आहे. हे संशोधन म्हणून महत्त्वाचे ठरते आहे.

एआय अपडेट

## चिनी 'मिनी डीपसीक मोमेंट'ची जागत चर्चा

चीनच्या 'झेड डॉट एआय' या स्टार्टअपने विकसित केलेले जीएलएम-५.२ हे नवीन कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआय) मॉडेल चर्चेत आले आहे. कमी खर्चात उच्च कामगिरी देणारे हे मॉडेल 'मिनी डीपसीक मोमेंट' म्हणून ओळखले जात आहे.

### कमी खर्चात कोडिंग अन् एजंट टास्कची कामे

जीएलएम-५.२ मॉडेल कमी खर्चात कोडिंग आणि गुंतागुंतीची कामे (एजंट टास्क) पार पाडण्याच्या क्षमतेसाठी ओळखले जाते. काही तज्ज्ञांच्या मते, त्याची कामगिरी ओपनएआय, अँथ्रोपिक यांच्या प्रगत मॉडेलच्या अगदी जवळ पोहोचली आहे.

### डेव्हलपर समुदायात वाढती लोकप्रियता

'ओपन राउटर'सारख्या थर्ड पार्टी प्लॅटफॉर्मवर या मॉडेलचा वापर झपाट्याने वाढला असून काही वेळा ते अँथ्रोपिकच्या मॉडेलपेक्षा वरच्या क्रमांकावरही दिसत आहे. त्यामुळे जागतिक डेव्हलपर समुदायात याच्या कार्यपद्धती, रचनेविषयी उत्सुकता आहे.

### एआय स्पर्थेत चीनची मजबूत पकड

तज्ज्ञांच्या मते, OpenAI आणि Anthropic सारख्या कंपन्यांच्या महागड्या मॉडेलसला पर्याय म्हणून स्वस्त आणि सक्षम मॉडेलच्या मागणी वाढत आहे. त्यामुळे चीनची AI क्षेत्रातील उपस्थिती अधिक मजबूत होत असल्याचे संकेत मिळत आहेत.

### डेटा सुरक्षा आणि विश्वासाचा मुद्दा

अमेरिका आणि युरोपमधील अनेक कंपन्या डेटा सुरक्षा आणि राजकीय कारणांमुळे चीनी एआय मॉडेल स्विकारण्याबाबत सावध भूमिका घेत आहेत. विशेषतः बँकिंग आणि सायबरसुरक्षा क्षेत्रात अडथळे कायम आहेत. या कंपन्यांना ही चीनची घुसखोरी वाटते. अमेरिका, युरोपमध्ये याबाबत सतर्कता पाळली जात आहे.



हॉट-टॉपिक

# चाळिशीनंतरचा शांत संघर्ष, स्वतःला शोधण्याचा प्रवास

करिअर, कुटुंब आणि जबाबदाऱ्यांमध्ये स्थिरता आली, तरी अनेकांना मानसिक पोकळी, असुरक्षितता आणि उत्साह कमी झाल्याची भावना जाणवते. मात्र, हा टप्पा काही संकट नसतो, तर स्वतःला नव्याने ओळखण्याचा, आवडीनिवडीसोबत बदल स्वीकारण्याचा आणि नव्या उमेदीने आयुष्य जगण्याचा मार्ग देखील दाखवू शकतो.

### अनिकेत स्वराज

एचआर व्यावसायिक, विधिविज्ञ आणि पॉश प्रशिक्षक

**रा**त्री साडेअकराची वेळ. घरात सगळे झोपलेले. हॉलमध्ये फक्त मोबाइलच्या स्क्रीनचा उजेड. हात सतत सोशल मीडियावर स्क्रोल करत असतो; पण मन मात्र कुठेतरी हरवलेले असते.

"आता कामात पूर्वीसारखा उत्साह वाटत नाही..." "इतकी वर्षे धावलो, पण नेमकं मिळवलं काय?" "पुढची दहा वर्षे अशीच जाणार का?" चाळिशीनंतर अनेक कर्मचारी करिअरमध्ये स्थिर असतात; पण मनाने हरवलेले असतात. बाहेरून सर्व काही व्यवस्थित दिसत असते. स्थिर नोकरी, घर, गाडी, कुटुंब. पण आतून मात्र एक विचित्र पोकळी वाढत असते. यालाच अनेक जण "मिडलाइफ क्रायसिस" म्हणतात. प्रत्यक्षात हा केवळ संकटाचा टप्पा नसतो; ती स्वतःकडे नव्याने पाहण्याची वेळ असते.

४३ वर्षीय मिलिंद एका बहुराष्ट्रीय कंपनीत वरिष्ठ पदावर काम करतो. पगार चांगला, घर व्यवस्थित, मुलांचे शिक्षण सुरू. पण अलीकडे अप्रायजल दरम्यान त्याला प्रथमच स्वतःची जागा असुरक्षित वाटली. त्याच्या टीममध्ये आलेले तरुण कर्मचारी नव्या तंत्रज्ञानात अधिक वेगाने काम करत होते. मीटिंगमध्ये तो शांत राहू लागला. ऑफिसमधून घरी आल्यावर तो थेट मोबाइलमध्ये हरवून जायचा. पत्नी बोलायची, मुलं काही विचारायची; पण त्याचे लक्ष कुठेच नसायचे. त्याला थकवा कामामुळे नव्हता; तर सतत मजबूत दिसण्याच्या प्रयत्नांमुळे होतं.

करिअरच्या सुरुवातीला प्रत्येक गोष्टीत धडपड असते. स्वतःला सिद्ध करायचे असते, पुढे जायचे असते, स्वप्ने मोठी असतात. पण १५-२० वर्षे सतत धावत राहिल्यानंतर आयुष्याचा वेग बदलतो. जबाबदाऱ्या वाढतात. मुलांचे शिक्षण, वृद्ध होत चाललेले आई-वडील, आरोग्याच्या तक्रारी, कर्जाचे हप्ते आणि त्याच वेळी करिअरमध्ये आलेली स्थिरता किंवा काही वेळा ठप्पपणा हे सगळे एकाच वेळी समोर उभे राहते.

या वयात अनेक जण घर आणि ऑफिसमधील

"शाक अडवॉर्ब" बनतात. ऑफिसमधील ताण घरी दाखवता येत नाही आणि घरातील चिंता ऑफिसमध्ये व्यक्त करता येत नाही. त्यामुळे मन हळूहळू थकू लागते. अनेकांना स्वतःच्या भावनांनाही शब्द देता येत नाहीत. घरात माणसं असतात; पण संवाद कमी होत जातो. काही जण शांत होतात, काही चिडचिडे होतात, तर काही जण स्वतःलाच कामात किंवा स्क्रीनमध्ये हरवून टाकतात.

मोबाइल, वेब सिरीज, सतत सोशल मीडिया किंवा निरर्थक व्यस्तता हे अनेकदा वास्तवापासून दूर जाण्याचे शांत मार्ग बनतात. कारण काही वेळा सत्याला सामोरे जाणे कठीण वाटते. "मी खरोखर आनंदी आहे का?" हा प्रश्न टाळण्यासाठी माणूस स्वतःलाच व्यस्त ठेवू लागतो. या काळात तुलना आपणूकी वेदनादायक ठरते. "तो माझ्यापेक्षा पुढे गेला..." "मी दुसरा निर्णय घेतला असता तर?" "आता नवीन सुरुवात करायला उशीर तर झाला नाही ना?"

कॉर्पोरेट क्षेत्रात अनेक कर्मचाऱ्यांना एका टप्प्यानंतर स्वतःचा रिलेव्हन्स कमी होत असल्याची भीती वाटू लागते. काहींना असे जाणवते की अनुभवापेक्षा

वेग आणि तंत्रज्ञानाला अधिक महत्त्व दिले जात आहे. एआय, ऑटोमेशन आणि बदलणारी कौशल्ये यामुळे असुरक्षितता वाढते. अनेक जण नोकरी करत असतात; पण मनाने आधीच थकलेले असतात. पण या टप्प्याकडे केवळ नकारात्मक नजरेने पाहण्याची गरज नाही. कारण आयुष्याचा हा काळ स्वतःला नव्याने समजून घेण्याची संधीही देतो. चाळिशीनंतर माणूस अधिक वास्तववादी होतो. लोकांना खूश करण्यापेक्षा स्वतःला समजून घेण्याची गरज त्याला जाणवू लागते. "मी नेमकं कोणासाठी धावत होतो?" हा प्रश्न जीवनाचा नवा अर्थ शोधायला भाग पाडतो.

या काळात काही गोष्टी जाणीवपूर्वक बदलणे आवश्यक असते. नवीन कौशल्ये शिकणे, आरोग्याकडे लक्ष देणे, अनुभवाचा उपयोग इतरांना मार्गदर्शनासाठी करणे, आणि सर्वात महत्त्वाचे म्हणजे स्वतःसाठी वेळ काढणे. करिअर ही आयुष्याची ओळख असू शकते; पण तीच संपूर्ण आयुष्य नसते, हे हळूहळू समजून घ्यायला शकते. चाळिशीनंतर आयुष्य संपत नाही; उलट पहिल्यांदाच माणूस स्वतःला खऱ्या अर्थाने भेटायला सुरुवात करतो. सतत धावत राहणे म्हणजेच यश नसते. काही वेळा थांबून स्वतःकडे पाहणेही तितकेच आवश्यक असते. कारण आयुष्याच्या या टप्प्यावर माणूस करिअरपेक्षा स्वतःला समजून घेण्यासाठी जगायला शिकत असतो.



एआय इमेज

वाचन वाटा

# जे न लिहिलं, तेच सर्वाधिक बोलतं...!

अर्नेस्ट हेमिंग्वेच्या 'आइसबर्ग' सिद्धांताचे हे आहेत तीन महत्त्वाचे आधार

**अर्नेस्ट हेमिंग्वे** तुम्हाला माहित असेलच. 'द ओल्ड मॅन अँड द सी' वाळा. त्याने लेखनाचा एक महत्त्वाचा सिद्धांत मांडला - 'आइसबर्ग थिअरी...' लेखकाने हिमनगासारखं लिहावं. वरकरणी साधं, सोपं; पण आतून सखोल. हिमनगाचा फक्त एक छोटसा भाग पाण्याबाहेर दिसतो, त्याचा खरा विस्तार पाण्याखाली दडलेला असतो. उत्तम लेखनाची ही तसेच असते. साहित्याचं नोबेल स्वीकारताना हेमिंग्वेने लिहिलेल्या भाषणात तो म्हणतो, 'लेखन हे नेहमी एकांतातच होतं. लेखकांच्या संघटना तुमचा एकाकीपणा कदाचित कमी करतील, पण तुमचं लिखाण सुधारण्यात त्या किंत्पत उपयोगी पडतील, याची मला शंका आहे. जसजशी लेखकाची सार्वजनिक प्रतिष्ठा वाढत जाते, तसतसा त्याच्या लिखाणाचा दर्जा कमी होत जातो. आधीच्या महान लेखकांमुळेच एखादा लेखक स्वतःच्या क्षमता वाढवण्यास प्रवृत्त होतो व तो अशा एका निर्जन प्रदेशात जातो, जिथे त्याला मदत करणारं कोणीही नसतं.' लेखकाला मदत करणारं कोणी नसतं, तेव्हा त्याच्या मदतीला येते ती त्याची 'आइसबर्ग थिअरी'. आज माहितीचा भडिमार वाढला आहे आणि वाचकांचा लक्ष केंद्रित ठेवण्याचा कालावधी कमी झाला आहे. त्यामुळे अनेकदा लेखन अति-स्पष्ट होतं. पण प्रत्येक गोष्ट चघळून सांगणं म्हणजे वाचकांच्या बुद्धीचा अपमानच. चांगलं लेखन वाचकाला विचार करायला भाग पाडतं. हेमिंग्वे म्हणायचा, 'कथेचा अर्थ वरकरणी स्पष्ट नसावा; तो जाणवला पाहिजे.'

**सखोल ज्ञान** लेखकाला आपल्या विषयाचं पूर्ण आकलन असलं, तर प्रत्येक गोष्ट शब्दांत सांगण्याची गरज राहत नाही. **उदाहरणार्थ:** इंदुने आपल्या मृत वडिलांच्या कपाटातून जुना शर्ट बाहेर काढला. तो जवळ घेत तिने त्याचा वास घेतला आणि पुन्हा घडी घालून जागेवर ठेवला. **इंदुचं आपल्या मृत वडिलांवर प्रेम आहे आणि आज ती त्यांना खूप मिस करते आहे. त्यांच्याबरोबरचा तिचा सदाचा ती विसरायला तयार नाही. लेखक हे सगळं स्पष्टपणे न सांगता तुम्हाला कळतं. ह्यात लेखकाचं कसब दिसतं. कमी व्यक्त होत सखोल परिणाम साधायचा.**

**अनावश्यक गोष्टी टाळणे** लेखनाचं संपादन म्हणजे फक्त शब्द कमी करणं नव्हे; तर अनावश्यक तपशील बाजूला करणं. असं केल्यावर दोन वाक्यांमधल्या पोकळीत वाचकाला विचार करण्याची जागा मिळते. तो स्वतः अर्थ शोधू लागतो. **उदाहरणार्थ:** सागर तो मेसेज वाचून खूप चिडला. त्याचा त्या मेसेजवर विश्वासच बसेना. त्याने आपला मोबाइल जोरात गादीवर फेकला आणि चिडून तो घराबाहेर पडला. आता हाच प्रसंग आइसबर्ग थिअरीनुसार पाहा - सागरने तो मेसेज दोनदा वाचला. त्यावर कुठलीच प्रतिक्रिया न देता त्याने फोन बंद केला आणि काहीही न बोलता घराचा दरवाजा आपटून तो बाहेर पडला. **या दुसऱ्या उदाहरणात 'सागर चिडला' हे लेखक सांगत नाही. त्याचं मौन आणि दरवाजा आपटून बाहेर पडणं त्याची मनःस्थिती सांगून जातं. अनेकदा शांतता आणि मौन खूप काही बोलून जातात.**

**वाचकांच्या बुद्धीला चालना देणे** हेमिंग्वे म्हणतो, माणसाचा मेंदू सतत अर्थ शोधत असतो. म्हणून लेखकाने प्रत्येक भावना समजावून सांगू नये; संकेत द्यावेत. म्हणून एखादा प्रसंग लिहून त्याकडे वस्तुनिष्ठपणे पाहा. पुढचा शोध वाचकाला घेऊ द्या. हेमिंग्वे तुम्ही काय विचार करावा, हे सांगत नाही; पण तो विचार करण्याची दिशा नक्की देतो. **लेखक म्हणून तुमचं एवढंच कर्तव्य असतं की तुम्ही निर्माण केलेल्या जगाच्या बाहेर वाचकाला जाऊ द्यायचं नाही. वरवर वाचणाऱ्यांसाठी ते सोपं असायला हवं आणि लक्षपूर्वक वाचणाऱ्यांना ते वाचून समाधानही मिळावं.**



एआय इमेज

लाइफ हॅक्स

## एजंट खरा आहे का? पॉलिसी घेण्यापूर्वी तपासा

**विमा** पॉलिसी घेणं म्हणजे फक्त प्रीमियम भरणं नाही, तर कुटुंबाच्या आर्थिक सुरक्षितेची जबाबदारी घेणं आहे. मात्र आजकाल बनावट विमा एजंट, खोटी आश्वासन आणि बनावट पॉलिसीच्या घटनाही वाढत आहेत. अनेक जण प्रीमियम भरतात, पण गरजेच्या वेळी समजतं की पॉलिसीच वैध नाही. म्हणूनच विमा पॉलिसी खरेदी करण्यापूर्वी एजंट अधिकृत आहे का, याची पडताळणी करा. फक्त दोन मिनिटांची पडताळणी तुम्हाला मोठ्या आर्थिक फसवणुकीपासून वाचवू शकते. ठरू शकतात.

### यामुळे काय प्रश्न सुटतो?

बनावट विमा एजंट ओळखता येतो. खोटी किंवा अवैध पॉलिसी घेण्याचा धोका कमी होतो. प्रीमियमची फसवणूक टाळता येते. योग्य आणि नोंदणीकृत एजंटकडूनच पॉलिसी घेता येते.

### काय करायचं?

विमा पॉलिसी घेण्यापूर्वी एजंटचा परवाना क्रमांक (Licence Number / URN) मागा आणि तो विमा नियामकाच्या नोंदीत तपासा.



एआय इमेज

### कसे कराल?

- १ एजंटचा परवाना क्रमांक मागा. प्रत्येक अधिकृत विमा एजंटकडे वैध परवाना क्रमांक असतो.
- २ IRDAI यांच्या Agent Locator वर पडताळणी करा. एजंटचा परवाना क्रमांक टाकून तो अधिकृत आहे का ते तपासून घ्या. हे पाहणे महत्त्वाचे आहे.
- ३ एजंट कोणत्या विमा कंपनीशी संलग्न आहे, तो ज्या कंपनीची पॉलिसी विकत आहे, त्या कंपनीचा अधिकृत प्रतिनिधी आहे का खात्री करा.
- ४ प्रीमियम फक्त अधिकृत माध्यमातून भरा. रोख रक्कम किंवा वैयक्तिक खात्यावर पैसे पाठवू नका. नेहमी विमा कंपनीची अधिकृत पॅमेंट पद्धतीच वापरा. ती सुरक्षित असते.
- ५ पॉलिसी मिळाल्यानंतर तुमचे नाव, प्रीमियम, विमा रक्कम व इतर माहिती योग्य आहे का ते तपासा.

### महत्त्वाची सूचना

कोणताही एजंट अवास्तव परताव्याचं आश्वासन देत असेल, लगेच पैसे भरा असे सांगत असेल, वैयक्तिक खात्यात पैसे जमा करण्यास सांगत असेल, तर सावध राहा. फसवणूक असू शकते.

### फायदेशीर सूचना

प्रीमियम भरल्यानंतर अधिकृत पावती घ्या. पॉलिसी दस्तऐवज संकेतस्थळावर किंवा ग्राहक केंद्रावरून पडताळून पाहा.



अयोध्या का मामला देश के बड़े धार्मिक स्थलों में चढ़ावे की चोरी की लंबी शृंखला की नई कड़ी है। तिरुपति, शिरडी, सिद्धिविनायक और जगन्नाथ पुरी, सभी प्रमुख मंदिर इस संकट से गुजर चुके हैं। पिछले दिनों समाजवादी पार्टी के नेता पवन पांडेय ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में दावा किया था कि अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावे से पांच से साढ़े सात करोड़ रुपए की चोरी हुई है। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने आरोप से इनकार किया,

लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। मंदिर के भीतर के कर्मचारियों की बदली हुई जिंदगी की खबरें सोशल मीडिया पर छाई हुई थीं। एक चालक के पास 50 करोड़ रुपए की संपत्ति, एक कार मिस्री का करोड़ों का मकान, एक कर्मचारी की जेब से अमेरिकी डालर। लेकिन अभी ये सभी साबित होने बाकी हैं। इसके बाद एसआइटी बनी, गिरफ्तारियां हुईं। मंदिरों की हंडियों में चोरी पर सरोकार की पड़ताल

देश के कई मंदिरों में श्रद्धालुओं के जरिए आता है करोड़ों रुपए का चढ़ावा कमजोर निगरानी तंत्र से भ्रष्टाचारियों की भेंट चढ़ जाती है आस्था की पूंजी

# हंडी में लागा चोर

ते 17 जून को ट्रस्ट ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से चढ़ावा चोरी मामले में एसआइटी जांच का अनुरोध किया। राज्य सरकार ने तीन सदस्यीय एसआइटी बनाई। इसमें हैं- लखनऊ के मंडलायुक्त आइएएस विजय विश्वास पंत, आइजी किरण एस और वित्त विभाग के विशेष सचिव नील रतन। सात पेन ड्राइव में सबूत जमा हुए। 150 संदिग्धों के नाम सामने आए। आठ गिरफ्तारियां हुईं। दो करोड़ रुपए की वसूली हुई। एसआइटी को जांच के लिए और 15 दिन मिले। प्रारंभिक अनुमान यह है कि यह घोटाला 200 करोड़ रुपए से अधिक का हो सकता है। सीसीटीवी से पता चला कि आठ आरोपियों में से पांच चढ़ावे की रकम को हटा और छुपा रहे थे।

14 हजार तनखाह, 50 करोड़ की संपत्ति!

मंदिर में चढ़ावा गिने का काम 50 कर्मचारियों का था। तीन श्रेणियों में- 24 नकद काउंटर (प्राइवेट एजेंसी से, 14,500 रुपए मासिक), 12 ट्रस्ट कर्मचारी (पर्यवेक्षण) और 14 बैंक लेखा परीक्षण टीम (एसबीआइ स्टाफ टीसीएस)। जांच में जो नाम सबसे पहले उभरे, वे चौंकाने वाले हैं।

चंपत राय के ड्राइवर टिन्नु यादव पर 50 करोड़ रुपए की संपत्ति के दावे हुए, लेकिन एसआइटी जांच में अब तक मात्र एक लाख रुपए बरामद हुए। योग केंद्र चलाने वाले अविनाश शुक्ला अब सबसे प्रमुख जांच के घेरे में हैं। 24 घंटे रिपोर्ट पर है। एक कर्मचारी की जेब से अमेरिकी डालर निकले। ये सब वे लोग हैं जो मंदिर में चढ़ावा गिनते थे। इनका वेतन 14,000 से 20,000 रुपए मासिक था।

लेकिन देश में राम मंदिर अकेला नहीं है। तिरुपति में एक बाबू ने 20 साल में 100 करोड़ रुपए उड़ाए। सिद्धिविनायक के न्यासियों ने सात सितारा होटल में बैठक की। यह केवल चोरी का मामला नहीं, यह उस व्यवस्था की कहानी है जहां आस्था सबसे बड़ी पूंजी है और नियंत्रण सबसे बड़ी कमजोरी।

रमाशंकर यादव उर्फ टिन्नु ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय का ड्राइवर था और दानपात्र को भूतल तक पहुंचाने की जिम्मेदारी संभालता था। सोशल मीडिया पर दावे हुए थे कि उसके पास 50 करोड़ रुपए की संपत्ति है, लेकिन एसआइटी को अब तक की जांच में यह साबित नहीं हुआ। टिन्नु के पास से अब तक मात्र एक लाख रुपए नकद ही बरामद हुए हैं। उसका भतीजा मनोप यादव नकदी गणना टीम का सदस्य था, उसके घर से 36 लाख रुपए नकद मिले। अविनाश शुक्ला इस समय जांच के सबसे प्रमुख घेरे में हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार अविनाश को 24 घंटे की पुलिस रिमांड पर लिया गया। उसके योग केंद्र से रामराज्य कोष नाम का दानपात्र मिला, जिस पर एक क्यूआर कोड लगा था, यानी भक्तों का पैसा सीधे उसके खाते में जाता था। उसके पास से 20 लाख 39 हजार नकद रुपए और 1,121 अमेरिकी डालर बरामद हुए।

जांचकर्ताओं को उनसे धन के लेन-देन का पूरा नेटवर्क और अन्य संप्लान लोगों की जानकारी मिलने की उम्मीद है। करुणेश पांडे के पास भी दानपात्र से गणना कक्ष तक रकम पहुंचाने की जिम्मेदारी। इनके पास से 18.07 लाख रुपए बरामद हुए। अनुकल्प मिश्रा के पास 16.82 लाख रुपए, लबकुश मिश्रा के पास 14.25 लाख रुपए और रमाशंकर मिश्रा के पास 7.32 लाख रुपए मिले।

जिसने बजाई सतर्क हो जाने की सीटी

ट्रस्ट के पूर्व मुख्य लेखा अधिकारी महापाल सिंह ने दावा किया कि यह सिलसिला साल 2020-21 से चल रहा है। नकद काउंटर पर जानबूझकर वाउचर में कुछ लाख कम दर्ज करते थे। सोने-चांदी के दस बक्से बिना प्रविष्टि



के ले जाए गए। जब उन्होंने चंपत राय और गोपाल राय से शिकायत की तो अगले दिन उनकी छुट्टी कर दी गई और सात-आठ महीने की सीसीटीवी फुटेज गायब कर दी गई।

चंपत राय : तीन घंटे की पूछाछ, जवाब नहीं

एक रपट के अनुसार, ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय से एसआइटी ने करीब तीन घंटे तक कड़े सवाल पूछे। सवाल थे : इतनी उच्च और अत्याधुनिक सुरक्षा के बावजूद दानपेटि से चोरी कैसे हुई? चढ़ावे की योजना निगरानी कौन करता था? क्या पहले भी शिकायतें मिली थीं? चंपत राय ने कहा -जैसे ही गड़बड़ी का पता चला, उन्होंने एफआइआर कराई। लेकिन कुछ रिपोर्ट से पता चलता है कि 27 मई को ही मामला ट्रस्ट और पुलिस के संज्ञान में था और पूरे दस दिन तक कुछ नहीं हुआ।

देश में कोई भी प्रमुख मंदिर विवादों से अछूता नहीं रहा है। तिरुपति में कर्मचारियों और स्वयंसेवकों से जुड़ी चोरी की घटनाओं के बाद वर्षों से प्रवेश नियंत्रण, सतर्कता और निगरानी को सख्त किया गया है। जगन्नाथ पुरी में, रत्न भंडार विवाद मंदिर की कीमती वस्तुओं की अभिरक्षा और सूची को लेकर केंद्रित था, जिसके परिणामस्वरूप अंततः न्यायालय द्वारा निर्देशित जांच और नई सूचियां तैयार की गईं।

काशी विश्वनाथ में, दान को पुजारियों को सीधे देने के बजाय आधिकारिक चैनलों के माध्यम से भेजने पर अधिक ध्यान केंद्रित किया गया है, जबकि सिद्धिविनायक को समय-समय पर शासन और वित्तीय प्रबंधन को लेकर जांच का सामना करना पड़ा है।

राम मंदिर से जुड़े आरोपों की जांच अभी जारी है और किसी नतीजे पर नहीं पहुंचा जा सका है। लेकिन भारत के पुराने मंदिरों के अनुभव से पता चलता है कि संस्थागत सुरक्षा उपाय रातोंरात नहीं बनते। आज जो कई प्रणालियां सामान्य लगती हैं, निगरानी के कई स्तर, निर्धारित प्रक्रियाएं, स्वतंत्र सत्यापन और

## चोरी का खेल कैसे होता है!

राम मंदिर मामले ने एक विशेष तरीका उजागर किया जो कई मंदिरों में काम करता है।

पहला तरीका- वाउचर में

हेराफेरी : जितनी राशि गिनी जाती है, उससे कुछ लाख कम वाउचर में दर्ज किए जाते हैं। यह फर्क हर दिन छोटा होता है, लेकिन वर्षों में करोड़ों बन जाता है।

दूसरा तरीका- सोने-चांदी की चोरी : गहनों और सिक्कों को बिना प्रविष्टि के बाहर कर दिया

जाता है। तिरुपति में रवि कुमार ने यही किया। गहने सूचीबद्ध ही नहीं किए। राम मंदिर में केडी तिवारी पर यही आरोप है।

तीसरा तरीका- सीसीटीवी से खिलवाड़ : राम मंदिर में 7-8 महीने की फुटेज गायब की गई।

चौथा तरीका- नकदी नैन से बैंक तक : रास्ते में हेराफेरी। एसआइटी ने कैश नैन से लेकर बैंक लाकर तक की पूरी प्रक्रिया के दस्तावेज जांच किए।

वैधानिक जवाबदेही, उन्हें पहले के विवादों में उजागर हुई कमियों के बाद ही मजबूत किया गया था।

तिरुपति बालाजी : 20 साल, 100 करोड़ रुपए, एक बाबू

आंध्र प्रदेश के तिरुपति बालाजी मंदिर में एक निचले स्तर के बाबू रवि कुमार ने 20 वर्षों में 13 हंडियों से 100 करोड़ रुपए से अधिक की चोरी की। परकमानी कार्टोटिंग हाल में बैठकर वह धीरे-धीरे नकद को 'रियल एस्टेट' में लगाता गया। आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने लोक अदालत के पुराने समझौते को रद्द कर सीआइटी को नई जांच का आदेश दिया। मंदिर प्रबंधन तिरुमला

तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) को 20 साल तक कुछ पता नहीं चला। यहां प्रतिदिन औसतन 6-7 करोड़ रुपए का चढ़ावा आता है। सालाना 2,200 करोड़ रुपए से अधिक। मंदिर के पास 14,000 करोड़ रुपए से अधिक का स्वर्ण भंडार है। इसकी निगरानी में एक साधारण बाबू ने दो दशक तक संधमारी की। यह व्यवस्था की विफलता का उदाहरण है।

सिद्धिविनायक : सात सितारा होटल, न्यासियों की मौज

मुंबई के सिद्धिविनायक मंदिर में महाराष्ट्र सरकार 1981 से ट्रस्टी नियुक्त करती है। हिंदू जनजागृति समिति ने आरटीआइ से पता लगाया कि ट्रस्ट ने भक्तों के दान से ग्रैंड सेंट्रल शेरटन मुंबई जो कि एक सात सितारा होटल है, में 'इंटरनेशनल टॉपल समिट' आयोजित की। करोड़ों रुपए मंत्रियों की कंपनियों में लगाए गए। बांबे हाईकोर्ट ने जांच समिति बिठाई। सिद्धिविनायक मंदिर में प्रतिवर्ष 100-125 करोड़ रुपए का चढ़ावा आता है।

जगन्नाथ पुरी : रत्न भंडार का रहस्य

ओड़ीशा के जगन्नाथ पुरी मंदिर का रत्न भंडार, जहां सोने-चांदी के गहने और बहुमूल्य वस्तुएं सुरक्षित रखी जाती हैं, दशकों से विवाद का केंद्र रहा है। यह कक्ष 1985 के बाद लंबे समय तक नहीं खुला था। 2024 में ओड़ीशा सरकार ने रत्न भंडार की जांच कर फिर से 'कैटलाग' करवाया। इसमें यह भी पता लगाने की कोशिश हुई कि पिछले दशकों में वास्तव में क्या-क्या था और अब क्या बचा है। हालांकि रिपोर्ट में कोई बड़ी चोरी की पुष्टि नहीं हुई।

वैष्णो देवी माडल : जब कायापलट हुआ

भारत में एक मंदिर ऐसा भी है जो बेहतर प्रबंधन का उदाहरण है। यह है वैष्णो देवी। साल 1988 में जम्मू-कश्मीर के तत्कालीन राज्यपाल जगमोहन ने एक कानून के जरिए वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड की स्थापना की और मंदिर की व्यवस्था अपने हाथ में ली। श्राइन बोर्ड ने एक मेडिकल कालेज भी स्थापित किया। तब से कोई बड़ा वित्तीय घोटाला नहीं हुआ। तिरुमला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) माडल भी उल्लेखनीय है। यहां चढ़ावे से दिल्ली में श्री वेंकटेश्वर कालेज, इंजीनियरिंग, मेडिकल कालेज बने। मंदिर ने सरकार को धन उधार दिया। यह आस्था से विकास का माडल है। लेकिन इसी टीटीडी में रवि कुमार जैसा बाबू 20 साल तक चोरी करता रहा।

क्या हो समाधान : विशेषज्ञों की राय

वरिष्ठ कानून विशेषज्ञों की राय के अनुसार, मंदिर प्रबंधन सुधार के लिए कुछ बिंदु स्पष्ट हैं। पहला-पेशेवर सौंझों : राम मंदिर ट्रस्ट में भी टीटीडी की तर्ज पर एक पेशेवर मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त होना चाहिए। दूसरा-तकनीकी नियंत्रण : चढ़ावा गिनती में एआइ-सक्षम कैमरे, डिजिटल वाउचर जो तत्काल ट्रस्ट और बैंक दोनों को जाता हो। तीसरा- पारदर्शी लेखा : वार्षिक कैग आडिट और आनलाइन सार्वजनिक वित्तीय रिपोर्ट। चौथा-बिना जेब वाले कपड़े: गिनती करने वाले कर्मचारी ऐसे कपड़े पहनें, जिनमें जेब न हो-यह तिरुपति में बहस का विषय रहा है।

सिर्फ धन नहीं आस्था की भी होती है चोरी

भारत के मंदिरों में प्रतिवर्ष हजारों करोड़ रुपए का चढ़ावा आता है। अकेले तिरुपति में 2,200 करोड़ रुपए, शिरडी में 600 करोड़ रुपए, सिद्धिविनायक में 125 करोड़ रुपए। यह धन भक्तों की आस्था का प्रतिनिधित्व करता है। जब इस आस्था की रक्षा करने वाली व्यवस्था ही खोखली हो, तो चोरी केवल धन की नहीं, विश्वास की भी होती है। राम मंदिर में जो हुआ, वह अधिक पीड़ादायक है क्योंकि यह मंदिर महज एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि सदियों के संघर्ष और बलिदान का प्रतीक है।

-प्रस्तुति : संजय शर्मा

## राम मंदिर : अब तक रही है विश्वास पर आधारित व्यवस्था

जनसत्ता सरोकार

अयोध्या स्थित राम मंदिर एकमात्र ऐसा मंदिर नहीं है जहां बड़ी मात्रा में चढ़ावा स्वीकार किया जाता है। देश के बड़े मंदिरों में हर दिन, हजारों श्रद्धालु चुपचाप नोट मोड़कर मंदिर की हंडी में डालते हैं, यह मानते हुए कि चढ़ावा देवता तक पहुंच गया है। इसके बाद एक सुनियोजित प्रक्रिया चलती है जिसमें अधिकृत कर्मचारी, गणना कक्ष, बैंक अधिकारी, लेखा परीक्षक और निगरानी कैमरे शामिल होते हैं। एक ऐसी प्रणाली जो तीर्थयात्रियों से काफी हद तक छिपी रहती है।

अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावे की चोरी के हालिया आरोपों ने उस छुपी हुई दुनिया को सार्वजनिक कर दिया है। लेकिन अयोध्या देश का एकमात्र ऐसा मंदिर नहीं है जहां भारी मात्रा में दान आता है। तिरुपति, जगन्नाथ पुरी, वैष्णो देवी, सिद्धिविनायक और काशी विश्वनाथ जैसे मंदिरों में हर साल सैकड़ों करोड़ रुपए का दान आता है। साथ ही सोना, चांदी और आभूषण भी आते हैं।

हंडी से बैंक तक

बड़े मंदिरों में हंडियों में रखे गए चढ़ावे को अधिकृत कर्मचारी उठाते हैं। गिनती केंद्रों में ले जाते हैं, जहां उन्हें नकद, सिक्कों और कीमती वस्तुओं में अलग-अलग किया

जाता है। उनकी गिनती की जाती है और रिकार्ड किया जाता है। फिर उन्हें निर्धारित बैंक खातों में जमा किया जाता है। पूरी प्रक्रिया सीसीटीवी की निगरानी में होती है।

मंदिरों में अंतर दान की प्रक्रिया में नहीं, बल्कि इसे नियंत्रित करने वाली संस्थाओं में होता है। प्रत्येक चरण की निगरानी कौन करता है, दान संभालने वाले लोगों को कौन नियुक्त करता है, और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए कौन से कानूनी और प्रशासनिक सुरक्षा उपाय मौजूद हैं।

अयोध्या के राम मंदिर में, लगभग 35 हंडियों से प्राप्त दान को ट्रस्ट के अधिकारियों और भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के प्रतिनिधि सहित अधिकृत कर्मियों द्वारा खोला जाता है और तीर्थयात्री सुविधा केंद्र के भीतर एक गणना कक्ष में ले जाया जाता है।

वहां, एसबीआई द्वारा बाहर से नियुक्त कर्मचारी और ट्रस्ट के कर्मचारी सेवानिवृत्त बैंकर सुभाष श्रीवास्तव की देखरेख में नकदी और आभूषणों की गिनती करते हैं, जबकि दान प्रक्रिया की समग्र जिम्मेदारी ट्रस्ट के सदस्य अनिल मिश्रा की होती है। सत्यापन के बाद, एकत्रित राशि ट्रस्ट के एसबीआई खाते में जमा कर दी जाती है।

तिरुपति : व्यापक ढांचा

विश्व में कुछ ही धार्मिक संस्थान तिरुमला की तरह बड़े पैमाने पर दान प्रक्रिया करते हैं, और इसकी प्रसिद्ध परकमानी प्रणाली इसी के अनुरूप विकसित हुई है। तिरुमला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) के स्थायी वित्त कर्मचारी, राष्ट्रीयकृत बैंकों के प्रतिनिधि और सावधानीपूर्वक

जांचे-परखे स्वयंसेवक। जिनमें अधिकतर सेवारत या सेवानिवृत्त सरकारी और बैंक कर्मचारी होते हैं। मंदिर के सतर्कता विभाग द्वारा निगरानी किए जाने वाले व्यापक सीसीटीवी नेटवर्क के तहत दान प्रक्रिया करने के लिए एक साथ काम करते हैं।

मंदिर में बिना जेब वाले कपड़े पहने कर्मचारियों की मतगणना कक्ष में प्रवेश करने और बाहर निकलने से पहले तलाशी ली जाती है। नकदी की आवाजाही बखरबंद वाहनों द्वारा सुरक्षाकर्मियों की निगरानी में की जाती है, जबकि प्रक्रिया के विभिन्न चरणों में वित्त अधिकारियों, सतर्कता कर्मचारियों, बैंक प्रतिनिधियों और स्वयंसेवकों की पहुंच अलग-अलग होती है।

जगन्नाथ पुरी : प्रक्रिया को कानून में शामिल किया गया

पुरी में निर्धारित प्रक्रिया पर जोर दिया जाता है। मंदिर प्रशासक या किसी अधिकृत राजपत्रित अधिकारी की देखरेख में हंडी खोली जाती है, जबकि प्रबंध समिति का एक सदस्य स्वतंत्र गवाह के रूप में कार्य करता है। प्रत्येक दान पेट्टी को खोलने से पहले और बाद में सील कर दिया जाता है। निर्धारित वैधानिक प्रपत्रों में प्रविष्टियां की जाती हैं। सीसीटीवी द्वारा दान के प्रबंधन की निगरानी की जाती है। नामित लेखा कर्मचारी बैंक खातों में जमा करने से पहले नकदी और मूल्यवान वस्तुओं के लिए वैधानिक पंजीकृत रखते हैं। मंदिर ने भुगतान गेटवे और ओड़ीशा की डिजिटल दान पेट्टी पहल के माध्यम से आधिकारिक दान चैनलों का भी विस्तार किया है।

वैष्णो देवी : कारपोरेट शैली का प्रशासनिक माडल

वैष्णो देवी मंदिर में दान प्रबंधन का स्वरूप मंदिर की सुनियोजित व्यवस्था के अनुरूप है। दान पेट्टियों को व्यक्तिगत न्यासियों या धार्मिक पदाधिकारियों के बजाय लेखा अधिकारियों, क्षेत्र प्रबंधकों और सुरक्षाकर्मियों से बनी समितियों द्वारा खोला जाता है। वित्त, सुरक्षा और संचालन संबंधी कार्य मंदिर बोर्ड के अधीन कार्यरत विशेष प्रशासनिक विभागों द्वारा संभाले जाते हैं। तीर्थस्थल के पहाड़ी इलाके को देखते हुए, बोर्ड मूल्यवान वस्तुओं को सुरक्षित रूप से स्थानांतरित करने के लिए बैटरी से चलने वाले वाहनों सहित विशेष परिवहन प्रणालियों का उपयोग करता है और जहां आवश्यक हो, हेलीकॉप्टर सेवाओं का भी उपयोग करता है।

सिद्धिविनायक : गणना में चूक

मुंबई के सिद्धिविनायक मंदिर में स्वतंत्र निगरानी गणना स्थल से ही शुरू हो जाती है। कोषाध्यक्ष पवन त्रिपाठी के अनुसार, मुख्य निधि प्रत्येक गुरुवार को एक कार्यकारी अधिकारी, एक न्यासी, एक बैंक प्रतिनिधि और एक लेखा परीक्षक की उपस्थिति में सीसीटीवी निगरानी में खोली जाती है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि कोई स्वतंत्र हितधारक मतगणना प्रक्रिया के प्रत्येक चरण को देख सके। नकदी की गिनती की जाती है, बहीखातों में दर्ज की जाती है और निर्दिष्ट बैंक खातों में जमा करने के लिए ले जाई जाती है, जबकि भक्तों को आधिकारिक बैंकिंग और डिजिटल दान चैनलों तक भी पहुंच प्राप्त होती है।

काशी विश्वनाथ : सरकार प्रक्रिया के भीतर है

काशी विश्वनाथ मंदिर में, जिला प्रशासन जवाबदेही शृंखला का हिस्सा है। मंदिर की 56 दान पेट्टियों को एक उपविभागीय मजिस्ट्रेट की देखरेख में खोला जाता है, जबकि गिनती बैंक अधिकारियों और एक सेवानिवृत्त राजपत्रित अधिकारी की उपस्थिति में होती है। प्रत्येक लेनदेन के लिए जमा रसीदें तैयार की जाती हैं ताकि एक आडिट ट्रेल बनाया जा सके, जबकि आभूषणों का मूल्यांकन सरकार द्वारा अनुमोदित मूल्यांककों द्वारा सुरक्षित अभिरक्षण में लेने से पहले किया जाता है।

मंदिरों के लिए राखा बनाते हैं विशेष कानून

भारत के ज्यादातर प्राचीन प्रमुख मंदिरों का प्रशासन राज्य सरकारों द्वारा बनाया गए विशेष कानूनों के तहत किया जाता है। टीटीडी आंध्र प्रदेश धर्मार्थ एवं हिंदू धार्मिक संस्था एवं बंदोबस्ती अधिनियम के अंतर्गत, जगन्नाथ मंदिर श्री जगन्नाथ मंदिर अधिनियम के अंतर्गत, श्री माता वैष्णो देवी मंदिर जम्मू और कश्मीर श्री माता वैष्णो देवी मंदिर अधिनियम के अंतर्गत, सिद्धिविनायक मंदिर महाराष्ट्र के एक कानून के अंतर्गत, जो इसके ट्रस्ट की नियंत्रित करता है, तथा काशी विश्वनाथ मंदिर का प्रशासन उत्तर प्रदेश श्री काशी विश्वनाथ मंदिर अधिनियम के अंतर्गत किया जाता है। ये कानून शासी निकायों का गठन करते हैं। प्रशासकों की शक्तियों को परिभाषित करते हैं। वित्तीय प्रक्रियाओं को निर्धारित करते हैं।

# विकास में संतुलन पर अनिश्चितता

वित्तीय वर्ष 2025-26 के परिणामों ने वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भी देश की आर्थिक क्षमता पर विश्वास को मजबूत किया है। मार्च 2026 को समाप्त आखिरी तिमाही में लगभग 7.8 फीसद की विकास दर दर्ज होना केवल एक सांख्यिकीय उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह उस आर्थिक लचीलेपन का प्रमाण है, जिसने अप्रत्याशित अमेरिकी शुल्क की अधिकतम दरों और फिर अमेरिका-इजराइल तथा ईरान युद्ध के बावजूद स्थिति को संभाले रखा। इन दोनों परिस्थितियों ने ऊर्जा संकट और वित्तीय निवेश संबंधी चिंताओं को बढ़ा दिया और यह स्थिति वर्तमान समय तक बनी हुई है। इन वैश्विक झटकों के बाद भी अगर भारतीय अर्थव्यवस्था ने अपने विकास की गति को बनाए रखा है, तो यह आर्थिक नीतियों में भावी संभावनाओं के मद्देनजर किए गए बदलावों का असर हो सकता है। जैसे-जैसे जीएसटी दरों को तर्कसंगत बनाना और विभिन्न विकसित देशों के साथ हुए मुक्त व्यापार समझौते। मगर इन सब प्रयासों के बीच कुछ ऐसे प्रश्न भी उभर रहे हैं, जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

## सकारात्मक तस्वीर

देश की सकारात्मक तस्वीर को और मजबूती भरती रिजर्व बैंक (आरबीआइ) की हाल की मौद्रिक नीति समीक्षा से भी मिली है। आरबीआइ ने एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाते हुए आर्थिक गतिविधियों को अनावश्यक दबाव से बचाने का प्रयास किया है। बढ़ती वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद रेपो दर को 5.25 फीसद पर स्थिर रखना ये संकेत देता है कि केंद्रीय बैंक केवल महंगाई को नहीं, बल्कि व्यक्ति के हाथ में वित्तीय तरलता की आवश्यकताओं को भी समान महत्त्व दे रहा है। विशेष रूप से ऐसे समय में जब पेट्रोल, डीजल और एलपीजी की कीमतों में लगातार वृद्धि से घरेलू बजट और व्यावसायिक लागतों पर दबाव बढ़ाया है। यह निर्णय अर्थव्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण सहारा माना जा सकता है।

आरबीआइ की ओर से विदेशी पूंजी को आकर्षित करने के उद्देश्य से सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश पर पूंजीगत लाभ कर से संबंधी सी फीसद

राहत का निर्णय भी नीतिगत दृष्टि से बहुत उल्लेखनीय माना जाना चाहिए। इससे अनुमानित पचास अरब डॉलर तक की विदेशी पूंजी भारतीय ऋण बाजार की ओर आकर्षित होगी। यह केवल निवेश का प्रवाह नहीं होगा, बल्कि रूपए की स्थिरता, विदेशी मुद्रा भंडार की मजबूती और दीर्घकालिक वित्तीय संतुलन की दिशा में भी एक अहम कदम साबित हो सकता है। आरबीआइ के ये कदम यकीनन आने वाले वर्षों में रूपए के अनुमानों के अनुसार, इसके सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 1.50 फीसद तक पहुंचने की संभावना बन गई है, जिसे बजट में सरकार ने 0.50 फीसद के आसपास माना था। इसी कारण सरकार ने देश के नागरिकों से तेल का कम उपयोग करने तथा सोने की खरीद से एक साल तक परहेज करने की सलाह दी। फिर एकाएक सोने पर सीमा शुल्क ग्यारह फीसद

## सवाल भी उभरे

देश की अर्थव्यवस्था को लेकर सकारात्मक आंकड़ों और नीतिगत प्रयासों के बीच कुछ ऐसे सवाल भी उभर रहे हैं, जिन पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। मसलन, फरवरी 2026 में पश्चिम एशिया में बढ़े तनाव और बाद में अमेरिका-इजराइल तथा ईरान के बीच संघर्ष ने वैश्विक ऊर्जा बाजारों को प्रभावित किया। युद्ध से पहले लगभग साठ डॉलर प्रति बैरल के आसपास रहने वाला कच्चा तेल बढ़कर लगभग 110 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गया। परिणामस्वरूप इसने देश का आयात खर्चा बढ़ा दिया और उससे चालू खाता घाटा भी बढ़ेगा ही। वर्तमान समय के अनुमानों के अनुसार, इन्होंने माना है कि 1.50 फीसद तक पहुंचने की संभावना बन गई है, जिसे बजट में सरकार ने 0.50 फीसद के आसपास माना था। इसी कारण सरकार ने देश के नागरिकों से तेल का कम उपयोग करने तथा सोने की खरीद से एक साल तक परहेज करने की सलाह दी। फिर एकाएक सोने पर सीमा शुल्क ग्यारह फीसद

## प्रसंगवश

### पीएस वोहरा

**अर्थव्यवस्था को लेकर सकारात्मक आंकड़ों के बीच कुछ ऐसे सवाल भी उभर रहे हैं, जिन पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है। अप्रैल, 2025 में लगभग 85 रूपए प्रति डॉलर के स्तर पर रहने वाली भारतीय मुद्रा एक वर्ष के भीतर करीब 96 रूपए प्रति डॉलर तक पहुंच गई है। भारतीय पूंजी बाजार से विदेशी निवेशकों की ओर से लगातार बढ़े पैमाने पर धन निकासी का सिलसिला जारी है।**

जा सकती है। यही कारण है कि मजबूत विकास दर के बावजूद भारत की गिनती पुनः विश्व की छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में की जाने लगी है। रूपए की कमजोरी को आरबीआइ ने भी स्वीकार किया है। इसी वजह से चालू वित्तीय वर्ष के लिए महंगाई का अनुमान 4.6 फीसद से बढ़ाकर पांच फीसद से अधिक कर दिया गया है, जबकि विकास दर का अनुमान 6.9 फीसद से घटाकर 6.6 फीसद कर दिया गया है।

## विदेशी पूंजी की निकासी

एक अन्य चिंता का विषय भारतीय पूंजी बाजार से विदेशी निवेशकों द्वारा लगातार बढ़े पैमाने पर धन निकासी को लेकर है। विशेष रूप से देश का सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र बहुत अधिक दबाव में दिखाई दे रहा है। इसका मुख्य कारण है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) आधारित वैश्विक

# उम्मीदों के बरक्स

करीब दस सालों बाद लंदन आई हूँ। यह लेख वहीं से आ रहा है आपके पास। यहां एअर इंडिया की उड़ान से आई थी और हैरान हुई देख कर कि कितने भारतीय विदेश में घूमने लग गए हैं। मेरी उड़ान में तकरीबन सारे यात्री अपने ही देशवासी थे और सबसे ज्यादा हैरान करने वाली बात यह थी कि इनमें एक बड़ा समूह गुजराती महिलाओं का था जो पारंपरिक घाघरा-दुपट्टे पहने हुए थीं और जिनको अंग्रेजी का एक शब्द नहीं मालूम था। बहुत अच्छा लगा इनको देखकर इसलिए कि जब ऐसे लोग विदेश का सफर करने लगेंगे, तो उनकी अपने राजनेताओं से अपेक्षाएं भी अधिक होने लगेंगी। वे चीजें मांगने लगेंगी देश के मतदाता जो अभी तक उनको मिली नहीं हैं किसी भी सरकार से।

माना कि नरेंद्र मोदी के राज में विकास के तौर पर बहुत कुछ हुआ है, लेकिन आम लोगों के जीवन में इसका असर कम रहा है इसलिए कि शिक्षा और स्वास्थ्य की संस्थाओं में कोई परिवर्तन नहीं आया है, बल्कि स्कूल, अस्पताल और रोजगार के अवसर और भी बंदतर हो गए हैं। संयोग नहीं है कि काकरोच जनता पार्टी का जो प्रदर्शन पिछले दो हफ्ते से चल रहा है जंतर मंतर पर, उनकी मांगें शिक्षा से जुड़ी हुई हैं। इस प्रदर्शन के बारे में आपको खबर कम ही मिली होगी, क्योंकि मीडिया ने जैसे इसको पूरी तरह अनदेखा कर दिया है, इससे ही जान जाइए आप कि सरकार को इस प्रदर्शन से तकलीफ हो रही है। हमारे तमाम बड़े राजनेता इस प्रदर्शन पर कुछ नहीं बोले हैं, क्योंकि बोले तो बोलें क्या और करें तो करें क्या। अब अगर शिक्षा मंत्री की नौकरी जाती है, तो ऐसा लगेगा कि नौजवानों के दबाव में ऐसा हुआ है। मगर यह अच्छा नहीं है कि देश के युवाओं की बात सुनी नहीं जा रही है।

लंदन उन विदेशी महानगरों में है जहां हर जगह आपको दिखेंगे नौजवान भारतीय काम करते हुए। यहां तक कि हवाईअड्डे पर जो पासपोर्ट जांच करते हैं, वे भी अब भारतीय हैं। कभी वह जमाना था जब अपने देशी भाई-बहन हवाईअड्डे पर सिर्फ सफाई कर्मचारी थे, लेकिन उनके बच्चे अब ऐसी नौकरियां कर रहे हैं

जिनके लिए शिक्षित होना और कंप्यूटर की जानकारी होना जरूरी है। मैंने जब एक दो लोगों से पूछा कि वे देश वापस क्यों नहीं जाना चाहते हैं, तो उनका जवाब यही था कि जरूर जाते अगर उनकी कमाई उतनी होती कि इज्जत से जी सकें। हम जानते हैं कि अभी तक ऐसा नहीं हुआ है अपने देश में।

आर्थिक शरणार्थी हैं ये लोग। अफसोस की बात यह है कि हमारे सबसे शिक्षित लोग भी आर्थिक शरणार्थी बनने पर मजबूर हैं। एआइ के



## वक्त की नब्ज

### तवलीन सिंह

**का** करोच जनता पार्टी का प्रदर्शन पिछले दो हफ्ते से चल रहा है जंतर मंतर पर। सरकार को इस प्रदर्शन से तकलीफ हो रही है। हमारे तमाम बड़े राजनेता इस प्रदर्शन पर कुछ नहीं बोले हैं, क्योंकि बोले तो बोलें क्या और करें तो करें क्या। अब अगर शिक्षा मंत्री की नौकरी जाती है, तो ऐसा लगेगा कि नौजवानों के दबाव में ऐसा हुआ है। मगर यह अच्छा नहीं है कि देश के युवाओं की बात सुनी नहीं जा रही है।

क्षेत्र में इतने भारतीय मूल के लोग मिलते हैं अमेरिका में कि भारतीयों के खिलाफ एक मुहिम-सी चलने लग गई है कैलिफोर्निया में। कोई राज की बात नहीं है कि अमेरिका की कई सबसे बड़ी कंपनियों को चलाने हैं भारतीय मूल के लोग। रहीं बात लंदन की, तो यहां बस गए हैं कई सबसे धनवान भारतीय। निवेश करते हैं भारत में, लेकिन वहां रहना नहीं पसंद करते हैं, क्योंकि जो सुविधाएं उनको लंदन में मिलती हैं, मुंबई और दिल्ली में नहीं मिलती हैं।

स्वच्छ सड़कें, सुंदर रिहाइशी इलाके और बड़े-बड़े पार्क जिनमें टहला जा सके बिना जहरीली वायु के और साफ पीने का पानी। ऊपर से ही मनोरंजन के कई साधन। फिलहाल लंदन में विंगलडन चल रहा है जिसको देखने आते हैं कई देशों से लोग हर साल। हमारे देश में आइपीएल के अलावा कोई बड़ा अंतरदेशीय टूर्नामेंट नहीं होता है और जिस व्यक्ति ने इसको

शुरू किया था, वह भी लंदन में रहता है जबसे उसको अपने देश के आला राजनेताओं ने देश से भगा दिया था। ललित मोदी ने हाल में कई पत्रकारों से बातें की हैं, जिसमें उन्होंने माना है कि उनकी जान को दारुद इब्राहिम से खतरा था, लेकिन यह भी माना है कि कुछ राजनेता थे जिनको उनसे तकलीफ थी और क्रिकेट प्रशासन के कई आला अधिकारियों को भी।

मैं कोई नई बात नहीं कर रही हूँ। हम सब जानते हैं कि हमने ऐसा देश बनाया है जिसमें आम नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाने में निवेश नहीं किया। हम यह भी जानते हैं कि दोष है हमारे शासकों का, जिन्होंने अपने परिवारों का जीवन बेहतर बनाने के लिए खूब मेहनत की है, लेकिन इस कोशिश में इतना व्यस्त रहे हैं कि उनको भूल गए जिनके वे सेवक कहलाते नहीं थकते हैं। हमारे स्कूलों और अस्पतालों का क्यों सुधार करें, जब जानते हैं ये लोग कि उनके बच्चे तो निजी सुविधाओं का ही इस्तेमाल करने वाले हैं? बरसात और गर्मी के मौसम में क्यों शहरों और महानगरों की बेकार सुविधाओं को दुरुस्त करें? जब जानते हैं कि वे खुद जाने वाले हैं लंदन और न्यूयार्क में गर्मी की छुट्टियां मनाने?

दोष है तो हमारे राजनेताओं और शासकों का सबसे अधिक, लेकिन यह भी मानना पड़ेगा कि कुछ दोष हमारा भी है कि हम इन सारी चीजों को देखते हुए भी विरोधी की आवाज नहीं उठाते हैं। हम मीडिया वालों की भी शर्मिंदगी से सिर झुकाना पड़ेगा इसलिए कि जब नौजवानों का प्रदर्शन चल रहा है पिछले दो हफ्ते से दिल्ली में, तब हम जानबूझ के उसके बारे में न लिख रहे हैं न टीवी पर चर्चा कर रहे हैं। काकरोच जनता पार्टी की खबरें लेनी हों, तो सोशल मीडिया पर जाना पड़ता है जहां दिखते हैं वे दुखी माता-पिता जिनके बच्चों ने नीट के पर्चों के बार-बार लीक होने से तंग आकर आत्महत्या कर ली है। इस सप्ताह अगर आपको मेरे लेख में ज्यादा कड़वाहट दिखती है, तो इसलिए कि जब किसी विदेशी महानगर में आती हूँ, तो मुझे अपने देश की बदहाली बहुत तकलीफ देती है।

भासी दुनिया के अत्यधिक इस्तेमाल से लोग अब अपने वास्तविक सामाजिक और पारिवारिक जीवन से दूर होने लगे हैं। इससे जहां अकेलापन और संवादात्मकता बढ़ती जा रही है, वहीं मूल सृजनात्मकता और भरोसे का संकट भी पैदा हो रहा है। यह केवल मानवीय मनोभावों के मोर्चे पर पिछड़ने का सवाल नहीं है, बल्कि स्क्रॉन के संसार में उपस्थिति दर्ज करवाने की सनक संबंधों में दरासे से लेकर हिसक बर्ताव और आपराधिक घटनाओं तक, हर पहलू से घातक सिद्ध हो रही है। 'रील' बनाने का जुनून अपनी ही नहीं, बल्कि सार्वजनिक स्थलों पर मौजूद अन्य लोगों के लिए भी अपुरक्षा और सहजता का कारण बन रहा है। गांवों से लेकर महानगरों तक आभासी दुनिया के जाल में फंसे लोगों की सोच और मनोभाव किस दिशा में जा रहे हैं, इस पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है।

पिछले दिनों हरियाणा के कैथल में एक घटना सामने आई। यहां दुल्हन जयमाला की रस्म के दौरान बहुत देर तक नृत्य करने और सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने में व्यस्त रही। बार-बार बुलाने के बाद भी दुल्हन जब मंच पर नहीं पहुंची, तो दूल्हा बिना शादी किए भारत लेकर लौट गया। देखने-सुनने में यह एक सहज घटना लगती है, पर वास्तव में यह सोशल मीडिया की लत की कड़वी हकीकत बताती है। हाल के वर्षों में ऐसी बहुत सी घटनाएं आभासी मंच पर जीवन के हर पल को परोसने के जुनून में सामाजिक-पारिवारिक संस्कारों से बढ़ती दूरी को दर्शाती हैं। सूखती संवेदनाओं के साथ ही 'रील' बनाने के मामले यहां तक कि जीवन छिन जाने और मुकदमेवाजी का कारण भी बन रहे हैं। कुछ समय पहले उत्तर प्रदेश में 'रील' बनाने से नाराज पति को छोड़कर एक महिला मायके चली गई। इस मामले का एक पक्ष यह रहा है कि पुलिस को दी गई शिकायत में महिला ने सपुत्राल वालों पर प्रताड़ित करने का आरोप लगाया। जांच में पता चला कि मामला सोशल मीडिया पर जरूरत से ज्यादा सक्रिय रहने के कारण उपजे आपसी मतभेद से जुड़ा था।

इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि गिनती के पलों में कुछ विशेष परोसने के फेर में व्यक्तिगत जीवन में कुछ भी व्यक्तिगत नहीं रहा है। वैवाहिक आयोजन भी अब सोशल मीडिया में प्रचार का साधन बन गए हैं। ऐसे में बहुत से दूल्हा-दुल्हन आभासी दुनिया के लिए सामग्री तैयार करने में व्यस्त रहते हैं और वास्तविक जीवन से जुड़े सगे-संबंधियों को भी नजरअंदाज कर देते हैं। तकनीक के फेर में फंसकर शादी के लम्हों को सहेजने से जुड़े पारंपरिक रीति-रिवाजों की असली रौनक और महत्त्व कम होते जा रहे हैं। विवाह के वीडियो के जरिए सोशल मीडिया में छा जाने का जुनून ऐसा है कि इसके लिए बाकायदा पहले से तैयारी की जाती है। दूल्हा-दुल्हन ही नहीं, बल्कि करीबी रिश्तेदार और मित्र भी ऐसे वीडियो की पहुंच और प्रभाव बढ़ाने के लिए आभासी दुनिया में नए चलन को लेकर सजग रहने लगे हैं।

इसके विपरीत पारंपरिक रीति-रिवाजों के तहत सार्थक संवाद के जरिए परिवारजनों से मिली छोटो-छोटी समझाझं दिखावे से परे नए रिश्ते को मन से अपनाने की राह दिखाती हैं। शादी में शामिल होने आए सगे-संबंधियों से मेल-मिलाप के लिए समय निकालना सामाजिक परिवेश से जोड़ता है। मगर आज के समय में 'रील' बनाने की व्यस्तता स्नेह-शुभकामनाएं देने पहुंचे लोगों की उपेक्षा का कारण बन रही है। यह समझना आवश्यक है कि विवाह समारोह में वरमाला हो या विवाह की रस्म, हर रिवाज के साथ

कंपनियों के तेजी से उभरने और निवेशकों की बदलती प्राथमिकताओं ने भारतीय प्रौद्योगिकी कंपनियों के मूल्यांकन पर बहुत असर डाला है। वर्तमान में भारत का निफ्टी आइटी सूचकांक बाईस फीसद से अधिक गिर चुका है। ये कमजोरी केवल बाजार का उतार-चढ़ाव नहीं, बल्कि एआइ के क्षेत्र में तकनीकी प्रतिस्पर्धा के बदलते वैश्विक परिदृश्य का संकेत भी है। एक अन्य महत्वपूर्ण संकेत देश के बैंकिंग क्षेत्र से सामने आया है। पांच करोड़ रूपए से अधिक की जमा, भारतीय बैंकिंग की कुल बैंक जमा का लगभग एक-तिहाई हिस्सा हो गई है, जबकि पहले से एक करोड़ रूपए से अधिक के जमा खातों का हिस्सा अभी पैंतालीस फीसद से भी अधिक है। निश्चित तौर पर ऐसा बैंकिंग में इन बड़ी जमा रकमों के लिए उच्च व्याज दरों के कारण हुआ है।

## निवेश बनाम बचत

आज बड़े जमाकर्ताओं के लिए बैंक जमा बहुत आकर्षक निवेश का विकल्प बन गया है। बैंक 7.5 से आठ फीसद तक का व्याज इन्हें प्रदान कर रहा है। इस कारण इन जमाकर्ताओं के लिए शेयर बाजार और म्यूचुअल फंड तुलनात्मक रूप से कम आकर्षक बन रहे हैं। ऐसे में सवाल है कि क्या मध्य वर्ग और निम्न मध्य वर्ग की बचत भी उतनी ही तेजी से बढ़ रही है? इसके अलावा, आर्थिक स्थिरता के हिसाब से बहुत महत्त्वपूर्ण और जिस पर बहुत कम चर्चा हो रही है, वह है ऋण-जीडीपी जीडीपी अनुपात को पचास फीसद तक लाने का सरकार का लक्ष्य अब पहले की तुलना में अधिक कठिन दिखाई देता है। इसलिए यह स्थिति स्पष्ट संकेत देती है कि आने वाले वर्षों में भारत के लिए केवल विकास दर बढ़ाना ही पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि रूपए की स्थिरता और विदेशी पूंजी निवेश के प्रवाह को विस्तार देना अधिक महत्त्वपूर्ण होगा।

# बिखरते रिश्ते

बहुत से भावनात्मक और सांस्कृतिक पक्ष भी जुड़े होते हैं। मनोवैज्ञानिक अध्ययन भी बताते हैं कि संवेदनाओं के धरातल पर पारंपरिक रीति-रिवाजों को निभाने से मन में सकारात्मक जुड़ाव की अनुभूति को बल मिलता है। इस सच्चाई को समझना जरूरी है कि सिर्फ चंद पलों को कैमरे में कैद कर लेने से उग्रभर के संबंध को मजबूती नहीं मिल पाती है। बिखरते वैवाहिक संबंधों के बड़ते आंकड़े इस हकीकत को सामने रखते हैं। फिर भी जमीनी जुड़ाव और परंपरागत शैली में होने वाली भारतीय शर्दियों पर 'रील' की आभासी दुनिया हावी होती नजर आती है। शादी समारोह में सब कुछ सहेजकर संसार को दिखाने का जाने कैसा जुनून है कि कोने-कोने की सजावट, दूल्हा-दुल्हन की पोशाक, गहने, भोजन और मेहमानों तक को इसमें शामिल किया जाता है।



## समाज

### मोनिका शर्मा

**य**ह चिंताजनक है कि इंटरनेट की असीमित दुनिया से जुड़े जोखिमों के बावजूद लोग अपनी व्यक्तिगत जानकारीयों भी आभासी दुनिया में साझा करने से गुरेज नहीं करते। अर्थहीन दिखावे के इस बोझ के नीचे दबकर असली जीवन का प्रेमपगमा साथ गुम होता जा रहा है। 'स्क्रॉन' में सब कुछ सहेजने के चलन में इंसानी मन ने कुछ सहेजना ही बंद कर दिया है। इसलिए वैवाहिक जीवन के द्वार पर दस्तक देते हुए 'रील' को आकर्षक और कलात्मक बनाने के बजाय भावी जीवन को सुंदर एवं स्नेहमयी बनाने की सोच जरूरी है। अपनी खुशियों को खुद ही परेशानियों के स्याह धरे में लाने वाले इस चलन पर गंभीरता से सोचने की जरूरत है। तकनीक से घिरे जीवन में यह आवश्यक हो गया है कि मधुर स्मृतियों का लेखा-जोखा आभासी मंच पर नहीं, बल्कि वास्तविक जीवन में मन के संदूक में संचित होना चाहिए। यह समझना आवश्यक नहीं है कि ऐसे भाव-चाव किसी वीडियो में जमेटने भर के लिए नहीं होते। बिखरते सामाजिक मूल्यों और रिश्तों में बढ़ती कड़वाहट के मौजूदा हालात में आवश्यक है कि रीति-रिवाज और आपसी मेलजोल एवं संवाद का पुराना भाव फिर लौटे, ताकि जीवन के खास अवसरों पर दिखावे की चकाचौंध के बजाय आपसी स्नेह और सामाजिक-पारिवारिक मेल का भाव नजर आए।

# मैदान में आमने-सामने

'ये' उत्तर प्रदेश का 'लंका कांड' है 'लंकापति' जाएगा... बड़े लोगों को बचाया जा रहा है, छोटे पकड़े जा रहे हैं... बड़ी मछलियां बाहर हैं, छोटी पकड़ी जा रही हैं... बड़ी मछली के ऊपर भी बड़े मगरमच्छ हैं, उन तक जांच की आंच कब पहुंचेगी! आठ लोगों पर प्राथमिकी दर्ज हुई है। विशेष जांच दल ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री को अंतरिम रिपोर्ट दे दी है। गिरफ्तार लोगों से पूछताछ जारी है। मंदिर ट्रस्ट के मुखिया चंपत राय से भी तीन घंटे पूछताछ की गई है। चंपत राय का कहना है कि उनका चंदा चोरी से कोई लंका-देना नहीं... उन्हें अपने ड्राइवर टिन्नु यादव से ऐसी उम्मीद नहीं थी! विपक्ष किसी तरह से संतुष्ट नहीं। एक विपक्षी का कहना है- सीबीआइ जांच करे, दूसरे का कहना है कि सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में उच्च स्तरीय जांच हो, तभी 'दूध का दूध, पानी का पानी' होगा! एक चैनल अपने 'स्टिंग' आडियो-वीडियो का झटका देता है, जिसमें एक चंदा चोर बताता है कि ठेके सारा सोना 'दान पात्र' में नहीं डाला गया। उसे अलग से एक कमरे में लिया गया। जब ट्रस्ट ने मांगा, तो नहीं दिया और बाद में भी नहीं दिया गया। वह चंपत राय को 'बड़े साहब' कहता है। एक बाबा ने कहा कि पैसे को देख कर इनका दिमाग खराब हो गया... जब जेल जाएंगे, तभी ठीक हो पाएंगे। जब कुछ चैनल बाबा और बाबा के बीच बहस करता है, तो ऐसे-ऐसे बाबा सामने आते हैं और आपस में ऐसी-पैसी 'तू-तू मैं-मैं' करते हैं कि एक-दूसरे को आर बाकी चर्चक भी अवाक रह जाते हैं।

'चढ़ावा चोरी' की खबरें अब हर चैनल के 'दैनिक फीचर' हैं, लेकिन स्टिंग में 'सोना चोरी' के अलावा कोई नई बात नहीं आई। एक चर्चक साफ कहते हैं कि चंपत राय जवाबदेह हैं और कि सुप्रीम कोर्ट क्यों चुप है? एक अन्य एंकर कहता है कि शक की सुई चंपत राय की ओर जाती ही है। भाजपा, संघ, हिंदुत्व या सनातन विचार हर रोज पिट रहा है। राम मंदिर की साख गिर रही है, लेकिन कहीं कोई 'आत्मालोचना' नहीं। इसी क्रम में एक दिन उत्तर प्रदेश में विपक्ष के नेता ने 'एक्स' पर श्रेय लिया कि प्रभु राम ने मुझे माध्यम बनाया... मेरी पोस्ट के बाद ही मामला सामने आया... फिर एक दिन इकसठ बुद्धिजीवी अचानक मुझ बदलते हैं और राममंदिर के चंदा-चोरी कांड द्वारा रक्षात्मक बना दिए गए सत्ता पक्ष को फिर आक्रमक होने का अवसर दे देते हैं। बुद्धिजीवियों का 'विरयानी प्रेम' उमड़ता है। वे कहने लगते हैं कि पाकिस्तान से बातचीत शुरू करें... राज्य सत्ता अलग है और जनता



## बाखबर

### सुधीश पचौरी

**ब**हनों में दो प्रकार के रामभक्त आमने सामने होते हैं। एक कहते हैं कि ये जो नए भक्त बन रहे हैं, छत्र भक्त हैं... मौसमी भक्त हैं...! नए भक्तों ने जवाब दिया कि आप लोगों की 'बगुला भक्ति' सारा देश देख रहा है। राम के नाम पर ट्रस्टियों ने लाखों गरीब भक्तों का दिया दान चुराया है। विपक्ष में बोलने वाले एक चर्चक ने कहा कि जो हमारे लोगों को मारते हैं, उनसे बातचीत कैसी! एक एंकर की लाइन रही कि यह 'अमन की आशा' की तरह का अमेरिकी खेल है!

फिर भी 'चंदा चोरी' की कहानी ही सबसे हिट कहानी रही। सुबह से शाम तक चैनलों में 'चंदा चोरी' की ताजा खबर देने की होड़-सी लगी रहती है। कोई 'चंदा चोरी कांड' को उत्तर प्रदेश के आगामी चुनावों से जोड़कर देखता है, तो कोई इस कांड पर 'आनलाइन सर्वे' करवाकर पक्ष-विपक्ष में 'आधा-आधा' करने लगता है। फिर एक दिन उत्तर प्रदेश के बड़े विपक्षी

अलग... 'लोगों का लोगों से' का संवाद होना चाहिए। जिस पर संघ के एक बड़े नेता भी यह कहकर इन बुद्धिजीवियों की मांग के समानतर 'टीप' जड़ देते हैं कि सुरक्षा की नीति जरूरी, लेकिन हमें दरवाजे खुले रखने चाहिए। जवाब में कई चर्चक बुद्धिजीवी कहते हैं कि जब तक उनकी 'गोली' है, तब तक 'बोली' नहीं हो सकती। एंकर कहिन कि जब-जब बात की है, पछताए हैं। विपक्ष में बोलने वाले एक चर्चक ने कहा कि जो हमारे लोगों को मारते हैं, उनसे बातचीत कैसी! एक एंकर की लाइन रही कि यह 'अमन की आशा' की तरह का अमेरिकी खेल है!

फिर भी 'चंदा चोरी' की कहानी ही सबसे हिट कहानी रही। सुबह से शाम तक चैनलों में 'चंदा चोरी' की ताजा खबर देने की होड़-सी लगी रहती है। कोई 'चंदा चोरी कांड' को उत्तर प्रदेश के आगामी चुनावों से जोड़कर देखता है, तो कोई इस कांड पर 'आनलाइन सर्वे' करवाकर पक्ष-विपक्ष में 'आधा-आधा' करने लगता है। फिर एक दिन उत्तर प्रदेश के बड़े विपक्षी

# एक और हार

विपिन जैन

## मैं

जिंदगी की तरफ मुड़ कर देखती हूँ तो सोचती हूँ कि जिंदगी से मैंने क्या चाहा था और मुझे क्या मिला? आसमान के तारे तो न चाहे थे। हम एक-दूसरे की भावनाओं की कद्र करें। यही मेरे जीवन का सपना था। मेरी उम्र पैतालिस पार कर चुकी है। मैं इक्कीस साल की थी, तब मेरी मां ने निर्णायक शब्दों में कहा था, 'हम तेरी शादी के बारे में सोच रहे हैं।' मैंने कहा था, 'मुझे शादी की कोई जल्दी नहीं है। अभी किसी बंधन में नहीं बंधना है। मेरी उम्र ही क्या है?' मेरी नहीं सुनी गई। 'लड़का अच्छा है। घर का अपना कारोबार है। अच्छा परिवार है।' आज से बीस साल पहले जवान होते ही बेटी जैसे बोझ बन जाती थी। अब लड़कियां उच्च शिक्षा पाने लगी हैं तो पच्चीस साल की उम्र के बाद शादी के बारे में सोचना शुरू करती हैं। मां-बाप खुद लड़की से पूछने लगे हैं, कोई लड़का पसंद हो तो बता दो। पहले लड़कों को भाग्य के भरसे छोड़ देते थे। कितना अंतर आ गया है। हालांकि इस अंतर के बाद भी क्या औरत अपना स्वतंत्र अस्तित्व हासिल कर पाई है?

मेरे परिचय में तीन अंतरजातीय शारियां हुई हैं। मां-बाप की इच्छा के विरुद्ध, पर आज उनकी पसंद बन गई है। मेरी पसंद भी थी, पर मां जानती थी कि पिता मेरी पसंद को कभी मंजूर नहीं करेंगे, क्योंकि मेरी पसंद पापा के दोस्त का बेटा था। श्याम अंकल, पापा के दोस्त और बड़े व्यापारी थे! उनके यहां हर उत्सव में और विभिन्न आयोजनों पर खूब खुलकर पैसा खर्च किया जाता था। बेटे की शादी भी वह शान से करना चाहते हैं, यह इच्छा कई बार प्रकट कर चुके थे। उन्हें कोई ऊंचा घराना चाहिए था। हमारी दौलत खर्च करने की हैसियत नहीं थी। भाई इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा था, जिसकी फीस और छोटी बहन की पढ़ाई का खर्च बहुत था। पापा को डर था कि कहीं यह प्रसंग उनकी दोस्ती में दरार न डाल दे। पर, पापा यह जल्द कर चाहते थे कि अगर उनकी तरफ से प्रस्ताव आया तो वे इनकार नहीं करेंगे।

निखिल कमजोर निकला। उसने अपने घर में पसंद की बात कही, जोर देकर कुछ नहीं कहा, न प्रेम की बात को कहा। तब प्रेम-प्रसंग को इतनी जल्दी कौन स्वीकार करता था, सो बात आई-गई हो गई। मुझे मिलाकर उसने मजबूरी के दो-चार शब्द कहे। किसी के साथ सारी उम्र के बंधन में बंध गया। आजकल के लड़के अपने मन की बात खुलकर कहते हैं। फिर क्या करती। मेरी मोहब्बत दफन हो गई। हम नौकरशाही लोगों के सोचने का एक दायरा होता है। शादी के बाद से ही मेरा मन उखड़ा सा रहने लगा, जब एक रात उसने मुझे सपना, 'तुम मेरी पसंद नहीं हो, मेरे पत्ने बांध दी गई हो।' मैं हजारों बार इस बात को सुन चुकी हूँ। मेरे मन पर क्या गुजरती है, यह मैं ही जानती हूँ! मेरी जिंदगी खराब करने का हक तुम्हें किसने दिया था? क्या कोई लड़की यह वारदात कर सकती है कि उसका पति किसी और को चाहता है, जिसे आज

## कहानी



**बच्चों ने साफ-साफ कह दिया कि हम अकेले किसी के साथ नहीं रहेंगे। दोनों को साथ रहना होगा। वरना हमें हमारे हाल पर छोड़ दो। हम बिन मां-बाप के रह लेंगे।**

तक भुला नहीं पाया है। आखिर बीस साल शादी के निकल गए। एक बार तलाक जैसी नीबत भी आ गई थी। मैं तब भी समाज और मां-बाप के दबाव में आ गई थी। अब फिर मुझे फैसला करना है कि वापस लौटना है या नहीं? यह दस दिन जो मैंने बिताए हैं, बच्चों से अलग पति से अलग मन की आजादी के दिन हैं। कोशिश करके महसूस करना चाहती हूँ कि क्या मैं सबसे अलग होकर सिर्फ अपने लिए ही सोचना और रहना चाहती हूँ? देखना चाहती हूँ, बच्चों और पति के बिना जिंदगी बिता सकती हूँ या नहीं। ये मेरे खुद से मुलाकात के दिन हैं। बीस सालों में मैं खुद से मिलना ही भूल गई थी? कर्तव्यों में बंधी मेरी जिंदगी मेरी नहीं रह गई थी! अब मुझे लगता है कि मैं खुद अपने

पांव पर खड़ी होती तो आज जिंदगी इस तरह बदहाल ना गुजरती। पहले लड़की का एकमात्र आसरा मायका होता था। अगर मायके के रास्ते बंद हो तो मरने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं होता था।

अब मैं जिंदगी के रंग देखना चाहती हूँ। मैं ऊबने लगी थी बीस साल की कैद जैसी जिंदगी बिताने के बाद। किस आजादी की इच्छा मन में रह जाती है? इन बीस दिनों के दौरान मैंने जिंदगी की हकीकत को देखा। मेरे माता-पिता, जो कहते थे कि इस घर के दरवाजे तुम्हारे लिए हमेशा के लिए खुले हैं, अब एक दिन में कह रहे हैं, 'बेटा क्या तुम परिवार की मर्जी से नहीं आई हो? तेरे पति ने धमकी दी है, मैं लेने नहीं जाऊंगा, जैसे गई थी वैसे आ जाए।' दोनों बेटियों को मां की परवाह नहीं है। वे डिजिटल दुनिया में व्यस्त रहती हैं। उनका कहना है कि अगर वह अलग रहना चाहती है तो उसकी इच्छा है। रोज की कच-कच से अच्छा है, अपने-अपने ढंग से जिंदगी बिताएं दोनों।

कभी-कभी लगता है, जैसे मैं औरत थी ही नहीं। उसने कई बार कहा, चली जा घर से जहां चाहे। बाद में पछताता भी था। बस यही मेरी नरमी का सबब बन जाता था। मैं कभी उस खिड़की के बाहर झांक ही नहीं पाई जहां जिंदगी की हलचल थी। ताजा खिले फूलों की महक थी। आए दिन के झगड़ों का बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा था। इन स्थितियों को कब तक टालते रहती? हर बात में बस तुम्हारी शर्तें चलती थीं। अपमानों की कहानी भी लंबी होती जा रही थी। मुझे खुद को लेकर फैसला करना था। मेरा विश्वास कह रहा था, 'मेरी औकात छोटी ही सही! मैं एक मामूली औरत ही सही! पर मैं तुम्हारी पत्नी थी। मुझे तुम्हारी दया नहीं मेरे हिस्से का प्यार, परवाह और सम्मान चाहिए था। मेरे होने को यूं तो न नकारा गया होता। मुझे मनहूस तो न बुलाया गया होता। इसमें मेरे नसीब का दोष क्या है कि तुम्हारा व्यापार घाटे में चला गया। तुम्हारे दोहरे आचरण को मैं समझ नहीं पाई। दो बेटियों को लेकर कहा था, मैं बेटे-बेटों में फर्क नहीं करता हूँ।

पति को उपेक्षा के साथ परिवार की संवेदना भी मुझे नहीं मिली। बीस साल तक मैं उलझन की शिकार रही। अब मैं अपने माता-पिता के घर आ गई हूँ। न लौटने का मेरा इरादा पक्का है। बच्चों को तो मैं ही रखूंगी। कानूनी लड़ाई से भी पीछे नहीं हटूंगी। आखिर मेरे भी कुछ अधिकार हैं। लेकिन स्त्री के इस अधिकार के आगे भी एक मां को हारना था।

बच्चों ने साफ-साफ कह दिया कि हम अकेले किसी के साथ नहीं रहेंगे। दोनों को साथ रहना होगा। वरना हमें हमारे हाल पर छोड़ दो। हम बिन मां-बाप के रह लेंगे। कितने ही बच्चे छोटी उम्र में अनाथ हो जाते हैं, हम भी खुद को वैसा ही समझ लेंगे। बच्चों ने फरमान सुनाया कि आप दोनों को हमारे साथ रहना है तो अपने-अपने अहम और अस्तित्व की लड़ाई छोड़नी होगी। हमारे जन्म से पहले यह फैसला लिया होता तो अच्छा होता।

कुछ दिनों के बाद मेरा फैसला सामने आया। जिसमें फिर एक मां से एक औरत हार कर अपने उस घर में लौट आई थी जहां आंसुओं के सिवा मेरे पास कुछ नहीं था। क्या मेरा फैसला कोई दूसरा हो सकता था?

## समय सूचक

## जिनके व्यंग्य हैं राजनीतिक दास्तान

जनसत्ता सरोकार

आज भारत के पहले लोकप्रिय प्रधानमंत्री और एक कार्टूनिस्ट। भारत के पहले प्रधानमंत्री को सत्ता के साथ एक साहसी व्यंग्यकार मिला था। उस वक़्त न मीमा था और न इंटरनेट। लेकिन नेहरू के ज्यादातर फैसलों पर सवाल उठाता केशव शंकर पिल्लई का कार्टून हाज़िर हो जाता था। चाचा नेहरू की अजीबो-शान शक्ति पर शंकर अपने कार्टून 'गैंडपा एट प्ले' में कुछ यूँ दिखते हैं कि अपने आवास में बच्चों को खेलने की इजाजत देने के बाद बच्चों ने उन्हें दिन में तारे दिखा दिए थे। हालांकि इस कार्टून के पीछे एक बहुत बड़ा राजनीतिक तंज छिपा था। नेहरू जो खुद एक नए आजाद देश के अगुआ थे, यूनाइटेड नेशन



केशव शंकर पिल्लई

से अपील कर रहे थे कि उसे चीन को भी शामिल कर लेना चाहिए। शंकर ने नेहरू के इतने कार्टून बनाए कि उनके इतिहास उस समय के राजनीतिक इतिहास को समझने का स्रोत बन गए हैं। शंकर ने नेहरू के चरित्र को पूरा के पहरेदार की तरह गढ़ा था। सबसे खास बात है कि नेहरू पर व्यंग्य के तौर चलानेवाले शंकर नेहरू के करीबी दोस्तों में थे। अपनी पत्रिका 'शंकरस वीकली' प्रकाशित होने पर उसके लोकार्पण के लिए उन्होंने नेहरू को भी आमंत्रित किया था। शंकर की अगुआई में ही दिल्ली में 'चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट आफ इंडिया' और 'डाल म्यूजियम' की स्थापना हुई थी। शंकर का जन्म 31 जुलाई 1902 के केरल के कायामकुलम में हुआ था। नेहरू के समय में शंकर की कूची जहां व्यंग्य के बाण रचती थी, वहीं इंदिरा गांधी के आपातकाल में उनके व्यंग्य पर भी पहरा लगा। पिता के दोस्त की कूची पुत्री के आदेश से बंधक बन गई। आपातकाल की तुलना देश के 'गंभीर समय' से करते हुए शंकर ने अपनी पत्रिका 'शंकरस वीकली' का प्रकाशन बंद कर दिया। 26 दिसंबर 1989 को 87 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। उन्हें 1976 में पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया था।

# सुधर गई आदत विरोध से बेदखल बुआ

हरीश कुमार 'अमित'

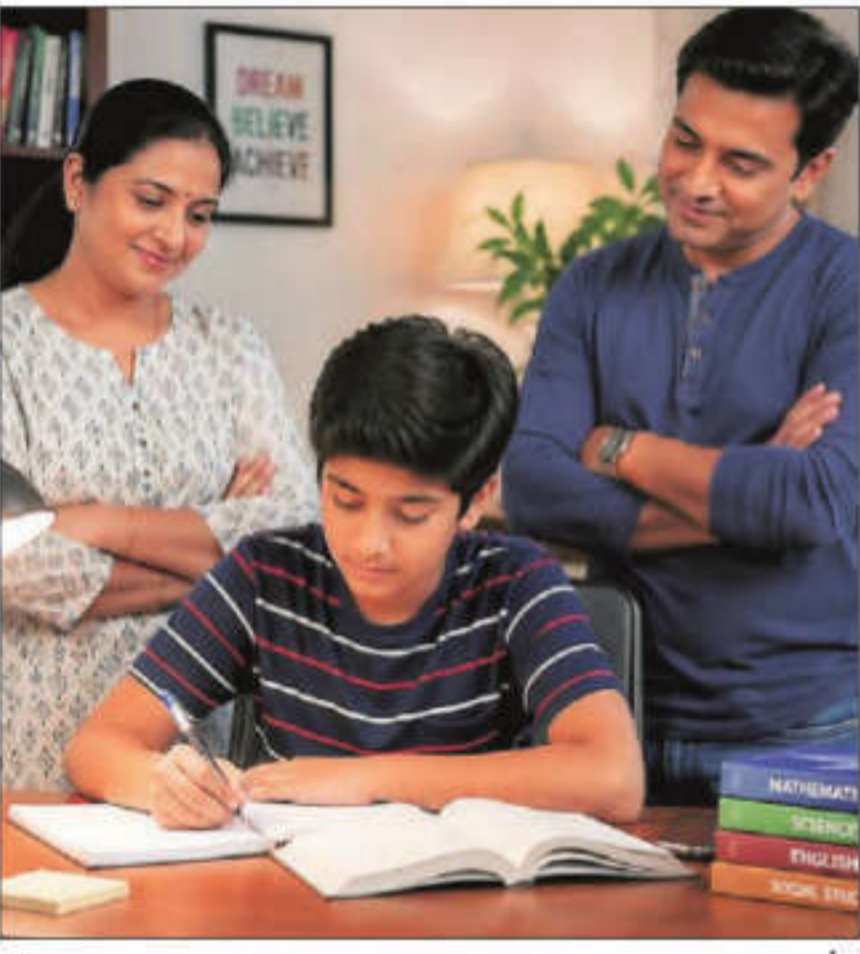
व रुण, आज घूम-घूमकर पढ़ाई क्यों कर रहे हो? पापा ने पूछा। 'ऐसी कोई खास बात नहीं।' वरुण बोला। 'बेटा, हमेशा तुम कुर्सी-मेज पर बैठकर ही पढ़ाई करते हो। फिर यह आज घूम-घूमकर क्यों पढ़ रहे हो? बताओ क्या बात है, बेटू?' वहां पहुंची मम्मी ने मुलायम स्वर में वरुण से पूछा। 'मेरे स्कूल के दोस्त मोहित ने कहा था कि घूम-घूम के पढ़ने से अच्छी तरह याद होता है।' 'बेटू, घूम-घूमकर पढ़ने से तुम्हें ज्यादा अच्छी तरह से याद हो रहा है क्या?' मम्मी पूछने लगीं। कुछ देर सोचने के बाद वरुण कहने लगा, 'मुझे तो उल्टे ज्यादा समय लग रहा है याद करने में। कुर्सी-मेज पर बैठकर अच्छी तरह याद हो जाता था और वो भी जल्दी-जल्दी।' 'तो बेटा, जैसे तुम्हें कुर्सी-मेज पर बैठकर अच्छी तरह याद होता है, उसी तरह मोहित को घूम-घूमकर अच्छी तरह याद होता होगा। जब मैं स्कूल में पढ़ता था तो मुझे छत पर जाकर खुले में पढ़ना अच्छा लगता था।' पापा बताने लगे। 'जब मैं पढ़ती थी तो मुझे घर के बगीचे में पेड़-पौधों के बीच बैठकर पढ़ाई करना बहुत अच्छा लगता था। इतने सालों से तुम कुर्सी-मेज पर बैठकर पढ़ाई कर रहे हो, और हमेशा अच्छे अंक ला रहे हो। इसलिए तुम्हारा पढ़ाई करने का तरीका ठीक है, बेटू।' मम्मी ने भी समझाया।

'ठीक है।' वरुण ने जवाब दिया। 'बेचारे कुर्सी-मेज भी उदास हो गए होंगे कि वरुण कहां चला गया हमें छोड़कर।' मम्मी ने कहा तो पापा और वरुण मुस्कुराने लगे। किसी के कुछ भी सलाह देने पर बिना सोचे-विचारे उस पर अमल शुरू कर देने की आदत वरुण को थी। कभी कोई उसे कह देता कि घड़ी बाई के बदले दाईं कलाई पर बांधनी चाहिए, इससे दिमाग तेज होता है, तो वह अपनी घड़ी दाएं हाथ पर बांधना शुरू कर देता। भले ही बाद में वक़्त देखते समय उसकी नजर आदतन पहले बाईं कलाई पर ही क्यों न पड़ती रहे। कोई उसे कह देता कि सिर में बाईं के बदले दाईं तरफ मांग निकालने से आदमी ज्यादा सुंदर और प्रभावशाली दिखता है, तो वह उसी दिन से ऐसा करना शुरू कर देता। यह बात अलग है कि ऐसा करने पर उसके बाल बिखरे-से रहते और बड़े अजीब-से लगे।

एक बार पार्क में खेलते समय वरुण ने एक अनजान अंकल को किसी दूसरे अंकल से यह कहते सुन लिया कि वे रात के दो-दो बजे तक पढ़ा करते थे और कक्षा में हमेशा प्रथम आया करते थे। उसी रात से उसने भी रात को देर तक पढ़ाई करनी चाही, हालांकि अब तक वह रात के दस बजे तक पढ़ाई कर-के सो जाता था। मगर रात को देर तक पढ़ाई करने की उसकी योजना सफल न हो पाई, क्योंकि ग्यारह बजे तक भी वह बड़ी मुश्किल से जगा रह पाता था और फिर पढ़ते-पढ़ते कुर्सी-मेज पर ही उसे नींद आ जाती। मम्मी-पापा वरुण को समझाते रहते कि किसी की कोई भी सलाह मानने से पहले उस पर सोच-विचार कर लेना चाहिए। अगर वह सलाह ठीक लगे, तभी उस पर अमल करना चाहिए, मगर मम्मी-पापा के समझाने का वरुण पर ज्यादा असर होता नहीं था।

एक दिन शाम के समय दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलकर वरुण जब घर वापस आया तो उसने देखा कि सारे घर में अंधेरा छाया हुआ है। 'मम्मी, बतियां क्यों बंद कर रखी हैं सारे घर की?' 'बेटू, मेरी एक सहेली ने बताया है कि हर रोज शाम को एक घंटे तक बतियां बंद रखने से घर में शांतिपूर्ण वातावरण रहता है।' मम्मी ने जवाब दिया। 'कितनी शांति लग रही है न घर में!' 'पर बगैर लाइट के काम कैसे चलेगा? मुझे होमवर्क पूरा करना है। टीवी भी देखना है।' वरुण नाराजी-भरे स्वर में बोला। 'अरे हां, टीवी की तुमने अच्छी याद दिलाई। आज हमारे आफिस में कोई कह रहा था कि शाम को टीवी न देखने से प्रमोशन जल्दी मिलता है।' पापा कह रहे थे। 'मगर पापा, शाम

## बाल कथा



**एक बार पार्क में खेलते समय वरुण ने एक अनजान अंकल को किसी दूसरे अंकल से यह कहते सुन लिया कि वे रात के दो-दो बजे तक पढ़ा करते थे और कक्षा में हमेशा प्रथम आया करते थे। उसी रात से उसने भी रात को देर तक पढ़ाई करनी चाही, हालांकि अब तक वह रात के दस बजे तक पढ़ाई करके सो जाता था।**

को टीवी न देखने से आपको प्रमोशन जल्दी कैसे मिल जाएगा?' 'बेटा, जिन्होंने कहा है, उन्हें तो मिला था जल्दी प्रमोशन। जब उन्हें मिला, तो मुझे भी मिलेगा न।' पापा फिर बोले। 'ऐसे थोड़े ही न मिलता है जल्दी प्रमोशन! मुझे तो देखना है टीवी! मेरा मनपसंद सीरियल निकल जाएगा! चलो ठीक है, मम्मी। अब खाना तो खा ही लेते हैं। बन गया क्या खाना?' 'खाना तो रात के दस बजे के बाद ही बनेगा। वो पड़ोसवाली करुणा ने बताया है कि रात दस बजे के बाद खाना खाने से वह अच्छी तरह हजम होता है।' 'मम्मी अगर ऐसा करने से करुणा आंटी को कुछ फायदा हुआ है, तो इसका मतलब यह तो नहीं कि हमें भी होगा। इस तरह एक घंटे तक लाइट बंद करके, शाम को टीवी न चलाकर और रात को दस बजे के बाद खाना खाकर हमारा क्या फायदा होनेवाला है। घर का सारा रूटीन गड़बड़ करके उल्टे मुकसान ही होगा।' वरुण ने तैश में आकर बहुत कुछ कह डाला। तभी मम्मी ने आगे बढ़कर बती जला दी और बोली, 'हम लोग भी यही सब सुनना चाहते थे तुम्हारे मुंह से। यह सब तो हमने तुम्हें समझाने के लिए किया था, बेटू।' मम्मी ने बात साफ की। वरुण कुछ देर तक सोचता रहा और फिर कहने लगा, 'अब मैं किसी की दी हुई सलाह को बगैर समझे और परखे, इस तरह अंधाधुंध नहीं अपनाऊंगा।' 'मुंह-हाथ धो लो। खाना भी तैयार है। तुम्हारा मनपसंद मटर-पुलाव और साथ में उड़द साबुत की दाल।' मम्मी ने कहा। खुशी से चहक कर वरुण बाथरूम की तरफ भागा।

जनसत्ता सरोकार

बुआ का चेहरा फूला हुआ है। बुआ के आने से पहले शादी में आया देहज अलमारी में रख दो। ओह! यह नया सूट सामने क्यों रख दिया, बुआ आते ही कहीं इसे मांग न ले। सोशल मीडिया पर बुआ को लेकर 'मीम' बनाने का चलन इतना 'संक्रामक' हो गया है कि एक बार फिर से समाज में फैले पितृसत्ता के संक्रमण पर नजर चली जाती है।

मीम वाली बुआ को परे हटा कर एक बार सवाल पूछते हैं कि कौन हैं देश की ज्यादातर बुआएं। वही बुआ, जब वह छोटी थी तो उन चार या छह बहनों में से एक थीं, जिनकी कतार लगने के बाद उन्हें एक भाई मिला था। चार बहनों का संसाधन एक तरफ और एक भाई का संसाधन दूसरी तरफ। अगर शादी के लिए मामूली शिक्षा-दीक्षा जरूरी नहीं होती तो बुआ ने स्कूल-कालेज का मुंह भी नहीं देखा होता। बचपन में बुआ की हर इच्छा पर यही कहा जाता था कि जब शादी हो जाएगी तो अपने घर जाकर यह सब शौक-अरमान पूरे करना।

'अपना घर' यानी बुआ का बचपन जिस घर में बीत रहा था वह उसका अपना था ही नहीं। शादी

जनसत्ता सरोकार

ह सौ साल पहले की बात है। लेखक एए मिलने अपने बेटे क्रिस्टोफर राबिन मिलने के टेडी बीयर को देखते हैं। टेडी को लेकर बेटे को दोस्ती लेखक को भी रचनात्मक बना देती है। वे अपने बेटे के टेडी को एक प्यारे से दयालु चरित्र के रूप में ढाल देते हैं। मिलने एक चरित्र को अपने बेटे का नाम क्रिस्टोफर भी देते हैं। क्रिस्टोफर पूह का जिंगरी दोस्त है। जाहिर सी बात है कि इस भालू को भी शहद से बहुत प्यार होगा। शहद शहद की खुराक ही विनी द पूह के चरित्र को इतना मीठा बना देती है कि 1926 में अस्तित्व में आया यह चरित्र सौ साल बाद 2026 में भी बच्चों को प्यारी यादें देने में जुटा हुआ है।

विनी द पूह की सौवीं सालगिरह पर डिज्नी ने अपने संदेश में कहा कि पूह और उसके दोस्तों की कहानियां आज भी लोगों को छोटी-छोटी चीजों में खुशियां खोजने के लिए प्रेरित करती हैं। इस चरित्र के शोध से जुड़े केविन कर्न का कहना है कि विनी द पूह हमारी भावनाओं की अगुआई करता है। जिस तरह हम अपने आम जीवन में देखते, सोचते, संघर्ष करते हैं, यह भी वैसा ही करता है। यह बहुत सहजता से अनजाने में बड़ी बुद्धिमानी की बातें कर जाता है। विनी द पूह 1926 में पहली बार पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ था। इसके बाद 1928 में द हाउस



## मार्गदर्शन

के बाद पहला ताना यही मिला था कि पता नहीं अपने घर से क्या सीख कर आई है, पता नहीं अपने घर से क्या लेकर आई है। यानी अब वह घर अपना हो गया था, जिसे बचपन में अपने घर के तौर पर नकारा गया था। बुआ की शादी संपन्न परिवार में हुई है। बुआ का सपना ताजमहल, कश्मीर, मनाली जैसी जगहों पर घूमने का नहीं था। बुआ तो यूरोप घूमना चाहती थीं। लेकिन इतने संपन्न घर में अभी बुआ को अपना हिस्सा कहां मिला था। अभी तक सब या तो सास-ससुर या

# विनी द पूह का शताब्दी संदेश

अमर किरदार



**डिज्नी ने कहा कि पूह और उसके दोस्तों की कहानियां आज भी लोगों को छोटी चीजों में खुशियां खोजने के लिए प्रेरित करती हैं। केविन कर्न का कहना है कि विनी द पूह हमारी भावनाओं की अगुआई करता है।**

एट पूह कानून प्रकाशित हुई थी। इसके मूल चित्रकार ईपच शेपर्ड थे। विनी द पूह की भोली-भाली जिंदगी

पति का है। इतनी अमीरी में से कुछ पैसे बुआ अपनी मर्जी से नहीं खर्च कर सकती है।

आज बुआ का भाई आने वाला था। बुआ बहुत खुश थी। भाई ने आते ही दस्तखत करने के लिए कागज और कलम पकड़ा दिए। भाई को अपनी पैतृक संपत्ति बेचने के लिए बुआ का 'नो आबजेवशन' चाहिए था। बुआ को लगा, वह ठगी गई। जिस घर के बारे में कहा गया था कि उसका कोई अधिकार नहीं, वही उसका पैतृक घर है, और वहां उसका अधिकार है। जिस घर में कानून उसे अधिकार देता है, वहां मां-बाप यही क्यों बताते रहे कि यहां तुम्हारा कुछ नहीं है।

बुआ कागज-कलम को देख रही है। भाई ने मान लिया है कि सारी संपत्ति उसके नाम होने में बुआ को कोई परेशानी नहीं है। बुआ कागज पर लिखे शब्द पढ़ने की कोशिश करती है। भाई कहता है-पढ़ क्या रही हो, ये कानूनी शब्द तुम्हें समझ नहीं आएंगे, तुम बस दस्तखत कर दो अपना। बुआ सोच रही है, काश! ऐसा कोई कागज उसने पहले देखा होता। काश! ऐसे कानूनी शब्दों के बारे में उसे पहले पता चला होता। काश! काश! और न जाने कितने काश! भाई ने यह कैसे सोच लिया कि वहन कोई विरोध नहीं करेगी। आखिरकार भाई सोचे भी क्यों न! उसी की सत्ता के लिए तो वहन को विरोध जैसे शब्द से दूर रखा गया था। बुआ पहली बार विरोध बोलना चाह रही थी।

अपने दोस्तों के प्यार पर टिकी हुई है। उसका कहना है कि अगर कोई दिन बिना दोस्तों के बिताना पड़े तो वह ऐसा ही खाली लगता है, जैसे कोई बर्तन हो लेकिन उसमें शहद की एक बूंद भी न हो। पिगलेट, टिगर, ईयोर, रिबिट, आउल और क्रिस्टोफर राबिन जैसे प्यारे चरित्रों से विनी द पूह की टोली बनती है। विनी को यह टोली खेल-खेल में दोस्ती, दया, सादगी और धैर्य की सीख देती जाती है। विनी द पूह की पुस्तक दुनिया भर की करीब पचास भाषाओं में अनुदित हुई है। दुनिया भर में इसकी लाखों प्रतियां बिकी हैं। 1960 के दशक में डिज्नी ने विनी द पूह के अधिकार प्राप्त किए। पूह पर बनाई डिज्नी की कार्टून श्रृंखलाएं दुनिया भर में खूब पसंद की गईं। डिज्नी के संस्करण में पूह लाल रंग की टीशर्ट पहनता है, जो उसकी पहचान बन गई।

2018 में विनी द पूह के संस्करण की एक फिल्म चीन में प्रदर्शित हुई। शहद खाने वाले विनी की तुलना कई संदर्भों में शी जिंपिंग से की जाने लगी। जिंपिंग के इस तरह के चित्रण को अमेरिकी सोच बता कर यह चरित्र व्यवस्था विरोधी करार दे दिया गया। चीन में यह फिल्म प्रतिबंधित हो गई। खिलौना भालू और बच्चों का प्यार सदियों पुराना हो चुका है। टेडी के हर रूप ने पीढ़ियों तक लुभाया है। विनी द पूह अपने दोस्तों से कहता है कि अगर कभी ऐसा हो कि हम अपने दोस्तों से बिछड़ जाएं तो तुम्हें हमेशा याद रखना चाहिए कि तुम खुद से भी ज्यादा बहादुर हो। प्यार और दया की भावना हमें बहादुर बनाती है, यह पूह का शताब्दी-संदेश है।

## सक्रियता का सिरा

## अमरुद की मिठास सेहत के लिए खास

वक्त के प्रवाह में बहते हुए कई बार ऐसी कड़ियों से भी गुजरना होता है, जब हम अपने आप में विचारशून्यता का अनुभव करते हैं। लेकिन क्या हमारा मस्तिष्क कभी भी विचारशून्य हो सकता है? दरअसल, हमारा मस्तिष्क हर पल कुछ न कुछ सोचता है। सोचने के लिए कोई न कोई संदर्भ होता है, वह चाहे देश-समाज की कोई समस्या हो, परिवार की मुश्किलें हों, व्यक्तिगत दुख-सुख से जुड़ी बातें हों या फिर सामने चल रही चीटी हो या कोई निजीव विस्तु ही, लेकिन हर पल हमारे दिमाग में कुछ न कुछ चलता रहता है। यही दिमाग की प्रकृति है।

### विचार बोध

रोहित कुमार

### अनचाही परिस्थितियां

अचानक उपस्थित होने वाली किसी घटना के बाद हम कई बार खुद को स्तब्ध पा सकते हैं, जिसे किंकरतव्यविमूढ़ अवस्था के तौर पर जाना-समझा जा सकता है। उस वक्त यह समझना मुश्किल होता है कि हम क्या करें या क्या न करें, बस विचारशून्यता की स्थिति में खुद को लाचार महसूस करते हैं। हालांकि उस वक्त भी मस्तिष्क में दुख या भय के प्रभाव से उपजी कोई न कोई बात चल ही रही होती है, मगर प्रतिक्रिया के संदर्भ में देखें, तो ऐसा लगता है मानो हम जड़ हो गए हैं, ठहर गए हैं। खासतौर पर अत्यधिक दुख या भय से जुड़ी किसी घटना के समय प्रतिक्रिया देने के मामले में हम कई बार खुद को लाचार पाते हैं।

### अनचाही परिस्थितियां

यह भी हो सकता है कि हम देश-दुनिया की व्यस्तताओं की वजह से खुद को काफी थका हुआ महसूस करते हैं और कुछ समय के लिए शांति की तलाश में होते हैं। कुछ भी अतिरिक्त नहीं सोचना चाहते हैं, जिससे हमारे मस्तिष्क पर बोझ महसूस हो। मानो कुछ देर के लिए नींद में चले जाना चाहते हैं, जब किसी भी अन्य परिस्थिति का हमारे दिमाग में दखल न हो। हालांकि नींद में भी मस्तिष्क की गतिविधि को पूरी तरह रुक या ठहर जाने के तौर पर नहीं देखा जा सकता, लेकिन व्यवहार में इससे मस्तिष्क को आराम मिलने की तरह का अहसास होता है। तो क्या हम अपनी मौजूदा जिंदगी में कुछ अनचाही परिस्थितियों से भी गुजरने लगे हैं, जब हम विचार की दुनिया में घूमते हुए मस्तिष्क से थकने भी लगे हैं और चाहते हैं कि कुछ आराम मिले? क्या हमने इस पर भी गौर किया है कि कई बार हम ऐसी गतिविधियों में भी लीन हो जाते हैं, जिसमें हासिल तो कुछ नहीं होता, लेकिन हमारा शरीर और मस्तिष्क थक जाता है? दरअसल, आज ऐसी स्थिति भी हमारे सामने मौजूद है,

**आज लोग व्यस्त दिखते हैं, बल्कि दिमाग का ही इस्तेमाल कर रहे लगते हैं, लेकिन उस समय उनके स्वतंत्र रूप से सोचने-समझने की पूरी प्रक्रिया दरअसल ठहरी हुई होती है। मसलन, हमारा जीवन आज अलग-अलग तरह की तकनीकी सुविधाओं के बीच इस कदर घिर चुका है, जिसमें हमारे शरीर और मस्तिष्क को जरूरत से ज्यादा आराम मिलने लगा है।**

जिसमें लोग व्यस्त तो दिखते हैं, बल्कि दिमाग का ही इस्तेमाल कर रहे लगते हैं, लेकिन उस समय उनके स्वतंत्र रूप से सोचने-समझने की पूरी प्रक्रिया दरअसल ठहरी हुई होती है। उदाहरण के तौर पर हमारा जीवन आज अलग-अलग तरह की तकनीकी सुविधाओं के बीच इस कदर घिर चुका है, जिसमें न केवल हमारे शरीर को जरूरत से ज्यादा आराम मिलने लगा है, बल्कि हमारा मस्तिष्क भी विचार-विमर्श की प्रक्रिया से वंचित होने लगा है। रोबोट या कृत्रिम बुद्धिमत्ता से लैस यंत्रों को फिलहाल छोड़ भी दें, तो घरेलू कामकाज के लिए आज आधुनिक तकनीक से लैस इतने सारे संसाधन हमारे घरों के भीतर भी आ गए हैं कि हमारे कई कामकाज उनके जरिए निपट जाते हैं। यानी हमारे शरीर को ज्यादा से ज्यादा आराम मिलने लगा है। मगर यही आराम शरीर की सक्रियता को बाधित करने का जरिया बनता है और व्यक्तिगत का जो हिस्सा कम सक्रिय रहता है, वह उतना ही कमजोर होता जाता है।

### बाधित विचार

अब इसी आलोक में हम स्मार्टफोन के स्क्रीन में गुम अपने मस्तिष्क की स्थिति पर गौर कर सकते हैं। स्क्रीन या दृश्य-माध्यमों में जरूरत से ज्यादा मशगूल रहना हमारी दिमागी सक्रियता को कम करता है, बल्कि रील देखने की लत तो यहां तक ले जाती है, जिसमें सोचने-समझने की पूरी प्रक्रिया ही बाधित हो जाती है, और इस तरह हमारा विवेक भी बुरी तरह प्रभावित होता है। सवाल है कि मस्तिष्क की सक्रियता के जरिए हम अपने विवेक और विचार की दुनिया को समृद्ध करना चाहते हैं या बिना संयम के आधुनिक तकनीक के बेलगाम इस्तेमाल के हासिल के तौर पर व्यवहार में विचारशून्यता की ओर कदम बढ़ाना चाहते हैं!

अमरुद अपने स्वाद और गुण के कारण लोगों में प्रिय है। यह मौसमी फल है। गर्मी और जाड़े के अलावा बरसात में भी यह फलता है। इसमें ऐसे कई पोषक तत्व होते हैं जो स्वास्थ्य संबंधी कई समस्याओं को दूर कर देते हैं। अमरुद के पत्तों का औषधीय उल्लेख आयुर्वेद में मिलता है। कई घरेलू नुस्खों में इसे असरदार माना गया है। बेहतर स्वास्थ्य के लिए कुछ नुस्खों में इसे आजमाया जा सकता है।

## अ

### पोषक तत्वों का खजाना

अमरुद पोषक तत्वों से भरपूर होता है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट के अलावा प्रचुर मात्रा में फाइबर होता है। जबकि इसके पत्ते में सूजनरोधी गुण होते हैं। इसके इस्तेमाल से स्वास्थ्य संबंधी कई रोगों का उपचार किया जा सकता है। खास बात यह कि अमरुद में संतरे से भी अधिक विटामिन-सी होता है जो कई बीमारियों से बचाता है। इसके अलावा इसमें पोटाशियम भी पाया जाता है। जीवाणुरोधी गुण के कारण भी अमरुद का खास महत्व है। इसमें विटामिन-ए भी पाया जाता है। यों इसमें कार्बोहाइड्रेट के साथ कैलोरी भी पाई जाती है।

### पावन रखे दुरुस्त

इसमें पर्याप्त मात्रा में फाइबर होता है। जब इसे बीजों के साथ खाया जाता है, तो यह कब्ज को बहुत जल्दी ठीक कर देता है। गौरतलब है कि फाइबर युक्त यह फल आंतों को दुरुस्त रखता है। अमरुद साबुत ही खाना चाहिए। यह पाचन क्रिया को भी बेहतर बनाता है। यह देर तक भूख नहीं लगाने देता। वहीं दस्त और पेशिश होने पर अमरुद के पत्तों को उबाल कर दिन में थोड़ा-थोड़ा पीने से राहत मिलती है। इसी के साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए अमरुद से बेहतर कोई नुस्खा नहीं है। दरअसल, इसमें सामान्य फलों से अधिक मात्रा में विटामिन-सी होता है। यह शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है। यह विटामिन-सी ही है, जो संक्रमण को रोकने के साथ घाव भी भरता है।

### मुंह की सेहत

अमरुद के पत्तों में जीवाणुरोधी गुण होता है। ताजा पत्तों

### दिल को बनाए सेहतमंद

अमरुद ऐसा गुणकारी फल है जो दिल को

### नुस्खे



सेहतमंद बनाता है। यह कोलेस्ट्रॉल का स्तर बनाए रखने में भी मदद करता है। इसमें पोटाशियम की मात्रा भी पाई जाती है, जिससे रक्तचाप काबू में रहता है। हृदय को स्वस्थ रखना हो, तो गर्मी हो सर्दी या फिर बारिश का मौसम, जब भी अमरुद उपलब्ध हो, इसे खाना चाहिए। कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करना हो, तो अमरुद की ताजा पत्तियों का काढ़ा पीना चाहिए। इससे दिल की सेहत भी बनी रहती है। इसी तरह अमरुद की पत्तियों की चाय पीने से इंजुलिन संतुलित रहता है। मधुमेह से भी राहत मिलती है।

## बारिश के मौसम में मलेरिया के खतरे

## मा

नसून के दौरान डेंगू और मलेरिया के मामलों सामने आने लगते हैं। इसलिए हर साल इन दिनों सतर्कता बरती जाती है। इस बार भी सरकार ने राज्यों और सभी केंद्रशासित प्रदेशों को सचेत किया है। डेंगू और मलेरिया से बचाव तथा उपचार के लिए सभी नियमों का सख्ती से पालन करने के लिए कहा गया है। हालांकि दुनिया के कई बड़े देश मलेरिया का उन्मूलन कर चुके हैं। फिर भी कई देश अब भी प्रभावित हैं। इनमें भारत भी एक है। मगर पिछले एक दशक में इस पर काफी हद तक काबू पा लिया गया है। बीमार होने वालों की संख्या के साथ मृत्यु दर भी घटी है। भारत ने वर्ष 2030 तक मलेरिया समाप्त करने का लक्ष्य रखा है। मलेरिया के मामलों में काफी गिरावट आई है। फिर भी लोगों को सावधान रहने की जरूरत है। सभी नागरिक साफ-सफाई का ध्यान रखें, तो देश मलेरिया से मुक्त हो सकता है।

बुखार है या इसकी कोई और वजह है। मगर जब रोगी को सिरदर्द हो रहा हो और गहरे रंग का पेशाब आ रहा हो, तो इसे मलेरिया का लक्षण समझना चाहिए। कभी-कभी बुखार के दौरान मरीज को पसीना आता है। उसे कंपकंपी महसूस होती है। मरीज को ज्यादा बुखार आने लगे, तो उसकी आंखें पीली पड़ जाती हैं।

### जांच और उपचार

मलेरिया एक ऐसा रोग है जिसका इलाज अब आसानी से हो जाता है। हालांकि कुछ जांच कराके या लक्षण देख कर चिकित्सक दवाओं से उपचार करते हैं। जरूरत पड़ने पर रैपिड एंटीजन टेस्ट कराया जाता है। मरीज गंभीर स्थिति में हो, तो प्लेटलेट और हीमोग्लोबिन के स्तर की भी जांच कराई जाती है। रक्त की जांच के बाद स्थिति साफ हो जाती है। इसके आधार पर मरीज का इलाज शुरू किया जाता है। इसके अलावा 'लिवर और फंक्शन टेस्ट' (केएफटी) कराने की भी सलाह दी जाती है। बच्चों और गर्भवती महिलाओं के उपचार के दौरान कुछ खास दवाओं से बचा जाता है। बलरोधी आधारीत उपचार को अधिकांश मरीजों में सामान्य माना जाता है।

### सेहत



### समय रहते रोकथाम

किसी को मलेरिया न हो, इसलिए जरूरी है कि पहले ही इससे बचाव कर लिया जाए। सावधानी बरतें और आसपास मच्छरों का प्रजनन न होने दें। अगर कहीं पानी जमा हो रहा हो, तो उसे साफ कर दें। समस्या की एक बड़ी जड़ जल जमाव ही है। इसी कारण लावा पनपते हैं। बारिश के दिनों में मच्छर पैदा होने की यही वजह है। इसलिए इस तरह के कपड़े पहनने की सलाह दी जाती है, जिससे हाथ-पैर ढके रहें। संभव हो तो खिड़कियों और दरवाजे पर जालियां लगावा दें, ताकि घर में मच्छर न आए। इन दिनों मच्छरदानी लगा कर सों। मलेरिया का टीका अभी नहीं आया, लेकिन इससे संबंधित दवाएं उपलब्ध हैं।

### लक्षणों से पहचान

मलेरिया बारिश के दिनों में मच्छरों के काटने से होता है। अगर किसी को मलेरिया हो गया है, तो इसके लक्षणों को पहचानना कोई मुश्किल नहीं। आमतौर पर इसके लक्षण छह से दस घंटे रहते हैं। दूसरे दिन फिर दिखने लगता है। शुरुआती दौर में हल्का बुखार आता है। इससे पता नहीं चलता कि यह सामान्य

### मरीज का आहार

मलेरिया होने पर मरीज का पाचन कमजोर हो जाता है। इसलिए चिकित्सक सुपाचक भोजन लेने की सलाह देते हैं। मरीज को दलिया और खिचड़ी देना अच्छा रहता है। फलों में पपीता-अनानास, मौसमी और अंगूर एवं जामुन दिया जा सकता है। दाल-चावल का पानी, फलों का रस और सूप से मरीज को ताकत मिलती है। उसे नारियल पानी भी दिया जा सकता है। इन दिनों मरीज को कमजोरी महसूस होती है। ऐसे में विशेष ध्यान रखना चाहिए। उसे मसालेदार भोजन नहीं देना चाहिए। बाहर के खाने और जंक-फूड से परहेज करना चाहिए।

(यह लेख सिर्फ सामान्य जानकारी और जागरूकता के लिए है। उपचार या स्वास्थ्य संबंधी सलाह के लिए विशेषज्ञ की मदद लें।)

## जिम्मेदारी का अहसास, सहयोग की भावना

## प

रिवार में सभी सदस्यों का अपनी जिम्मेदारी को समझना एक मजबूत और खुशहाल घर की नींव होती है। जब हर कोई अपने हिस्से का काम और कर्तव्य निभाता है, तो समय की बचत होती है और घर का माहौल भी सकारात्मक बना रहता है। जिम्मेदारी बांटने से न केवल काम का बोझ कम होता है, बल्कि मानसिक तनाव भी दूर होता है। जब आप काम को दूसरों के साथ साझा करते हैं, तो उसकी उत्पादकता बढ़ती है और व्यक्ति खुद के लिए भी समय निकाल पाता है। घर के कार्यों या फैसलों में सभी सदस्यों का साथ हो, तो यह आपसी सहयोग की भावना को मजबूत करता है और रिश्तों में मिठास बनाए रखता है।

### धारणा का संकट

भारतीय समाज में यह अक्सर देखा जाता है कि परिवार के मुखिया पर सबसे ज्यादा जिम्मेदारियां डाल दी जाती हैं। सामान्य परिवारों में वित्तीय व्यवस्था से लेकर स्वास्थ्य एवं सुरक्षा की जिम्मेदारी मुखिया की ही होती है। कई बार तो घरेलू कार्यों में भी उसे हाथ बंटाना पड़ता है, वह भी तब जब परिवार में दूसरे सदस्य भी इन जिम्मेदारियों को साझा करने में सक्षम होते हैं। बस, एक धारणा बना ली जाती है कि यह मेरा नहीं, परिवार के किसी दूसरे

सदस्य का कर्तव्य है। मगर वे इस बात को भूल जाते हैं कि जब उन पर परिवार के मुखिया की जिम्मेदारी आएगी, तब वे अपने कर्तव्य का निर्वहन कैसे कर पाएंगे। इस प्रवृत्ति से न केवल एक व्यक्ति पर काम का बोझ बढ़ जाता है, बल्कि दूसरों के भीतर जिम्मेदारी को समझने का विवेक भी विकसित नहीं हो पाता है।

### बदलाव के मायने

वैसे तो हमारे समाज में परंपरागत रूप से जिम्मेदारियों में पुरुषों का काम धन अर्जित करना और महिलाओं की जिम्मेदारी घर को संभालने की होती है। मगर, समय के साथ स्थितियां बदली हैं और अब महिलाएं भी परिवार की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने में अहम भूमिका निभाने लगी हैं। पुरुष समाज में महिलाओं के घर से बाहर कामकाजी होने की संस्कृति को तो अपना लिया है, लेकिन उनके घर संभालने की पारंपरिक सोच से वह पूरी तरह बाहर नहीं निकल पाया है। इससे स्थिति और जटिल हो गई है। ऐसे में जरूरत इस बात की है कि परिवार में हर सदस्य जिम्मेदारियों को समझें और अपनी क्षमता के अनुरूप कार्य में सहयोग करें।

### जीवन शैली



### काम का बंटवारा

परिवार में किसी एक व्यक्ति पर जिम्मेदारियों का बोझ न पड़े, इसके लिए काम का बंटवारा जरूरी है। कई बार परिवार का मुखिया या दूसरा सक्षम सदस्य खुद यह धारणा बना लेता है कि उसे ही सब कुछ करना है, यह उसी की जिम्मेदारी है। यह सोच इसलिए भी मन में हावी हो जाती है कि कहीं परिवार में उसे जिम्मेदारी लेने में अयोग्य न समझ लिया जाए। मगर इस स्थिति में यह समझना जरूरी है कि काम में दूसरों की मदद लेना कमजोरी नहीं, बल्कि समझदारी है। जब परिवार में बड़े लोग कार्यों को साझा करते हैं, तो बच्चों को भी सहयोग और अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाने की प्रेरणा मिलती है।

## कुछ चटपटा और मीठा हो जाए

### चना चाट

ना चाट एक चटपटा और आसानी से बनने वाला नाश्ता है। इसमें नमकीन, खट्टा और मसालेदार स्वाद का मिश्रण होता है। जब मन करे, इसे घर पर बिना किसी झंझट के बनाया जा सकता है। चने से शरीर को भरपूर ऊर्जा मिलती है, इसलिए यह सेहत के लिए भी लाभदायक होता है।

### सामग्री

सफेद चना: दो कप, कश्मीरी लाल मिर्च: एक चम्मच, प्याज: एक, टमाटर: एक, हरी मिर्च: दो, जीरा पाउडर (धुना हुआ): एक चम्मच, नमक: स्वादानुसार, अमचूर पाउडर: आधा चम्मच, हरा धनिया: दो चम्मच।

### विधि

सफेद चना को चार-पांच घंटे के लिए पानी में भिगो लें। इसी बीच प्रेशर कुकर में छोटे अकार के दो आलू उबाल लें। कुकर के उंडा



होने पर इन्हें निकाल लें और पानी फेंक दें। कुकर को साफ कर उसमें फिर से थोड़ा सा पानी और आधा चम्मच नमक डालकर इसमें भिगोए हुए चने डाल दें। कुकर का ढक्कन लगाकर इसे धीमी आंच पर चार-छह सीटी आने तक पकाएं। फिर ढक्कन खोलकर देख लें, पके हुए चने आसानी से मसल जाने चाहिए। अब उबले आलू को बारीक टुकड़ों में काट लें। फिर मध्यम आकार का प्याज, एक टमाटर, दो हरी मिर्च और हरा धनिया बारीक काट लें। इसके बाद उबले हुए चने और कटे आलू को अच्छी तरह मिलाएं। फिर इसमें कटा प्याज, टमाटर, हरी मिर्च, लाल मिर्च पाउडर, धुना हुआ जीरा पाउडर और चाट मसाला डालें। साथ ही नमक और नींबू का रस भी मिलाएं। इसे अच्छी तरह से मिला लें। फिर स्वाद चख लें और अगर चाहें तो नमक, चाट मसाला तथा नींबू का रस और डाल सकते हैं। अब चना चाट मसाला बनकर तैयार है। परोसते समय इसके ऊपर बारीक कटा हुआ हरा धनिया डाल दें।

## य

ह मैदा और सूखे मेवे के मिश्रण से तैयार होने वाला व्यंजन है। यह रसीला और बहुत स्वादिष्ट होता है। इसे बनाने में थोड़ा वक्त लगता है, लेकिन इसका दिल को खुश कर देता है। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी को यह पसंद आता है।

### सामग्री

मैदा: 200 ग्राम, खोया: आधा कप, दूध: एक गिलास, पिस्ता: छह-सात, इलायची पाउडर: एक चम्मच, बादाम: सात-आठ, केसर: एक चुटकी, देसी घी: पांच-छह चम्मच, चीनी: आवश्यकता अनुसार।

### विधि

दो बर्तनों में मैदा छानकर एक में दूध डाल दें और दूसरे में पानी। दोनों का गाढ़ा पेस्ट बना लें। इसके बाद इन दोनों को इकट्ठा कर इसमें खोया डालें और मथनी या हाथ से अच्छी तरह



### मालपुआ

मिला लें। इसे बारीक एक घंटे के लिए ढक कर रख दें। इसी बीच, पिस्ता और बादाम को बारीक काट लें या फिर मिक्सी में दरदरा पीस लें। इसके बाद एक बर्तन में चीनी, केसर और पानी डालकर गाढ़ी चाशनी तैयार कर लें। अब मैदे के घोल में कटे मेवे और इलायची पाउडर डाल कर मिला लें। इसके बाद एक कड़ाही में देसी घी गर्म करें और फिर आंच धीमी कर दें। कप में मैदे का घोल लेकर उसे गोलाकार में कड़ाही में डाल दें। जब एक तरफ से यह पक कर सुनहरा हो जाए, तो बड़े चम्मच की मदद से इसे पलट दें। दूसरी तरफ से भी इसे

सुनहरा होने तक तलें। इसके बाद इसे चाशनी में डुबा दें। जब पुए में चाशनी भर जाए, तो उसे निकाल दें। ध्यान रहे कि पुआ को उतनी देर तक ही चाशनी में रखें, जितनी मिठास की जरूरत हो। इसी तरह दूसरे मालपुए भी तैयार कर लें। थोड़ा ठंडा होने पर इसे परोसा जा सकता है।